575 P
H65
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
आह्वानांक Call No. _____
अवाप्ति सं० Acc. No. 575

8911

8a1.03
Ai 93 Ai

ऐतिहासिक

पुष्पाञ्जलि।



क्या कर नहीं सकतीं भला, यदि शिक्षिता हों नारियाँ ?
रण, रङ्ग, राज्य, स्व-धर्म-रक्षा, कर चुकीं सुकुमारियाँ।

लक्ष्मण पथिक।

IMPERIAL
RECEIVED.
16 FEB. 1932
DEPARTMENT

॥ ओ३म् ॥

ऐतिहासिक

पुष्पाञ्जली

आर्य जाति में नया जीवन पैदा करने वाले धर्म्म और देश भक्ति के सुप्रसिद्ध भजनों का संग्रह।

जिसमें—

कुंवर सुखलाल. तेजसिंह, नत्थासिंह

तथा

अन्य भजनीको और कवियों के ३०० उत्तम उत्तम भजन दिये हैं।

प्रकाशकः—

"लक्ष्मण पथिक"

पथिक पुस्तकालय दिल्ली।

प्रथमवार २०००] दयानन्दब्द १०५ [मू० ॥।)

नवयुग प्रिण्टिङ्ग वर्क्स, देहली में मुद्रित

Navyug press, Delhi

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 575
Date 14.12.71
GOVT OF INDIA

विषय सूची ।

भजनों	नम्बर
हे सप्त भू नव खण्ड०	१
हम बालकों की ओर भी०	२
यह वर दो हमको भगवान्०	३
सत्ता तुम्हारी भगवन्०	४
हमने ली है. फकत०	५
अजब हैरान हूं भगवान्०	६
हमें धर्म वेद से ईश्वर सदा०	७
हे दयामय हम सबों को०	८
हम दीनों को धनवान कर०	९
हे जगत पिता ! हे जगत प्रभु०	१०
आज मिल सब गीत गाओ०	११
जप प्यारा सच्चा नाम०	१२
आओ मिल कर सारे करें०	१३
शरण प्रभु की आओ रे०	१४
धर्म पथ फैलादो घर घर०	१५
सिर जावे तो जावे साडा०	१६
फ़कत है वैद मत सच्चा०	१७
ईश्वर हमारा तम मन०	१८
खान ये दिल में छिपा था०	१९

मशहूर हो रहा है खलकत में०	२०
जगत के आधार विश्व करता०	२१
आनन्द रूप भगवान्०	२२
मादरे हिन्द अब तू ऐसे०	२३
बदल तेवर कहा रावण ने०	२४
यह सुन कर बात हिरणाकुश०	२५
पिता अधिकार है तुमको०	२६
है अर्द्ध रात्रि भाद्र माह०	२७
सोलह शृंगारों से सूपणखां०	२८
मेरे बेगुना राजन०	२९
पिता जी कीजिये अब०	३०
द्रोपदी को लाने सभा बीच०	३१
दुःशासन कहना मेरा मान०	३२
कसम खाता हूं ऐ मल्लाह०	३३
प्राचीन पुरुषों का गौरव०	३४
भारत माता करे विलाप०	३५
आओ परकारज के हेत०	३६
पहुंचा जब अकबर का०	३७
यों जबाब अकबर को०	३८
कहा गये ऐसे वीर उदार०	३९
एक दिन अकबर ने मारी०	४०
कन्या तुझे रोना नहीं०	४१
देहली से एक चली बिसातिन०	४२

चित्र यह न दिखा०	४३
देखकर तस्वीर चंचल०	४४
ग़ज़ब यह क्या कियारी०	४५
अपना पिटारा उठा बिसातिन०	४६
अब तो हुक्का हमारा०	४७
एक दिन औरंगजेब का०	४८
हमारे घर में नित प्रतिशेर०	४९
पन्ना ने धर धीर कलेजा०	५०
आखीरी देख रही तस्वीर०	५१
रही माता समझाय०	५२
आंखों में आंसू भरके०	५३
सुनकर पिता की बात०	५४
कैसे छोड़ूँ धर्म मोहे प्यारा०	५५
क़त्ल करवायदो जी०	५६
जिक्र इस्लाम का इस वक्त०	५७
सामना मोत का बे ख़ोफ़ो०	५८
लिफाफ़ा हाथ में लाकर०	५९
यह सुनकर बात माता की०	६०
सुनो यह आर्य सजनो०	६१
राम जल्दी से मेरी जान०	६२
मात मेरी मैं तेरे पास आऊं०	६३
नाथ मुझको भूल बैठे०	६४
लग रहा दरबार देहली में०	६५

घर के अन्दर का पता नहीं०	६६
वह कुटनी थी बड़ी फितनी०	६७
हमारे मन को भाती है०	६८
हे ईश्वर हे करतार मेरे०	६९
तेरे दरबार में०	७०
जसवन्तसिंह को रिहा करो०	७१
बंद फाटक किले का करा दीजिये०	७२
धीरज धर मत घबड़ा०	७३
ऋषि मुनि प्रनरीत है०	७४
खाते थे वृक्षों की छाल०	७५
सर्व क्रू सोने मिलकर०	७६
पल क्षण यह सोच विचार०	७७
यह तो शोक है जी०	७८
रोटी आई कहां से०	७९
तुम को तज के कहां ईश जाऊं०	८०
मत पिताजी तुम घबराओ०	८१
मुझे आती है लाज०	८२
अब करो मित्रता पूर्ण०	८३
पिता अकबर से मिलके०	८४
देह में जबलों प्राण०	८५
तुम्हें धन्यवाद है राणा०	८६
अब तो चेतो भारत वासी०	८७

जब दुर्गावती रणमें निकली०	८८
गर कोई गुल खिला०	८९
ऐ मेरी जान भारत०	९०
करो कुछ देश हित०	९१
सारे जहां से अच्छा०	९२
संसार को देंगे दिखा०	९३
देश हित पैदा हुए०	९४
जगदीश यह विनय है०	९५
पसे मुरदन भी होगा०	९६
घर बार छोड़ करके०	९७
अधीन होकर बुरा है जीना०	९८
कब तक पिवोगे प्याले०	९९
दे दे मुझे तू जालिम०	१००
उठो अब सत्य पर भाई०	१०१
मादरे हिन्द की तस्बीर०	१०२
सुना है तेज करते हैं०	१०३
प्रभु हो मेहर की नज़रों से०	१०४
ख़ौफ़ आफत से कहो०	१०५
देश की खातिर मेरी०	१०६
हूर को छोड़ दिया०	१०७
हिन्द में आह चलीं०	१०८
अपमान हिन्द वालों०	१०९

मियाने रज़मगाह यह०	११०
जै भारत जिसको०	१११
एकसां रहता है कभी०	११२
जिस ख़ाक से बने हैं०	११३
मुसीबत आ तेरा हम०	११४
पूछते क्या हो कि०	११५
आज काशी में मेरा०	११६
झूठ जो चीज है०	११७
क्या कहें आलम में०	११८
डराना है मौत से क्या है०	११९
तुम प्रबल भय दिखला०	१२०
भारत को रोते रोते०	१२१
लाखों हमारे भाई०	१२२
ऐ ग़ैर क़ोम वालो०	१२३
एक बाप के दो बेटे०	१२४
पीते जाना जी महाशय०	१२५
करलो कत्ल खुशी से०	१२६
आर्यों की नस्ल हो०	१२७
आग में पड़कर भी०	१२८
धर्म का आज उठा०	१२९
हिन्दुओ नींद ये०	१३०
गौओं का रोना हरी०	१३१

नुरखा शुद्धि का सबको०	१३२
मेरा शुद्धी से होगा०	१३३
सर जमीने हिन्द०	१३४
मरते मरते भी हमें०	१३५
वैदिक धर्म का स्वामी०	१३६
उठो हिन्दुओ सूतियां०	१३७
धर्म के नाम पर प्यारो०	१३८
मची धूम शुद्धि तो०	१३९
शुद्धि का जमाने में०	१४०
शुद्धि ने लोगो यह०	१४१
उठो धर्म वीरो०	१४२
किरकिरी हो जायगी०	१४३
खुदा के सामने०	१४४
दयानन्द के वीर सेनिक०	१४५
शहीदे कौम का खूं०	१४६
ऐ दुशमनो हिन्दु जाति के०	१४७
डंका वेदों का जमाने में०	१४८
खेलने को जाने पर०	१४९
स्वामी की तरह मिलनी हो०	१५०
हिन्दुओ अब धर्म रक्षा०	१५१
करो रे भाईयो वैदिक०	१५२
ऐ हिन्दू भाई जागो०	१५३
अब धर्म बन्धो०	१५४

शुद्ध करते हैं गर मेधों०	१५५
मरतबे वढ़ गये०	१५६
सरे बाजार करते हैं०	१५७
अब सुदर्शन चक्र०	१५८
जरा भी सोचा यह०	१५९
फना नहीं है मोहब्बत०	१६०
उठ जाग देख भारत०	१६१
देखो तो स्वामी कैसा०	१६२
जग बिच धुम्मा पाईयां०	१६३
है केवल आर्य समाज०	१६४
दर २ रुलदे रामा०	१६५
शुद्धि का डंका जब रहा०	१६६
पिता जान बूझ कर क्यों०	१६७
बेद कुरआन को आपस में	१६८
करो प्रचार हिन्दी का०	१६९
देता है प्रम की शिक्षा०	१७०
जिसको हम मोम समझते०	१७१
सुनते जाना मियां०	१७२
भगवान् भक्त के बसमें०	१७३
भारत वीरों की याद में०	१७४
भगवान् भक्त मुझको०	१७५
सुना है तेज करते हैं०	१७६

स्वदेशी प्रेम जनता में०	१७७
किससे सीखा है०	१७८
अब तो हम झोली०	१७९
हजारों आफ़तें पिन्हा०	१८०
किस पे हो जाती है०	१८१
तुम्हारा जितना जी चाहे०	१८२
यह आरजू है मेरी०	१८३
हमें उनकी तिरछी०	१८४
हथकड़ी जो हाथ में०	१८५
एक मुद्दत से यह०	१८६
मुल्क धोखे से छीना०	१८७
यह लायगी जर खींचकर०	१८८
नाम जिन्दों में०	१८९
अब अहले हिन्द कहदो०	१९०
इन यवनों को करतूत०	१९१
कहैं क्या स्वामी०	१९२
करो आपस में मेल०	१९३
पति होजा हिन्दू०	१९४
मेरा रंगदे वसंती चोला०	१९५
सर फरोसी की तमन्ना०	१९६
तू वह मय खूबी है०	१९७
मुर्ग दिल मत रो०	१९८
वतन की आबरू का०	१९९

हैफ़ हम जिस कि०	२००
उरयानी व हैरानी०	२०१
मुरदये कौम को०	२०२
इन परिडतों के मक्र का०	२०३
नौजवानो वक्त है०	२०४
ऐ गुरू गोविन्दसिंह०	२०५
संभालो हिन्दुओ अब	२०६
शहीदे कौम तुझको०	२०७
इस्लाम के मिट जाने की अब०	२०८
स्वामी उपदेश का०	२०९
लहराती है खेती दयानन्द की०	२१०
हिन्दुस्तान की कमाई०	२११
शिक्षा दे रही जी हम को०	२१२
वेदों का डंका आलम में०	२१३
पूछे जो कोई हम से०	२१४
कसली है कमर अब तो०	२१५
आंखों से फिर दिखा दो०	२१६
पसे मुरदन भी होगा०	२१७
सेवा में तेरी भारत०	२१८
ऐ मेरी जान भारत०	२१९
दयानन्द ने गर जगाई०	२२०
ख़्वाहिश मेरी है यारब०	२२३

मुझ बेगुनाह को राजन्०	२२२
मैंने ज़ालिम तेरा क्या०	२२३
ओ आफ़ताब तूने०	२२४
वक्त था जब ताबताकत०	२२५
हमारे देश में जी०	२२६
न जीती है न मरती है०	२२७
मुद्दत हुई अब तो०	२२८
गर बुलाते हो मुझे०	२२९
मेरी इमदाद को०	२३०
हमको दशा का अपनी०	२३१
मुझे आने में तो कुछ०	२३२
जो हकीकत की तरह०	२३३
जान देना धर्म पर०	२३४
दिल फिदा करते हैं जो०	२३५
शहीदों का खूं०	२३६
बला से चले सर पै०	२३७
बुजदिलो गैरत का कुछ०	२३८
ऋण गुरूजी का दयानन्द०	२३९
वेद वेदांग सारे०	२४०
अन्धेर आलम में है कि दुनियां०	२४१
अय गुरुजी ताबये फरमान०	२४२
घर घर चिरागे वहदत०	२४३

तुम्हें बदनाम ऐ भगवन्०	२४४
डराते हैं अब से नादान०	२४५
न जाओ जोधपुर भगवन्०	२४६
तहल का सा मचगया०	२४७
डराता है मुझे क्या ऐ कर्ण०	२४८
वेदां वालियां ऋषियां०	२४९
खिदमते मुल्क में यह जान०	२५०
पराई आग में जलना०	२५१
ऋषि संतान ईसाई०	२५२
उठो बहनो ! पढ़ विद्या०	२५३
पहनो पहनो री बहनो०	२५४
अरे रावण तू धम की०	२५५
सीता की ओर निहार लो०	२५६
संभल संभल पग धरियो०	२५७
अरे मति मंद अज्ञानी०	२५८
कांटे से भी खराब है०	२५९
प्रेम प्यारे परस्पर०	२६०
नौ जवानो धर्म का०	२६१
कर जावो काम दोस्तो०	२६२
अगर जिन्दा रहा कुछ दिन०	२६३
जिन्दगी कौम की सेवा में०	२६४
हमें विश्वास है भारत का०	२६५

वतन के वास्ते वह जान०	२६५
कैसी थी वह शुभ घड़ी०	२६६
दहर में कौम०	२६७
ऋषिवर का तुम्हें०	२६८
नौनिहालाने वतन०	२६९
सामना मौत का०	२७०
छीनलो बस अपनी०	२७१
छोड़ो न धर्म को०	२७२
आराम के थे क्या २ साथी०	२७३
तः दिल से मेरा नाम०	२७४
ओम् जय जगदीश हरे०	२७५

ओ३म

ऐतिहासिक पुष्पाञ्जलि

ईश्वर स्तुती ।

भजन नं० १

हे सत भू भव खण्ड रवि शशि आदि चरारचम् ।
विश्वानि देव सदेव देवम् एक मेव गुणागरम् ॥
सर्वस्व जगदाधार जाननहार व्यापक सर्वकम् ।
सवितार विधाता सर्व अन्त प्रकाशकस्य प्रकाशकम् ॥
प्रभु आप ममत्रय तात शाप विलाप जगकारण करण ।
दुरितानि खान परासुव अथवा विथा कीजे हरण ॥
यदि सत्य भद्रम् मुक्तिपथ अङ्कित सुमिति चित दीजिये ।
कल्याण पद अर्थात् तन्न कृपाल आसुव कीजिये ॥

———

२—ईश्वर प्रार्थना ।

हम बालकों की ओर भी भगवान् तेरा ध्यान हो ।
हो दूर सारी मूर्खता, कल्याण कारी ज्ञान हो ॥

हम वीर ब्रह्मचारी बनें, व्रतधारी सदाचारी बनें ।
हमको हमारे देश भारत, पर सदा अभिमान हो ॥

होकर बड़े कुछ कर दिखाने के लिये तैयार हों ।
दिल में हमारे देश सेवा, का भरा अरमान हो ॥

हो नौ जवानों की कभी, जब मांग प्यारे देश में ।
मातृ वेदी पर प्रथम, रक्खा हमारा प्रान हो ॥

संसार का शिर मौर होकर, देश हमको कह सके ।
हे वीर बालक धन्य तुम, मेरी असल सन्तान हो ॥

भजन नं० ३

यही वर दो हमको भगवान् ॥ टेक ॥

प्राचीन ऋषियों की सभ्यता का बढ़ जावे फिर मान ॥ यही

उन्नति पथ पे पग धरि हटि हैं कभी न ऋषि संतान ।

विजय कामना धर्म युद्ध में बनी रहे हर आन ॥ यही० ॥

अर्वा चीन सभ्यता से निज होने लगी है हान ।

पीछे हटैं सभ्यता सीखें प्राचीन गुण ज्ञान ॥ यही० ॥

सम्मुख हो इतिहास पुराना कुल गौरव की खान :

लब्ध हो केवल पर हित कारण दे दें अपने प्राण ॥ यही०
सच्चा प्रेम बसे हृदय में रहे तुम्हारा ध्यान ।
" चन्द्र " को यह बरदान मिले हो जावे कल्याण ॥ यही०

नं० ४ भजन ईश्वर सत्ता ।

१—सत्ता सिहारी भगवन् जगमें समा रही है ।
तेरी दया सुगन्धी हर गुल से आ रही है ॥ सत्ता०

२—रवि, चन्द्र और तारे तूने बनाये सारे ।
उन सबमें ज्योति तेरी इक जगमगा रही है ॥ सत्ता०

३—विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने ।
तह जिन को मोतियों से अब चमचमा रही है ॥ सत्ता०

४—दिन, रात, प्रातः संध्या, मध्याह्न भी बनाया ।
हर ऋतु पलट २ कर कर्त्तव्य दिखा रही है ॥ सत्ता०

५—सुन्दर सुगन्धी वाले पुष्पों में रंग है तेरा ।
वह ध्यान फूल पत्ती तेरा दिला रही है ॥ सत्ता०

६—हे ब्रह्म विश्व कर्त्ता वर्णन हो तेरा कैसे ।
वह जल थल में तेरी महिमा हे ईश छा रही है ॥ सत्ता०

७—भक्ति तिहारी भगवन् क्यों कर हमें मिलेगी ।
माया तिहारी स्वामी हमको भुला रही है ॥ सत्ता०

८—हम सब तेरी शरण हैं तुझ से यही विनय है ।
हो दूर यह अविद्या हमको भुला रही है ॥ सत्ता०

६—दीन भारत है दुखियो बहुत हो रहो,
लुट चुका यहां बाक़ी रखा है क्या ।
हे पिता ! लो बचा, हे पिता !! लो बचा,
और दर पै तो जाना गवारा नहीं ॥ हम ॥

७—इतनी विनती पिता स्वीकार करो,
हम अनाथों का नाथ उद्धार करो ।
आर्य्य जाति का फिर से सुधार करो,
हाथ आगे किसी के पसारा नहीं ॥ हम ॥

नं० ६ भजन ईश्वर भेट ।

अजब हैरान हैं भगवन् तुम्हें क्योंकर रिझायें हम ।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लायें हम ॥ अजब ॥
करें किस तरह आबाहन कि तुम मौजूद हो हरजां ।
निरादर है बुलाने को, अगर घण्टी बजायें हम ॥ अजब ॥
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवान पर भगवान को क्योंकर चढ़ायें हम ॥ अजब ॥
लगाना भोग कुछ तुमको यह इक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जग को-उसे क्योंकर खिलायें हम ॥ अजब ॥
तुम्हारी ज्योति से चमके हैं सूर्य्य, चन्द्र और तारे ।
महा अन्धेर है तुमको यदि दीपक दिखायें हम ॥ अजब ॥
भुजाएं हैं न सीना है, न गर्दन है, न पेशानी ।
कि है निर्लेप "नारायण" कहां चन्दन लगायें हम । अजब ॥

नं० ५ भजन ईश्वर पूजा।

१—हमने ली है फ़कत इक तुम्हारी शरण,
हे पिता और कोई सहारा नहीं ।
पतित पावन आसरा दो हमें,
आसरा और कोई हमारा नहीं ॥ हम ॥

२—न तो बुद्धि न भक्ति न विद्या का बल,
आत्मा पै चढ़ा पाप-कर्मों का मल।
बिन तुम्हारी दया के न सकते संभल,
तुमने किस २ को स्वामी उभारा नहीं ॥ हम ॥

३—माया मोहके बश हुए ऐसे संसार में,
फँस गये लोभ क्रोध और अहँकार में।
डोले नैया हमारी यह मजधार में,
नज़र आता कोई भी किनारा नहीं ॥ हम ॥

४—है अविद्या यहां कैसी छाई हुई,
सब धर्म और कर्म की सफाई हुई,
आस तुम से है ईश्वर लगाई हुई,
इस द्वारे सा कोई द्वारा नहीं ॥ हम ॥

५—वेद पाठी न यहां प्रिय ज्ञानी रहे,
वीर, योधा न क्षत्री लासानी रहे,
ना ही दाता रहे ना ही दानी रहे,
अपना २ ही चलता गुजारा नहीं ॥ हम ॥

नं० ७ भजन ईश्वर प्रार्थना।

१—हमें धर्मवेद से ईश्वर सदा इस तरह का प्यार दे।
कि न मौड़ें मुंह कभी उससे हम,
चाहे कोई सर भी उतार दे॥ हमें०

२—वह कलेजा राम को जो दिया,
वह जिगर जो बुद्ध को अता किया।
वह फ़राख़ दिल दयानन्द का,
घड़ी भर हमें भी उधार दे॥ हमें०॥

३—न हो दुशमनों से हमें गिला,
करें हम बदी की जगह भला।
तो भी लब से निकले सदा दुआ,
कोई चाहे कष्ट हज़ार दे॥ हमें०

४—नहीं हम को ख़्वाहिशे मर्तबा.
नहीं मालो ज़र की हविश हमें।
बाक़ी उम्र ख़िदमते ख़ल्क़ में,
हे ईश्वरा तू गुजार दे॥ हमें०

५—हमें प्राणी मात्र के वास्ते,
करो सोज़े दिल वह अता पिता।
जलें इन के ग़म में हम इस क़दर,
कि न ख़ाक तक भी गुबार दे॥ हमें

६—सदा ऐसी जिन्दगी हो बसर,
कि हों सुर्ख़रु तेरे सामने ।
न कहीं हमारा यह आत्मा.
हमें शर्म लैलो निहार दे ॥ हमें ।

७—न किसी का मर्तबा देख कर,
जले दिल में नारे हसद कभी ।
जहां पर रहें-रहें मस्त हम,
हमें ऐसा सब्रो क़रार दे ॥ हमें ॥

८—लगे ज़ख़्म दिल पे अगर किसी के,
तो उठे दिल में तड़प जभी ।
हमें ऐसा दे दिले दर्द रस,
हमें ऐसा सीना फ़िगार दे ॥ हमें ॥

९—यही हम सबों की है कामना,
यही एक बस है जो आरजू ।
कि यह चन्द रोज़ा हयात को,
तेरी याद में ही गुज़ार दें ॥ हमें ॥

नं० ८ भजन ईश्वर याचना ।

हे दयामय ! हम सबों को शुद्धताई दीजिये ।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये ॥ हे०
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पे हो परमात्मा ।

हो जांय जल्दी नग्र-वासि / सभासद इस सभा के सबके सब धर्मात्मा ॥हे०

हो उजाला सबके मन में ज्ञान के प्रकाश से।
और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से ॥ हे०

खोटे कर्मों से बचें सब. तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे, सुख सदा पावें सभी ॥ हे०

यज्ञ, हवनसे हो सुगन्धित, अपना भारतवर्ष देश।
वायु, जल सुखदाई होवें, जावें मिट सारे क्लेश ॥ हे०

वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में प्रीती और बनें परमार्थी ॥ हे०

लोभी और कामी, क्रोधी, कोई भी हम में न हो।
सब व्यसनों से बचें और छोड़ देवं मोह को ॥ हे०

अच्छी संगत में रहें. और वेद-मारग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक, और कुकर्मों से बचें ॥ हे०

कीजिये हम सब का, हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ सबका, भक्ती दान से ॥ हे०॥

नं० ९ भजन ईश्वर भक्ति।

टेक--हम दीनों को धनवान कर प्रभु अपने भक्ति धन से ॥

१-रहे आपका आश्रय मनमें, आपकी महिमा रहे कथनमें। हरे
आलस कभी रहे न तन में, बल देकर बलवान कर।
करें भक्ति तन और मन से ॥ प्रभु अपने०

२–काम क्रोधका निष्फल बल हो, हृदय शुद्ध बुद्धि निर्मलहो। हरे
ध्यान आपका मन निश्चल हो, गुण देकर गुणवान कर।
बचें अविद्या पापन से ॥ प्रभु अपने०

३– आपकी भक्तिका सेवन हो, तुमपर न्योछावर तन मन हो। हरे
मनमें केवल यही लगन हो, सुख देकर सुखवान कर।
रहें सदा दूर दुष्टन से ॥ प्रभु अपने०

४–कष्ट भूमि से हमें उठाओ, दयाकी गोदमें हमें बिठाओ। हरे
अन्धकार अविद्या मिटाओ, यों यशवंत बयान कर।
ले मुआफ़ी मांग गुणियन से ॥ प्रभु अपने०

नं० १० भजन ईश्वर प्रेम।

१–हे जगत पिता! हे जगत प्रभु! हमें अपना प्रेम और प्यार दे।
तेरी भक्ति में लगे मन सदा, विषय कामनाको विसार दे० ॥ हे०

२–हमें ज्ञान और विवेक दे, हमें वेद बाणी में दे श्रद्धा।
हमें मेधा दे हमें विद्या दे, हमें प्रज्ञा और विचार दे ॥ हे०

३–हमें यश दे, हमें तेज दे, हमें बल दे और आरोग्यता।
हमें आयु दे. हमें पुष्टि दे, हमें शोभा लोकमंभार दे ॥ हे०

४–हमें धर्म कर्म से प्रेम दे, तजें सत्य को न कभी भी हम।
कोई चाहे सुख दे हमें घना, कोई चाहे कष्ट हज़ार दे ॥ हे०

५–कभी दीन हों न जगत् में हम, हमें दीजे सच्ची स्वतन्त्रता
म्हारे फंद पाप के काट दे, हमें दुखः से पार उतार दे ॥ हे०

६–रहें हम अभय न हो हमको भय, किसी मित्र और अमित्रका।

तेरी इच्छा पे हमें निश्चय हो, इस भीरूपनको तू टार दे ॥ हे०

७–हमें दुश्चरित्र से परे हटा, सुचरित्र का भागी बना हमें ।
इस मनको बाणीको शुद्धकर, सकल कर्म हमारे सुधारदे ॥ हे०

८–अब हृदय शोक रहित हो, मिले शान्ति तब हमें हर जगह ।
हमें शत्रुगण सुमति कहें, कुमति को इनकी निवार दे ॥ हे०

९–तेरी आज्ञा में रहें हम सदा. तेरी इच्छा में रहें सर झुका ।
कभी डूबे कोई अधीरता से, तो उसको तूही उभार दे ॥ हे०

नं ११ भजन ईश्वर धन्यवाद ।

१–आज मिल सब गीत गावो, उस प्रभू के धन्यवाद ।
जिसका यश नित गाते हैं, गंधर्व मुणी जन धन्यवाद ॥ आ०

२–मन्दिरों में कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ २ बार, मुनिवर धन्यवाद ॥ आज०

३–कूओं में तालाब में, सिन्धू की गहरी धारा में ।
प्रेम रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद ॥ आज०

४–शादियों में जलसयों में, यज्ञ और उत्सव के आदि ।
मीठे स्वरसे चाहिये, करें नारि नर सब धन्यवाद ॥ आज०

५–गान कर अमीचन्द भजनानन्द ईश्वर स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर २ धन्यवाद ॥ आज०

नं० १२ भजन पंजाबी-ओंकारोपासना

जप प्यारया सच्चा नाम ओंकार दा ॥

१–जिसने सारा जगत् बनाया, हर वस्तू दे बिच आप समाया ।

मालक कुल संसार दा जो, सच्चा नाम ओं० जप० ॥

२-सूर्य्य बिच जिस ने तेज बनाया, बिजली नूं जिसने चमकाया ।
जग सारा जिसनूं पुकार दा जी, सच्चा नाम ओं० जप० ॥

३-तारा चांद आकाश सजाया, भूमण्डल कई लाख घुमाया ।
अन्त ना अपरम्पार दा जी, सच्चा नाम ओं० जप० ॥

४-समुद्र और पहाड़ बनाए, नदियां नाले बीच चलाए ।
महरम हो उस दी सार दा जी, सच्चा नाम ओं० जप० ॥

५-अग्नि वायु अङ्गरह द्वारा, चहों वेदां दा कीता चमकारा ।
जो पढ़े वह सुख धार दा जी, सच्चा नाम ओं० जप० ॥

६-सुकर मनुष्य देह प्रभु तो पाई, विषय विकारा बीच गंवाई ।
दर्शन करी पावन हार दा जी, सच्चा नाम ओं० जप० ॥

७-भव सागर दुनिया ऐ भाई, तरने नू तेरे बेड़ी देह बनाई ।
तरा के फड़ कंडा पार दा जी, सच्चा नाम ओं० जप० ॥

८-धर्मवीर जिन नाम धराया, मुक्ति नूं उसने ही पाया ।
एस तरो सारिया नूं तार दा जी. सच्चा नाम ओं० जप० ॥

नं० १३ भजन धर्म-पुकार ।

आओ मिलकर भाइयो ! सारे करें प्रचार वेद का ॥ आओ० ॥

१-विद्या के हैं यह सागर, कह गये ऋषि समझा कर ।
हो नूर ज़हूर आदर, जो हो प्रचार वेद का ।

है मनुष्य मात्र को ख़ातिर यह फण्डार वेद का ।
भला भण्डार वेद का, भला भण्डार वेद का ॥ आओ० ॥

२–सन्ध्या व हवन घर घर हो. फिर क्या आनन्द असर हो ।
जिससे हर एक बशर हो वाकिफ़कार वेद का ।
हर मन्दिर पर हर मन्त्र हो उच्चार वेद का ।
भलो उच्चार वेद का, भला उच्चार वेद का ॥ आओ० ॥

३–क्या भजन में लागी लौ हो, और हवन की भी खुशबू हो ।
प्रचार कूबकू हो गली बाज़ार वेद का ।
हम हैंगे उसी के मालिक जो है गुल्ज़ार वेद का ।
भला गुल्ज़ार वेद का भला गुल्ज़ार वेद का ॥ आओ० ॥

४–आओ मिलकर प्रेम प्रीति से, ख़ालिस वैदिक रीति से ।
तन, मन नेक नीति से, करें सत्कार वेद का ।
रौशन हो फिर से सबों पर यह इसरार वेद का ।
भला इसरार वेद का, भला इसरार वेद का ॥ आओ०

नं० १४ भजन धर्मोपदेश

शरण प्रभू की आवो रे, यही समय है प्यारो ।
१–उदय हुआ ओंम् नाम का भानू, आओ दर्शन पावो रे ॥ यही०
२–पान करो इस अमृत रस को, उत्तम पदवी पावो रे ॥ यही०
३–प्रभूकी भक्ति बिना नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमावोरे ॥ यही०
४–मनुष्य जन्म अमोलक पाके, व्रथा न इसको गंवावो रे ॥ यही०

५–मकर, फ़रेब और झूंठ त्यागो, सत्यमें चित्त लगावोरे। यही०
६–करलो नाम प्रभूका सु मरन, अन्तको न पछतावो रे॥ यही०
७–अन्य दया जो सबको पाले. मत उसको बिसरावो रे॥ यही०
८–छोटे, बड़े सब मिलकर खुशी से, यश ईश्वरके गावोरे यही०

नं० १५ भजन धर्म बलिदान।

धर्म्म पथ फैला दो घर घर द्वार॥ धर्म०॥
नगर २ और ग्राम २ में वेदों का करो प्रचार॥ धर्म०॥

१–द्वेष निकालो प्रीति बढ़ालो मन अपने को मार।
ईंट, डले, पत्थर बरसावें कुछ भी करो न बिचार॥ धर्म०
२–धर्म के कारण राजा हरिश्चन्द्र राज्य पाट दिया वार।
रानी बिकी रोहताश वह बालक राजा भङ्गी के द्वार॥ धर्म०॥
३–धर्म के कारण गुरु गोबिंद के दोनों वे राजकुमार।
दीवारोंमें चुने गये एक धर्म ही जग में सार॥ धर्म०॥
४–ग्यारह बरस का बाल हक़ीक़त धर्म पे हुआ कुर्बान।
जान दई पर धर्म न छोड़ा तन मन किया बलिदान। धर्म०
५–धर्म की खातिर स्वामी दयानन्द प्राण गये हैं वार।
लेखराम ने पेट फड़वाया देश का किया सुधार॥ धर्म०॥
६–ऐसे ही तुम बनो हितैषी छोड़ो झूठ व्यवहार।
सच्चे आर्य्य वीर कहलावो सत्थू कहे हर बार॥ धर्म०॥

नं० १६ भजन पंजाबी-धर्म बलिदान

सिर जावे तो जावे, साडा वैदिक धर्म ना जावे ॥

धर्म दी खातिर रामचन्द्र जी, राक्षसों मूं मार मुकावे ॥ साडा०
वैदिक धर्मतो राजा हरिश्चन्द्र चांडालके घर बिकजावे ॥ साडा०
वैदिक धर्मतो ध्रुव प्रह्लाद जी, मोक्ष धर्म बिचजावे ॥ साडा०
एक धर्म तो गुरु गोबिंद सिंह, पुत्र दीवार चुनावे ॥ साडा०
धर्म दी खातर बाल हक़ीक़त, सिर अपना कटवावे ॥ साडा०
सेवा जी इस धर्म दी खातर. बिच जगदे उमर बिताके ॥ साडा०
धर्म दी खातर ऋषि दयामन्द, पल २ ज़हरां खावे ॥ साडा०
लेखराम वीर धर्म दी खातर, छुरा पेट बिच खावे ॥ साडा०
गुरुदत्त जी धर्म दी खातर, जिंदड़ी घोल मंवावे ॥ साडा०
धर्म पे रामचन्द्र जम्मूं बिच, नंगे हाथों मारा जावे ॥ साढा०

नं० १७ भजन धर्म-गौरव ।

१-फ़क़त है वेद मत सच्चा, यही हमने विचारा है ।
इसी को आदि सृष्टि से, ऋषि मुनियों ने धारा है ॥ फ़क़त०

२-यही हमदम है बस हम का, यही महबूब है अपना ।
किसीका सेव्य है कोई, हम उसके वेद हमारा है ॥ फ़कत०

३-किसी को नाज़ दौलत पर, किसी को फ़ख्र शादी का ।
हमारा तो यही दोनों जहां में. इक सहारा है ॥ फ़कत०

४–जहां जितने इनसानों, के मजहब आज जोरी हैं।
मुक़ाबिल ताब क्या लायें, वह ज़र्रे यह सितारे हैं॥ फ़क़त०
५–यह खुर्शीदे सदाक़त है, वह दीपक सब हैं मिट्टी के।
मुनव्वर आज भी इस से ही होता जग्त सारा है॥ फ़क़त०
६–हम इसका साथ जीते जी, न छोड़ेंगे न छोड़ेंगे।
यही हमदम हमारा है, हमें यह जां से प्यारा है॥ फ़क़त०
७–जो इसकी रक्षा करता है, उसी का यह भी रक्षक है॥
वह मरजाता है जिसने, धर्म अपना एक मारा है॥ फ़क़त०
८–इसी के नाम पर हमने, हज़ारों सिर कटा डाले॥
बही नदियां लहू की, नामपर उसके ही धारा है॥ फ़क़त०
९–बड़ी कुर्बानियां दे दे के, हमने उसकी रक्षा की॥
मुसाफ़िर ने इसी के नाम पर, सर्वस्व वारा है॥ फ़क़त०

नं० १८ भजन धर्म्मोद्देश्य

१–ईश्वर हमारा तन, मन संसार के लिये हो।
यह ज़िंदगी हो लेकिन, उपकार के लिये हो॥ ईश्वर०॥
२–शानों पै सर अगर हो, तलवार के लिये हो।
खन्जर वले न हाथों, में वार के लिये हो॥ ईश्वर०॥
३–ख़िदमत करें हम सब की, ख़िदमत गुज़ार बन कर।
दुश्मन के भी न खटकें, आंखों में ख़ार बन कर॥ ईश्वर०
४–जल्वे सदाक़तों के, आलम को हम दिखादें।

बातिल परस्तियों को, राहे अदम बतादें ॥ ईश्वर० ॥

५–इस्लामो ईस्वियत को, हम राहे हक़ पे लादें।

और हर बशर को दिल से, हम आर्य्य बनादें ॥ ईश्वर० ॥

६–तब हुमाते बातिला को, हम दहर से मिटा दें।

और कज़्ब को जहां से, बस एक क़लम मिटादें ॥ ईश्वर०

७–इस शर्त पर रहे अब, अपनी ज़बां दहन में।

पहुंचे सदा हमारी, फ़ारिस, अरब, यमन में ॥ ईश्वर० ॥

८–चर्चा यह वेद घर घर, फिर से हो इस वतन में।

लहराय झण्डा वेदों का, चीन और खुतन में ॥ ईश्वर० ॥

९–मक्के के मन्दिरों में, हो वेद पाठ जारी।

युरोशिलम में जाकर, गूंजे सदा हमारी। ईश्वर० ॥

१०–फिर तुम से पूछते हैं अय शेख़ क्या मज़ा हो।

जब हर बशर के दिल में ही ज्ञान ये खुदा हो ॥ ईश्वर० ॥

११–रुये ज़मीं से आती इक ओ३म् को सदा हो।

हर सर अदब से वेदों के रोबरू झुका हो ॥ ईश्वर० ॥

१२–दैरो हरम के झगड़ों से सब निजात पायें।

मुल्ला पुजारियों के फन्दों से छुट जायें ॥ ईश्वर० ॥

१३–और दें दुआयें मिलकर उस नाखुदा को सारे।

हम डूबतों को लाया जो खींच कर किनारे ॥ ईश्वर० ॥

१४–तूफ़ाने बहर हस्ती से, जिसने पार उतारे।

गूंज उठे उसकी ख़ातिर, हों महरबां के नारे ॥ ईश्वर० ॥

१५—क़दमों में उस ऋषि के दे सर झुका मुसाफ़िर।
और आर्य बनें सब, दिल से दुआ मना कर॥ ईश्वर० ॥

भजन नं० १६

खानये दिल में छुपा था मुझे मालूम न था।
पर्दा गफलत का पड़ा था मुझे मालूम न था॥
दैरो काबे में फिरा पूछता मैं तेरा निशान।
दिल ही में क़िबला नुमा था मुझे मालूम न था॥
ला मकां अर्शे मुअल्ला पै कहीं तख्त नशीं।
लेक वह फ़र्जी खुदा था मुझे मालूम न था॥
ला मकां तुझ को कहां ढूंढें वले तेरा मकां।
हैफ यह मकरो दग़ा था मुझे मालूम न था॥
हुआ मेराज के धोके से मैं गरदूं गरदां।
कब भला मुझ से जुदा था मुझे मालूम न था॥
जान जानां के लिये जाने को तैय्यार ही था।
जान से जानां मिला था मुझे मालूम न था॥
मिस्ले आहू के मैं सर गर्दां फिरा सहरा में।
नाफे में नाफ छुपा था मुझे मालूम न था॥
मिस्ले बुलबुल के हर गुल को बनाया महबूब।
गुंचये दिल में छुपा था मुझे मालूम न था॥
तपशे दिल से माहो हूर में रही कुछ न तमीज़।

अबरे गफलत से छुपा था मुझे मालूम न था ॥
हैफ नादानी से ज़म २ को कहा आबेहयात ।
दिल ही में आबे बका था मुझे मालूम न था ॥
रोजे रौशन की तरह दीद हुआ जलवा गर ।
रात से दिन छुपा था मुझे मालूम न था ॥
"भोजदत्त" जाग बहुत सोया नसीबा जागा ।
यार पहलू में लिटा था मुझे मालूम न था ॥

कव्वाली नं० २०

मशहूर हो रहा है खलक़त में नाम तेरा ।
तू है सभी का अफसर साहब गरीब परवर ।
मामूर हो रहा है कुदरत कलाम तेरा ॥ १ ॥
जल थल के जीव सारे सूरज व चान्द तारे ।
मशकूर हो रहा है आलम तमाम तेरा ॥ २ ॥
आलम में तू ही तू है गुल में व मिस्ले बू है ।
भरपूर हो रहा है सब में मुकाम तेरा ॥ ३ ॥
सुन ले पुकार मेरी करता है अब क्या देरी ।
मजबूर हो रहा है ग़म से गुलाम तेरा ॥ ४ ॥
सत् चित् तू आनन्दा है बलदेव" तेरा बन्दा ।
मखमूर हो रहा है पी करके जाम तेरा ॥ ५ ॥

—oo—

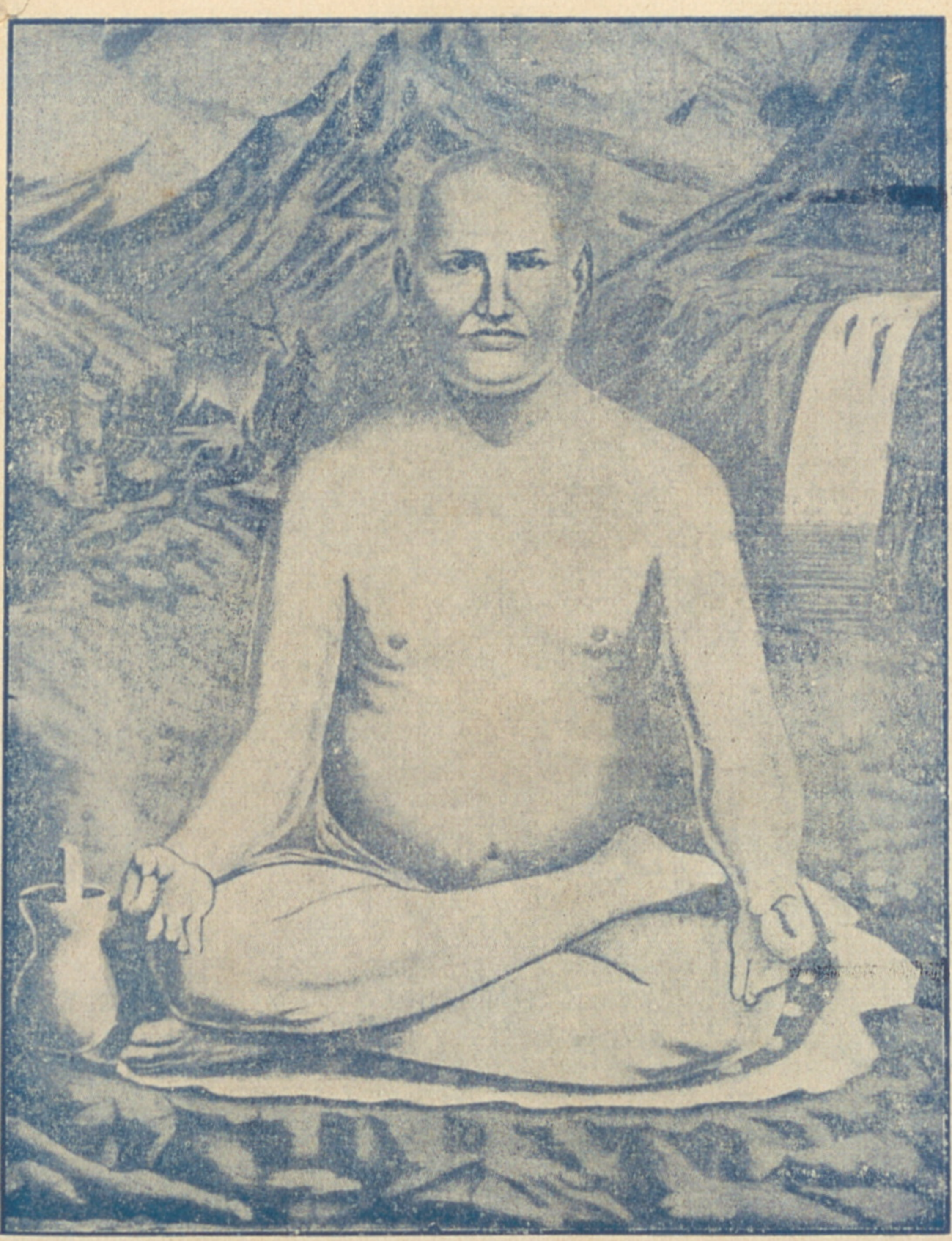

'वेदों का प्यारा' महर्षि दयानन्द सरस्वती

(१) व्रती, ब्रह्मचारी, समुद्धार-कारी,
सदा शङ्करी, वेद-विद्या प्रचारी।
(२) महा वज्रकी वृत्ति घाती कुठारी,
नमस्ते दयानन्द! आनन्द कारी॥

भजन नं० २१

टेक-जगतकी जननी जगतकी माता, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
जगत के आधार विश्वकर्त्ता, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
तमाम दुःखों के दूर करता, तमाम तापों के ताप हरता ॥
तमाम खुशियोंके तुम हो दाता. नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
जगतके कर्तार तुम हो स्वामी, सुखों के भण्डार तुम हो स्वामी
हर इकके रक्षक तुम्हीं हितैषी. नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा।
तुम्हीं ने कृपा से हमको अपनी, अता करी है मनुष्य योनी ॥
तुम्हीं ने दानिश है अक्ल बखशी, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा
हमारी खातिर ज़मीं बनाई, हमारी खातिर बनाई अग्नी ॥
हमारी खातिर बनाय सूर्य, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हमारे कारण बनाई वायु, हमारे कारण बनाई खुशबू।
हमारे कारण बनाया जलको, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हमारे कारण बनाई माता, पिता दिया है परवर्श का कर्त्ता।
बराए मुक्ति है बेद उतारा, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हमारे चलने को पाओं बखशे, दिये पकड़ने को हाथ तुमने।
बनाई आंखें की देखें हर शै, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
ज़बान चखने को तुमने दी है, दिये हैं सुनने को कान प्रभु जी।
तुम्हीं ने बखशा है नुक शक्कर, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हजारों खाने लजीज शीरीं, हजारों चीजें तलख व नमकीं।
हमारे कारण बनाईं तुमने, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥

'कमर' जो तुमसे पतिको छोड़े, जो तुमसे रक्षकसे नाता तोड़े
कहीं ठिकाना लगे न उसका, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥

भजन नं० २२

ईश्वर स्तुति

आनन्द रूप भगवन किस भांति तुम को पाऊं।
तेरे समीप स्वामि मैं किस तरफ से आऊं॥
सुख मूल भक्ति रूपम् मंगल कुशल स्वरूपम्।
घड़ियाल शंख को क्या सनमुख तेरे बजाऊं॥
अनुपम परम छबीले बिन रङ्ग रस रसीले।
कँटक सन्त्रा है फुलवा क्या तेरे सिर चढ़ाऊं॥
कोटानुकोट भूमि उस पर असंख्य प्राणी।
जगदीश अपना नम्बर मैं कौनसा गिनाऊं॥
श्री लक्ष्मी है तेरी निश दिन चरण की चेरी।
ताम्बे का एक पैसा मैं नाथ क्या चढ़ाऊं॥
गङ्गा है तेरी दासी सेवक है इन्द्र तेरा।
तेरे शरीर पर क्या दो चिल्लू जल चढ़ाऊं॥
छोटे से दास तेरे रवि, चन्द्र हैं उपस्थित।
करते हैं नित्य उजाला घृत दीप क्या जलाऊं॥
बिनती किशोर की है निश दिन यही दयामय।
हृदय में लो हो तेरी आंखों में मैं समाऊं॥

भारत माता से प्राथना।

ग़ज़ल नं० २३

मादरे हिन्द अब तू ऐसे बशर पैदा कर।
आबरू रखलें तेरी सच्चे पिसर पैदा कर॥

जिनकी हस्तीसे तुझे कहदें सपूती माता।
पुत्र अब तेरे नहीं ऐसे मगर पैदा कर॥

कूट के भरदें हर एक क़ल्ब में ज़िन्दा दिली।
वास्ते बुज़ दिली के सबय सफ़र पैदा कर॥

कोख हो तेरी सफल नाम हो तेरा रोशन।
दूध में अपने अब तो ऐसा असर पैदा कर॥

लाखों धर्मात्मा जिस ख़ाक से तूने किये।
अब भी उस ख़ाक से धर्मात्मा नर पैदा कर॥

आन पर मर मिटे हर एक पिसर हो तेरा।
दर्द हो जिसमें वह प्रतापी जिगर पैदा कर॥

व्यास पतंजल गौतम शंकर पाणिनी आदि।
एक दो की क्या गिनती शामो सहर पैदाकर॥

धर्म के वास्ते जो हड्डी तलक भी दे दें।
दिल हक़ीक़तका दधीची की कमर पैदा कर॥

राम लक्ष्मण की जोड़ी निकले हरेक कूचे से।
जिनको हो अपने फ़रायज़ की ख़बर पैदाकर॥

ऐसी गुमराह दुनियां काम खिज़र का नहीं ।
सूरते स्वामी दयानन्द मगर पैदा कर ॥
शर्क से गर्व तक हर गोशे में सिक्का बैठे ।
मुल्क भारत में ऐसे इल्मो हुनर पैदा कर ॥
अपनी आंखों से जो सब देखलें हक़का जलवा ।
चश्मे ना बीना में वह नूरे बसर पैदा कर ॥
धर्म पर जान शहीदों की तरह जो देदें ।
उनकी कुर्बानी में हो कुछ न कसर पैदा कर ।
शिर पै रखनेको जो तैयार हो सारी दुनियां ।
चमने हिन्द में वह रश्के क़मर पैदा कर ।
मालो ज़र जिस्म परोपकार में कुर्बां हो जा ।
"चन्द्र" हो शमअ आसा क़त्ल वह सर पैदाकर ॥

—○:०:○—

ईश्वर भक्त प्रह्लाद और हिरणाकुश ।

ग़ज़ल नं० २४ ।

बदल लेवर कहा राक्षस ने हैबत नाक लहजे में ।
भक्त प्रहलाद हिरणाकुश के जब दर्बार में आये ॥
मेरा दावा खुदाई का हो मुनकिर मुझ से ही पैदा ।
गज़ब है खूने बुलबुल दुशमने जां खार में आये ॥
गले पर तेग़ तो चलने दे ओ इसगर के पुतले ।

तग़य्युर देखना फिर क्या तेरे अतवार में आये ॥
तेरा जब होगा सर तन से जुदा मालूम तब होगा ।
मज़े क्या २ तुझे कम्बख्त इस इन्कार में आये ॥
उड़ादूं अपने ही फ़रजिन्द का सर अपने हाथों से ।
मेरा जोशे जनूं-हां अब मेरी तलवार में आये ॥

भजन नं० २५ ।

यह सुनकर बात हिरणाकुश की यों प्रहलाद हैं बोले ।
पिता जी मौत ऐसी सबको इस संसार में आये ॥
जहां में इससे बहतर इसका इस्तेमाल क्या होगा ।
अगर यह जिस्म फ़ानी काम पर उपकार में आये ॥
ज़मी ओ आस्मां गरदिश छोड़दें अपनी यह मुमकिन है ।
नहीं मुमकिन मगर लगज़िश मेरी रफ्तार में आये ॥
मेरा सर ईश के क़दमों से हरगिज़ हट नहीं सकता ।
करो जुल्मो सितम जो कुछ दिले जब्बार में आये ॥
मेरा महबूब आ सकता नहीं लफ़्जों की बन्दिश में ।
न वह इंकार में आये न वह इक़रार में आये ॥
वह है मौजूद कुल दुनियां में पर इक कोर बातिन को ।
नज़र मैदान में आये न वह कोहसार में आये ॥
चले चश्मे तमन्ना से अगर देखे कोई उसको ।
तो फिर जलवह नज़र हर इक दरो दीवार में आये ॥

बजुज़ गुल कुछ नज़र आही नहीं सकता हैइन्सांको।
बरंगे बुलबुले शैदा अगर गुलज़ार में आये ॥
ग़रज़ मैं उस मसीहा के फ़क़त क़दमों का शैदा हूं।
शिफ़ा बनकर जो दुनियां की दिले बीमार में आये ॥
मुझे फांसी पै लटकादो चाहे सूली पै खींचवादो।
करो जो कुछ तुम्हारी तबियते खुंख़ार में आये ॥
मैं वह शैदाये हक हूं सर ज़मीं पर गौर से सुनलो।
जिसे हक़ का नज़ारा ही नज़र तलवार में आये ॥
झुकादी बस मुसाफ़िर कह के यह प्रहलाद ने गर्दन।
सरे तसलीम ख़म है जो मिज़ाजे यार में आये ॥

भजन नं० २६।

पिता अधिकार है तुमको मुझे गिर से गिराने का।
जलाशय में डुबाने और पावक में जलाने का ॥
तुम्हें अधिकार है राजन् करादो देश निर्वासन।
तथा बन्दी बना डालो मुझे इस जेल खाने का ॥
मुझे भी सोलहो आना दिया है सत्व ईश्वर ने।
प्रतिज्ञा पालने में शान्ति—सब दुख उठाने का ॥
तुम्हें अधिकार है सूलीका दुख मुझको दिला दिजे।
मुझे अधिकार है तिसपर न पग पीछे हटाने का ॥
न तुम भय भीत कर सकते दिखा तलवार यह मुझको।

है आत्मिक बलभरा मुझमें सफलता सुख पानेका ॥
किया है सत्य प्रण जो कुछ न जौभर अब टलेंगे हम।
कलंकित कालिमा अपने नहीं मुखपर लगाने का ॥
हुआ प्रहलाद था जिसने तजा था डर के सत्याग्रह।
कभी इतिहासमें ऐसा नहीं हरगिज़ लिखाने का ॥
पवित्र उद्देश्य अपने को तिलांजलि दूं नहीं हूं मैं।
तुम्हारी इन दुराशाओं के सन्मुख सर झुकाने का ॥
हमारा लक्ष्य ऊंचा है हमारा धैर्य्य है निश्चल।
सहायक है स्वयं भगवान जो रक्षक है ज़माने का ॥
तुम्हारी यह दमन शैली अवश्य एक दिन दमन होगी।
समय भी है उपस्थित अब दमनकारीके आनेका ॥

महाराज हरिश्चंद्र और उनकी स्त्री तारावती।

ग़ज़ल बड़ी रङ्गत नं० २७।

है अर्ध रात्री भाद्र मास घन घोर घटा दिखलाती है।
बादल गर्जै बिजली चमके तवियत सुन २ दहलाती है ॥
देखो वह बैठी मरघट में एक अबला रुदन मचाती है।
आंखों से आंसू बहते हैं कुछ लकड़ी चुनती जाती है ॥
एक लाश ज़मी पर रक्खी है छाती से उसे लगाती है।
मुख चुम्मन करती बार २ रो २ कर कहती जाती है ॥
बेटे दुखिया माता को क्या निपुत्र ही छोड़े जाते हो।

बचपन से जोड़े नाते को पल भर में तोड़े जाते हो ॥
क्या इसी लिये बल वीर्य पिता तेरे ने पुत्र गंवाया था।
क्या इसी लिये नौमास पेट में रख मैंने दुख पाया था ॥
यदि प्राणपति मिल गये कभी मैं क्या उनको बतलाऊंगी।
बेटे तेरे बिन बतला तो किस प्रकार मुंह दिखलाऊंगी ॥

रामायण भजन नं० २८

सोलह शृङ्गारों से भूषित शूर्पणखा रावण की बहिनी।
छल छिद्र भरी और दुष्ट हृदय बिष पूरित जिमिदारुण अहिनी
गई पंचवटी पर एक बार जहां राम लखन सिय रहते थे।
और कंद मूल फल खा करके आनन्द नित्य प्रति रहते थे ॥

श्री रामचन्द्र के निकट जाय सूरत बनाय करके भोली।
सुन्दरता पर होकर मोहित यों प्रेम भरी बाणी बोली ॥
मैं तीन लोक में खोज फिरी कोई पुरुष न मेरे मन भाया।
इस लिये आज तक क्वारी रह मन बिरहा अग्नि में सुलगाया
पर आज देखकर राम तुम्हें क्या हालत दिल की बयां करूं।
लगती है आग छिपाने से आती है शर्म्म गर अयां करूं ॥
मुझसी हसीन दुनियां में जन तुझसा शकील कोई मर्द नहीं।
जो शरफ़ तुझे और मुझे मिला पा-सका दूसरा फ़र्द नहीं ॥
तुमसे है मुझ को मिला दिया प्रभु ने संयोग मिलाने को।
शीतल जल मुझको मिला आज बिरहाग्नि प्रचण्ड बुझानेको ॥

पितृ भक्त और आज्ञा पालन श्रवण कुमार ।

कव्वाली नं० २६ ।

मेरे बे गुनाह राजन् धर तीर तान मारा ।
तूने ताक कर जिगर का मेरे निशान मारा ॥
पितु मातु मेरे अन्धे जल लेने मैं था आया ।
पर तूने जल के बदले सीने पै बाण मारा ॥
बिंधता न गर कलेजा देता पिता मैं पानी ।
पर तीर ने तो मेरा सारा औसान मारा ॥
पहिले पिलाके पानी पितु मातु से यह कहना ।
इक बांण से मैं तेरा, बेटा जवान मारा ॥
कुछ धर्मवीर सेवा पितु मातु की न की थी ।
झट तीर ने क़ज़ा बन मेरा प्राण मारा ॥

श्रवणके माता पिताको दशरथका जल देना ।

भजन नं० ३०

टेक—पिता जी कीजिये अब जल पान ।
जल भर लाया पुत्र तेरा यह श्रवण आज्ञाधार ॥ पिता ॥
दे जल हाथ में करके इशारा कहा करो जलपान ।
मुंहसे पर नहीं बोला राजा, भयथा न तजदे प्रान ॥
देर तक खड़ा रहा यही जान ॥ पिता ॥
ले जल हाथ में कहा पुत्र क्यों खड़े हो तुम चुपचाप ।
हरगिज़ हम जल पान करेंना बोलो न जब तक आप ॥
प्यास से निकल जायं चाहे प्राण ॥ पिता ॥

(महाराज दशरथ कहते हैं)

पानी लेने जब सुत तुम्हारा घाट पै पहुंचा जा ।
तीर अचानक जान के हाथी सीने पै मुझसे लगा ॥
दिये उन त्याग वहीं झट प्रान ॥ पिता ॥

(वृद्ध माता पिता का शाप)

धर्म वीर जैसे सुत के घाव से निकले हमारे प्रान ।
जा राजन् तू भी सुतके दुखसे तड़पके त्यागे प्रान ॥
इतना कह त्याग दिये झट प्रान ॥ पिता ॥

****

सती द्रोपती और दुशासन

दुर्योधन का द्रोपदी सहित राजपट और पांडवों को जुए में जीत कर द्रोपदी को बुलवाना

ख्याल नं० ३१

द्रोपदी को लाने सभा बीच दुशासन तुम जल्दी जाओ ।
जिस हालमें हो उसी हालसे फ़ौरन घसीटते यहां तक लाओ
घूंघर वाले बाल निराले कोमल काले घोर घनेरे ।
टूट भी जायें छूट न जायें ज्यों पकड़े हैं सांप सपेरे ।
बाल छुड़ावे बाल उखाड़ो हाथ छुड़ावे हाथ मरोड़ो ।
वस्त्र विहीना होय बला से बीच सभा में लाकर छोड़ो ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No ...575...
Date 14.12.71
GOVT. INDIA

दोहा–आज्ञा पाते ही चला, पहुंच गया तत्काल ।
सती द्रोपदी से कहा, सभा का सारा हाल ॥

सुनते ही सभा का हाल द्रोपदी का चेहरा तम तमा गया ।
भ्रकुटी बिशाल हुए नेत्र लाल गुस्से से अङ्ग थर थरा गया ॥
इस समय सभा में जाने के हूं योग्य नहीं कहदो जाकर ।
एक वस्त्रसे हूं रजो धर्मसे हूं यह साफ़ २ कहो समझा कर ॥
सब सभासदोंसे बिनय मेरी जाकर इस तरह सुनाओ तुम ।
कहो नीच ऊंच सब समझ बूझकर सभामें उसे बुलाओ तुम ॥

दोहा–दूशासन ने जब सुने, सती के ऐसे बैन ।
उत्तर में कहने लगा, रक्त बर्ण कर नैन ॥

इस समय गुफ्तगू आपकी सब बे तुकी और बेढंगी है ।
इस बात की कुछ परवा नहीं एक वस्त्र से है या नङ्गी है ॥
धन माल हार अपने को हार और जुए में तुम भी हारी हो ।
अब चलो सभा में साथ हमारे उनकी नहीं हमारी हो ।
महाराजा दुर्योधन के आगे अब नम्रता पूर्वक आओ तुम ।
सौभाग्य आज यह तुमको मिला उनकी दासी कहलाओ तुन ॥
लक्ष्मी फ़तह इकबाल दास दासी जिस के कहलाते हैं ।
उसके आगे बड़े २ घमंडियों के सर ख़म हो जाते हैं ॥
है हुक्म उसी महाराजा का जो मैंने तुम्हें सुनाया है ।
चूं चरा किये बिन चलो सभाके अन्दर तुम्हें बुलाया है ॥
सब न्याय नीति कुल काम छोड़ प्रार्थनापर निठुराई धरके ।

ले चला दुष्ट इस हालत से मजबूरन केश पकड़ कर के ॥

दोहा-सतवन्ती के हृदय से, निकली यह फुँकार ।

अरे अधर्मी मानजा, मत कर अत्याचार ॥

भजन नं० ३२

टेक—दुशासन कहना मेरा मान ।

यह साड़ी निर्बल अबला की क्यों रहा इसको तान ॥ दुशासन

सती द्रोपदी की आहों से गल जायगा पाषान ।

कुल कलङ्क कुल नाश करन का क्यों करता सामान ॥ दुशासन

जो नङ्गी हो जाऊं सभा में निश्चय लीजे मान ।

अन्धे के सारे पुत्रों का मिट जाय सर्व निशान ॥ दुशासन ॥

देख ये सिंह खड़े हैं पाचों लिये धनुष और बान ।

क्या अर्जुन और भीम गदा को भूला है नादान ॥ दुशासन ॥

दुष्ट दुर्योधन ओ कुलनाशक सुनले इधर धर ध्यान ।

इस अनीति से मिट जाओगे जिमि पग मिटे निशान ॥ दुशासन

कहे हरिदत्त मान ले अब भी क्यों बनता अज्ञान ।

आर्य्य जाति यों नष्ट होयगी मत ढाओ तूफ़ान ॥ दुशासन ॥

दोहा-जिसे कुदृष्टि से कभी, देख न सके दिनेश ।

आज सभा में खींचत हैं, उसी सती के केश ॥

सन्नाटा सभा में देख द्रोपदी क्रोध भरी बाणी बोली ।

बस समझ लिया इस पुण्य भूमि भारतकी इति श्री होली ॥

इस सभा के सभासदों ने क्या कुछ भंग पीलई गहरी है।
मालूम नहीं कुछ होता है क्या सभी यह अन्धी बहरी है॥
देखते हैं बैठे अत्याचार पर नहीं ज़ुबान हिलाते हैं।
इस दुराचार के औतार का भयमान के पाप छुपाते हैं॥
क्या कृपाचार्य अश्वत्थामाके बाणोंसे तरकस निकल गया।
क्या विदुर भक्त का भी पापी के भयसे हृदय पिघल गया॥
द्रोणाचार्य्य के बाणों पर क्या ख़ौफ़ की काई डटी हुई।
क्या बाल ब्रह्मचारी भीषम की ज़बान जड़ से कटी हुई॥

शैर।

भरी है आज तुम सबने रुई क्या अपने कानों में।
असुर के ख़ौफ़ ने क्या ठोकदी कीलें ज़बानों में॥
लगा कर डाट बैठी है सभा मुंह के दहानों में।
सभासद हैं कि सब मिट्टी के पुतले हैं दुकानों में॥
निलज्ज क्षत्रिय के लाल हैं या कौन हैं सारे।
सती की देखते हैं दुर्गती और मौन हैं सारे॥

दोहा-अब दुर्योधन ने सुना सती का यह संलाप।
क्रोधित हो बोला बचन क्या है इसमें पाप॥

चुप चाप खड़ी रह सभा बीच क्यों बातें अधिक बनाती है।
क्या अन्धे को औलाद को अपना यौवन रूप दिखाती है॥
इन घमंडियों का घमंड दिल अपने से आज भुलाओ तुम।
आओ जंघा पर बैठ हमारी खुश हो चरण दबाओ तुम॥

दासियों में जाकर मोज करो इस समय नहीं महारानी हो।
यह सज़ा उसी दिल्लगी की है जिसकी तुम वानी मुवानी हो ॥

दोहा- गर्ज सिंहनी ने कहा मुँह संभाल कर बोल।
नाहक की आपत्तियां क्यो लेता है मोल ॥

हां अब भी मैं कहती हूं सारे झगड़ों की बुनियाद है तू।
कुछ नज़र नहीं आता है अन्धा अन्धे को औलाद है तू ॥
यह क्या कहता है यदि अपने महाराज की आज्ञा पाऊंगी।
तू तो मनुष्य कुत्ते के भी धोकर के चरण पी जाऊंगी ॥
इन पांडवों की आज्ञा पर मेरा सर्वस्व निछावर है।
क्या ताब तेरी छूसके मुझे मेरा रक्षक परमेश्वर है ॥
वह दुष्टों को देता है दण्ड इसी कारण रुद्र कहोता है।
धर्मज्ञों की रक्षा करके न्यायकारी न्याय चुकाता है ॥

दोहा—खड़ा २ क्या देखता ओ दुशासन वीर।
उतार क्यों लेता नहीं सरसे इस के चीर ॥

द्रौपदी की प्रभु से प्रार्थना।

शैर—घटाओं में मुझे रखलो कि पूरी आश हो जाये।
मगर ऐसा न हो साड़ो मेरी आकाश हो जाये ॥
न कुछ परवा पिता मेरी बला से लाश हो जाये।
मेरा ही नाश हो जाये जो इज्जत नाश हो जाये ॥
भबक के बल उठूं फ़ौरन जो नङ्गा हो बदन मेरा।
यही भूमी चिता हो और यही साड़ी कफ़न मेरा ॥

—○:o:○—

दीनानाथ अनाथ दुःख आपत्ती मेरी हरो।
घेरी है मृगराज गाय कपिला हे प्रभु रक्षा करो ॥

कृष्ण से पुकार।

(बहरे तवील)

कोई रक्षक नहीं है सिवा आप के प्रभू दासी की अपनी लीजो खबर। हो गया आज अन्धेरा चारों तरफ और रक्षक भी कोई न आता नज़र ॥ जिंदगी मैं आप से नहीं मांगती मौत का दान मुझ को देदो अगर। तो भी हूंगी मैं अहसानमन्द आप को कर दिया आपने गोया मुझ को अमर ॥ ऐसा अपराध मेरे से क्या हो गया भूल बैठे मुझे जो मेरे ईश्वर। या मैं फ़रियाद करने के काबिल नहीं याकि आहों में मेरी नहीं है असर ॥ और किसको पुकारूं सिवा आप के मेरा दुनियां में कोई न दर्दी बशर। मेरी नैया भंवर में पड़ी आन के डूबन में इसके न कोई कसर ॥ आगे किस२ के रोई चिल्लाई नहीं और किस २ के आगे झुकाया न सर। एक से एक बढ़ कर है ज़ालिम यहां नहीं दिलमें किसी के दयाका गुजर ॥ मुंह नहीं खोलते देखते हैं सभी हो रहा जिस तरह मेरे पै जब्र। क्या करूं और कोई है चारा नहीं हाय ! मेरा सबर हाय ! मेरा सबर !!

कृष्ण मुरारी सकट हारी आप कहां हैं शीघ्र पधारें।
टेर यही है भरी सभा में दुशन मेरा चीर उतारें ॥

दुशासन चीर उतारना चाहता है इतने में योगीराज वहां आते हैं। देकर के चीर दूसरा फिर झगड़ा सारा चुकाते हैं ॥

भीष्म पितामह का प्रण नं० ३३

कसम खाता हूं ऐ मल्लाह अब जगदीश की।
मैं महाराजा नहीं भारत का बनने का कभी ॥

सामने अपने यह मुशीरों के वाइदा करता हूं।
बाप के पीछे हकूमत छोड़ दूंगा बा खुशी ॥

त्याग दूंगा इसकी खातिर अपने मैं जुमला हकूक।
सर पै रक्खूंगा नवासे के तेरे ताजे शही ॥

और यह इक़रार करता हूं मैं सब के रूबरू।
शादी करने को नहीं च हेगा हरगिज मेरा जी ॥

मैं रहूँगा ब्रह्मचारी जिन्दगी भर शौक से।
ताकि मेरे घर में पैदा न हो बेटा कोई कभी ॥

इसलिये होगा न शाहन्शाह वह भी हिन्द का।
तेरा दुख्तर ज़ादह ही वारिस रहेगा ला बुदी ॥

आह माता सत्यवती ! है चित्रांगद का मलाल।
उसकी रहलत से है मेरे कल्ब की हालत बुरी ॥

दूसरे बेटे की बीमारी से हालत ग़ैर है।
हाय उसके सर पै है आने को वक्त जांकनी ॥

ऐ मुकद्दस वाल्दह क्यों कह रही है बार बार।
मेरे दिलसे सलतनत और अक़्दकी हसरत गई॥
यह तो मुमकिन है हिमालय आपे जुंबिशमें अभी।
पर नहीं पैमान से अपने हिलूंगा मैं कभी॥

महाराज दानवीर कर्ण।

कवित्त नं० ३४।

(१) प्राचीन पुरुषों का गौरव अगर देखना हो थोड़ी जीवन चर्य्या पढ़ो दानवीर कर्ण की। सत्यवादी, महात्यागी, श्रङ्गराज कर्णवीर, दानियों में शिरोमणि नाक क्षत्रिय वर्ण की॥ स्वर्ण के ढेर नित्य याचकों को दान दिये, प्राणों से अधिकता लाज रही प्रण की। भारत के धनाढ्य पुरुषो भारत की दशा को देख, "चन्द्र" आवश्यकता है उस कर्ण के अनुकर्ण की॥

(२) देखो और पढ़कर विचारो कर्ण का उदार भाव, महात्यागी दानवीर इसलिये कहाया है। जिरह बख्तर कर्ण कुण्डल मांगने के लिये जब राजा युधिष्ठरजी ने इन्द्रको पठाया है॥ शक्ति हीन करने को युधिष्ठर ने यह माया रची, पूर्णाग्रह करके सूर्य्य देव ने सुझाया है॥ दानवीर महात्यागी कर्णने जो उत्तर दिया "चन्द्र" इस भजन में इसका भावार्थ आया है॥

भजन ।

टेक—प्राण के वास्ते जी, अपना प्रण नहीं तोड़ूंगा।
मृत्यू का भय नहीं मुझे, मैं झूँठसे हूं भयमान ॥
अमर आत्मा मिथ्या भाषण निन्दित पाप महान। प्राण ॥
प्रण किया है दान का मैंने देता रहूँगा दान।
याचक लोग प्राण भी मागें देदूँ अपने प्राण ॥ प्राण ॥
परशुरामसे ब्रह्मास्त्र सीखा फिर क्यों मैं भयखाऊं।
एकसो क्या हों असंख्य अर्जुन तोभी नहीं घबराऊं॥ प्राण ॥
'चन्द्र" कहे अर्जुन के हाथों है मरना स्वीकार।
लेकिन दान देने को मनाही करना वीर उदार ॥ प्राण ॥

भजन नं० ६५।

टेक-भारत माता वारे विलाप कहां गये र जा कर्ण से दानी।

कवित्त-भीषण संग्राम जब कि महाभारत में होने लगा सारा ॥
ही शरीर बिंधा अन गिनत तीर से। भादों में वर्षा ज्यों छलनी
से पानी झरे ऐसे ही रुधिर बहने लगा कर्ण के शरीर से॥ ऐसे
कुसमय में कृष्ण और अर्जुन दोनों विप्र रूप धार दान मागते
हैं वीर से। सिसकते हुए समर भूमि में जो दिया उत्तर कर्ण
ने होना न अधीर सुनों श्रोतागणों धीर से ॥

कड़ी-कहने लगे कर्ण समझाय, बोले मेरे घर पै जाय।
तुमको वहां दान मिलजाय, हर्गिज़ मनें करे नहीं दानी। भारत

कवित्त–विप्र ने कहा राजा बातें क्यों बनाते हो दान के देने में या तो दे नहीं इंकार कर। निर्बल हूं बल नहीं बूढ़ा है शरीर मेरा मार्ग में सौवार कहीं बैठूँगा हार कर। आंखों से अन्धा कहीं ठोकर ही खाय गिरूं गिरते ही प्राण जांय ज़रा तो बिचार कर। लाख बार कहो नहीं घर कदापि जाऊं दान देना हो तो यहीं स्वीकार कर॥

कड़ी–कहते कर्ण दोऊ कर जोड़. मेरे दांतों को लो तोड़।

हुई इसी जगह दो जोड़ लेलो स्वर्ण ब्राह्मणज्ञानी। भारत

कवित्त–विप्र ने कहा राजा ज़रा तो विचार करो दांतों को तुड़-वाके मुझे हत्यारा बनाते हो। ऐसे दानी का हमें दान तो स्वीकार नहीं कीजिये हम जाते हैं क्यों तुम पछिताते हो॥ कर्ण ने कहा आप इतनी तो कृपा करें सामने से पत्थर मुझे दीजे क्यों घबड़ाते हो। अपने ही हाथों से मैं अपने दांत तोड़ूँगा स्वर्ण धरूं भेंट प्रभू खाली क्यों जाते हो॥

कड़ी–ब्राह्मण कहता करो विचार यह भी नहीं स्वीकार।

सेवा शूद्रों का अधिकार. सेवा से है मुझे गिलानी। भारत

कवित्त–धन २ दान वीर बाणों से छिदे हुए भी धीरे २ राजा कर्ण आगे को सरकने लगे। ज़ख्मों से पीड़ित ऐसे तृण भी न उठे जासे पैरों से पाषाण उठा छाती पर धरने लगे॥ ए.. कर से पाषाण और दूसरे से होंठ दबा मारने को उद्यत हुए सकल घाव दुखने लगे। तो भी नहीं प्रण छोड़ा दांतों पर पाषाण धरे इधर श्री कृष्ण इनके भावों को परखने लगे॥

कड़ी–कृष्ण ने पकड़ लिया झट हाथ, नवाया अर्जुनने भी माथ एक यही धर्म चलेगा साथ, निश्चय चन्द्र कवीने जानी। भारत

भजन नं० ३६।

टेक–जाओ पर कारज के हेत बेटा भीम बली बलधारी ॥

कवित्त–धन्य बेटा जन्म उसका दूसरों के काम आवे, मरता और जीता है पराये उपकार में। राम काज हेत हनुमान सिंधु पार गये, रावण मार लङ्का की विभीषण अधिकार में ॥ मिलते हैं अनेक उदाहरण पूर्व पुरुषों के, शिवी ने तन काट दिया कबूतर के प्यार में। मसल है मशहूर दूसरों की भलाई के लिये क्षत्रिय पुत्र प्यारे जन्म धारें संसार में ॥

कड़ी–बेटा भीम करो न देर जाओ ले कर में शमशेर।

मार दानेका करदो ढेर निर्भय बसे यह नगरी सारी। जाओ

कवित्त–इतना हुक्म पाते ही पवन पुत्र गरज उठा साथ ले सामान सारा भेट में जान लगे। अच्छे २ माल आज खाने को मिलेंग खूब, इसी धुन में मस्त दौड़ लम्बो लगाने लगे ॥

कड़ी–इतने में दाना पहुंचा आय, भीम को गया देख चकराय

बलीने बलकर गदा उठाय, ज़ोरसे सीनेपर फटकारी। जाओ

कवित्त–गदा के लगते ही दाना चिंघाड़ उठा दौड़ा मुंह फाड़ बली भीम के चबाने को। समझ गदाधारी ने गदा का प्रहार किया होश नहीं आने दिया एक बार दाने को ॥ मार २

भीम ने ज़मीन पर पछाड़ दिया, प्राण बिन निकाले नहीं छोड़ा उस दिवाने को। मरे हुए दाने को नगरी के दर्वाज़े पर कर दिया खड़ा तमाम शहर के दिखाने को॥

कड़ी-काटकर दानेके नाक और कान, चलदिये भीमबली बलवान कहा मातासे इस विधि आन, लो आज्ञा पूर्ण हुई तुम्हारी। जाओ

कवित्त-भीम का कर्तव्य देख कुँति प्रफुल्लित हुई पीठ ठोक बली भीम छाती से लगाये हैं। प्रातःकाल दाने को नगरी के दर्वाज़े पर मुर्दा पड़ा देख लोग शहर के घबड़ाये हैं॥ अरे ऐसा कौन बली दाने को मार दिया, नगरी पर अहसान कर मुर्दे जिलाये हैं। कहै हरिदत्त ऐसे एक क्या सहस्रों ही योधा यहां की भारतीय देवियां ने जाये हैं॥

कड़ी-अब होती मुर्दा संतान, जिन में नहीं देश अभिमान।
तोड़े जी हजूरकी तान, हरिदत्त लगी गुलामी प्यारी। जाओ

—○:o:○—

महाराणा प्रताप को शाह अकबर का पैग़ाम

ग़ज़ल नं० ३७।

पहुंचा जब अकबर का कासिद वक्त था वह शाम का।
दश्त में राणा था तनहा साथ था समसाम का॥
अस्प प्यासा खुद भी प्यासा आब का कतरा न था।
रेग बिस्तर और ढीला तकिया था आराम का॥

ख़त दिया क़ासिद ने जिस में लिक्खा था ऐ नामवर।
है ज़ुबां ज़द आज कल क़िस्सा तेरे आलाम का॥
किस लिये नाहक़ उठाता है तू यह रंजो अलम।
पड़ चुका है हिन्द में सिक्का हमारे नाम का॥
यह नहीं मुमकिन कि सर बर हो सके तू जङ्ग में,
क्या करेगा तू बता सामां नहीं गर लाम का॥
ख़त्म कर अब जङ्ग और शर्तें इताअ़त कर क़ुबूल।
है नतीजा बीच तेरे मुद्आए ख़ाम का॥
रहम आता है मुझे सुनकर तेरी फ़ाक़ा कशी।
काट तेरे सुलह से फन्दा बला के दाम का॥
तू दिलावर मन चला है शक नहीं इस में ज़रा।
तुझ से हों हम रुस्तम क्या मुँह रुस्तमो सैराम का॥
आ मेरे दर्बार में और कुर्सिये ज़र्री पै बैठ!
ऐश कर और दौर रख हरदम शराबो जाम का॥
मैं फ़क़त यह चाहता हूं ऐ दिलेर और होशमन्द।
दूर करदे दस्ते उल्फ़त से अलिफ़ इस्लाम का॥

(राणा प्रताप का उत्तर) ३८

यों जवाब अकबर को राणा ने दिया पैग़ाम का।
सर झुकाऊं किस तरह फ़रज़िन्द मैं हूं राम का॥
पृथ्वी है मेरा तख्त और फ़लक अपना है कफ़न।
क़ौम का ग़म खाता हूं भूखा नहीं इनआम का॥

क्षत्रियों के वास्ते कब ऐशो अशरत है रवा।
दर्दे मिल्लत का हूं आदी ग़म नहीं आराम का॥
हूं सरापा मैं फ़ना हुब्बे वतन में ऐ मुग़ल।
मुझको गरदिश में मज़ा मिलता है दौरे जाम का॥
मुझको है हरदम यह ग़म आज़ादिये मुल्को वतन।
है मुझे दरपेश क़िस्सा हिन्द की अक़वाम का॥
इज़्जते आबा का मैंने रक्खा है संगे बिना।
ख़ास मतलब है मेरे आग़ाज का अंजाम का॥
ज़िन्दगी बाक़ी अगर मेरी है तो चित्तौड़ में।
एक दिन जारी करूंगा सिक्का अपने नाम का॥
लो श्री प्रताप ने जो कुछ कहा पूरा किया।
बे गुमां वह मर्द था और आदमी था काम का॥

****

राणा प्रताप और भामाशाह की देशभक्ति

भजन नं० ३६।

टेक-कहा गये ऐसे वीर उदार, जैसे भामाशाह हमारे॥
होकर हर एक तरह लाचार, चले तजकर प्रताप मेवाड़।
सुनते ही ऐसे अशुभ समाचार, पीछे भामाशाह सिधारे। कहां
जाकर पकड़े कोस दो चार, था बूढ़ा शरीर गये हार।
गिरती थी अंसुओं की धार, नहीं जाते थे शब्द उचारे। कहां०
बड़ी मुशकिल से धीरज धार, बोले होकर के बे जार।

जाते हो हमको कहां विसार, चेतक चतुर चपल फटकारे। कहां दीजे चेतक हो उल्टा फेर, मतना करो पलक की देर।
जबतक जिये बलशाली शेर, गीदड़ क्याकर सकें हमारे। कहां०

महाराणा प्रताप का उत्तर।

कवित्त।

सुनों भामाशाह जी अब चल करके क्या करूं मेरे पास रहा बिल्कुल रुपये का भण्डार नहीं। बिना पूर्ण कोष के क्या सैना का समूह करूं बिना पूर्ण सैना होती दुशमन से तलवार नहीं॥ इतने दुखी होने पर भी महाराणा प्रतापसिंह को मलेछोंकी आधीनता हरगिज़ स्वीकार नहीं। तीनों बातों में से होती जो एक भी मेरे पास तो फ़िर चलने में मुझे होता कुछ इन्कार नहीं॥

शैर।

सुन कर के भामाशाह क़दमों पर गिर पड़े।
मालिन्द मोतियों के नीर नैनों से झड़ पड़े॥
बुड्ढा शरीर हो गया हूं लाचार।
वर्ना दिखा देता शत्रु पर कर के तलवार॥
बस कहा जो कुछ आप को ज़र माल चाहिये।
उतना ही मुझ से लीजिये और देरना लाइये॥

❀ दोहा ❀

इतनो सुन कर प्रताप ने फ़ौरन बाग मरोड़ ।
भामाशाह संग हो लिये, दिया इरादा छोड़ ॥
कड़ी-घोड़ा फेर दिया तत्काल, दाबता चला नाल पर नाल ।
सुनिये अब आगे का हाल, पहूंचे भामाशाह के द्वारे ॥ कहां०

❀ कवित्त ❀

जाकर भामाशाह जी ने अपनी देश भक्ति में दे दिया सब कोष रुपया बे शुम्मार का । जिससे भली भांति २५ वर्ष तक निर्वाह हो महाराणा की वीर सैना पच्चीस हज़ार का ॥ इतना कोष पाकर फिर सैना का समूह किया ख़ाली किया म्यान अपनी तलवार का । जीते ३ किले महाराणा प्रतापसिंह ने राज किया वापिस सारा मुल्क मेवाड़ को ॥
कड़ी-है बस वही ज़माना आज, भक्ति बिन जाती देशकी लाज
तेजसिंह करलो यह शुभ काज, डूबती नैया लगे किनारे ॥ कहां०

राणा प्रताप तथा उनका अपूर्व धैर्य्य ४०

शैर-एक दिन अकबर ने भारी क्रोध निज मन में किया ।
वीर इस को दर अपने पास में बुलवा लिया ॥
सब से कहा प्रताप का जो जीता पकड़ कर लायेगा ।
वह हमारी सलतनत का अंश दशवां पायेगा ॥
वीर सरदारों ने लाने की प्रतिज्ञा कर लिया ।

पै प्राण को अपने उन्हों ने हाथ ही पर धर लिया ॥
प्रतापसिंह की खोज में दिल्ली से योधा चल दिये ।
शस्त्र तीखे अस्त्र भी चंचल उन्हों ने ले लिये ॥
दल के दल धाये मुगल प्रतापसिंह की खोज में ।
आरावली शैल तिल २ ढूंढते बन खोह में ॥
ढूंढ़ते ही ढूंढ़ते बन जाबड़े के जापड़े ।
भील दो बिपता के मारे यवन सन्मुख आपड़े ॥
मुगलों ने पकड़ा हाय उन भीलों को जाके बेग से ।
पूछते राणा कहां धमकी दिखाते तेग़ से ॥
राणा को बतलाये बिन जाने नहीं तुम पाओगे ।
इस हमारी तेग़ से तिल २ अभी कट जाओगे ॥
मुग़लो तुम्हारी तेग़ से तिल २ चाहे कट जायेंगे ।
प्राण जब तक तन में है नहीं महाराज को बतलायेंगे ॥
निर्दयी मुग़लों का मारा भील घायल भग गया ।
दूसरा तेग़ों से उनकी टुकड़े २ कट गया ॥
भागा हुआ भील घायल पास राणा के गया ।
स्वामी यवन दल आगया इतना कहा बस मरगया ॥
उन महा कष्टों से उन भीलों ने भय खाया नहीं ।
प्राण अपने दे दिये राणा को बतलाया नहीं ॥
भील की मृत्यू हुई राणा के आंसू बह चले ।
हे मित्र मेरे हेतु तुम भी प्राण अपने दे चले ॥

रचकर चिता राणा ने प्यारे भील को अग्नि दिया ।
यवनों से लड़ने के लिये प्रयत्न भी झट पट किया ॥
ढूँढ़ते ही खोजते तट में तुर्क दल आगया ।
परिवार सहित यह थे जहां चारों तरफ़ से छागया ॥
क्षत्रियों भीलों ने पैर आगे नहीं बढने दिया ।
टूटे हुए शस्त्रों की है बौछार खूब उनपै किया ॥

(वार्ता)

(राणा अपने परिवारको एक स्थान पर मध्यमें एक वृक्ष के नीचे बिठा बड़ी वीरता से तलवार चलाते हैं और मुग़लों के छक्के छुड़ाते हैं मुग़ल सोचते हैं इस प्रतापी वीरका पकड़ना अति कठिन है एक चाल चलते हैं और वह महाराणा के पुत्र अमरसिंह को जो दक्षिण दिशा में युद्ध कर रहा था पकड़ने को टूट पड़ते हैं जिससे पुत्र के प्रेम में स्वयं राणा पकड़ा जाय)

शैर-अमरसिंह को जान बालक टूट सब उन पर पड़े ।

बालक तो थे ही पर अपने गात भर अच्छे लड़े ॥
भुजबल शिथिल होनेलगे जब अमरसिंह बलवानके ।
हैं खड़े तिन पै यवन बहु शस्त्र अपने तान के ॥
थी सुता पृथ्वीराज की बैठी ये हालत लख रही ।
मुख तम तमाया लाल हो अग्नि बदनमें दहक रही ॥
वीर कन्या क्रोध कर के हो खड़ी हुंकार के ।
चंडी सी धाई वृक्ष से बच्छे को वेग उखाड़ के ॥

चिल्ला उठी रानी अरी पुत्री कहां पुत्री कहां।
पल मात्रमें पहुंची अमर को यवन घेरे थे जहां॥
क्रोध कर बर्छे से मारे चार तुर्की बेग से।
घेरे अमर को थे खड़े जो निज नुकीली तेग़ से॥

नोट- यह पृथ्वीराज राणा का एक परम मित्र था जब उनकी कन्या ने चारों यवनों को मार मैदान साफ़ कर दिया तो अमरसिंह की दृष्टि इस बिकराल रूप धारण कि। और क्रोधाग्नि में जलती हुई देवी की ओर पड़ती है और क्या कहते हैं।

शैर-बोले अमरसिंह हे लैली बृथा तू रण में आगई।
बोली सुता हूं क्षत्रियों की वीरताई छागई॥
कहते यवन अरे मियां कन्या ये कैसी वीर है।
कैसी खचाखच काटती मानिन्द आती तीर है॥
वल्लाह लड़का फैंकता देखो तो क्या शमशीर है।
भाई ये क़ाफ़िर क़ौमपर देखो निगाहकर वीर है॥
यहकह बहुतसे मिल यवन किये कुंवरी पर आक्रमण।
कण्ठ में तलवार खाई ईश कह आई धरण॥

शैर नं० ४१।

कन्या तुझे रोता नहीं तुझ वीरता को रो रहा।
शोक ये तेरा नहीं तुझ वीरता को रो रहा॥
राणा ने बर्छा भील से वहीं मंगवा लिया।
वीर कन्या की चिता में गाड़ बर्छे को दिया॥

गाड़ के बोले कभी शुभ दिन हमारे आयेंगे ।
स्मृति कुँवरी प्रतिमा यहां कंचन की हम बैठायेंगे ॥
अपने बत्तिसों किलोंपर फिर करलिया अधिकार है ।
एक वर्ष ही में वैसे ही फिर हो गया मेवाड़ है ॥
ली श्री प्रताप ने जैसा कहा वैसा किया ।
कन्याकी स्मृतिके लिये एकमन्दिरथा बनवादिया ॥
कहते शंकर शरण प्रभू यह ऋषि वाटिका हरी रहे।
वीरत्व और विद्या यह दोनों अति फलफूलोंसे भरीरहे ॥
हो हममें वह मेल हमारी धर्म्मपताका खड़ी रहे।
शान्ति २ शुभ शान्ति २ शुभ शान्ति यहां हर घड़ी रहे ॥

—◯:o:◯—

वीरांगना चंचल कुमारी ।

लावनी नं० ४२ ।

देहली से एक चली बिसातिन रूप नगर में आई है ।
भांति २ के चित्र विचित्र रङ्गीन बेचने लाई है ॥
गये कहां वह चित्रकार अब जिनके हाथ सफ़ाई थी।
हाथी दान्त की तख्तियों पर उत्तम-मूर्ति बनाई थी ॥
विक्रमसिंह के जाके महल में जब आवाज़ लगाई थी ।
चंचलकुमारी ने उसको सत्कार सहित बिठलाई थी ॥
चारों ओर से कन्याओं ने उसकी हंसी उड़ाई है ॥१॥

चंचल कुमारी ने सहेलियों को ख़ामोश कराई हैं।
और बिसातिन के नज़दीक से पीछे सभी हटाई हैं॥
कहा बिसातिन से फिर आप जो २ तस्वीरें लाई हैं।
देखूँ मैं किस २ की और किस कारीगर की बनाई हैं॥
अब न करेगी हास्य कोई भी क्यों दिलमें घबराई है॥२॥

खोल पिटारा बिसातिनी तस्वीर उसे दिखलाती है।
यह "अकबर" यह "शाहजहां" हैं उंगलीसे बतलातीहै॥
यह तस्वीरें देख के चंचल यूँ उस से फ़रमाती है।
हिन्दुओं की तस्वीरें दिखा क्यों वृथा समय गंवाती है॥
यह तो मैंने सबी देखली एक न दिल को भाई है॥३॥

इन को तो रख लिया मगर एक बंडल और उठाया है।
मानसिंह और जगतसिंह आदिका चित्र दिखाया है॥
कर प्रशंसा बिसातिनी ने गौरव इनका बढाया है'
किन्तु चोट लगी चंचलके और जोश रक्तमें आया है॥
कहा बिसातिनसे जो उसने 'चन्द्र"नेकी कविताई है॥४॥

दादरा नं० ४३।

चित्र यह न दिखा कुल घातकों*के॥
बदनाम हिन्दू जाति है इन ही के काम से।
छाती फटे है दिल जले है इनके नाम से॥ चित्र॥
क्षत्राणियों का दुग्ध ये करते हराम हैं।
"हिन्दू" नहीं यह बादशाहों के गुलाम हैं॥ चित्र॥

डूबी है शोक सिन्धु में यह जाति शर्म्म से।
कुल को कलङ्क लग गया ऐसों के जन्म से ॥ चित्र ॥
माता ने रक्खा पेट में लाखों उम्मेद पर।
धब्बा इन्होंने डाला है चादर सफेद पर ॥ चित्र ॥
जायें समुद्र छोड़ ओस चाटने को यह।
कुलमें कुल्हाड़ा होगये जड़ काटनेको यह ॥ चित्र ॥
पैदा यह हिन्दुओं में स्याह फ़ाम न होते।
क़ौमी नविश्ते "चन्द्र" फिर बदनाम न होते ॥ चित्र ॥

दोहा—बुढ़िया ने सारी सुनी चंचल की तक़रीर।
अमरसिंह, प्रताप की दिखलाई तस्वीर ॥

ग़ज़ल नं० ४४।

देख कर तस्वीर चंचल फिर तो हर्षाने लगी।
मोल मुँह मांगा उसे फ़ौरन ही दिलवाने लगी ॥
*क्योंकि इन्होंने अपनी कन्यायें यवन सम्राटों से विवाही थीं
इस से चंचल कुमारी रुष्ट हो कर कहती है कि
जिन्होंने अपने धर्म के शत्रुओं से ऐसा
सम्बन्ध जोड़ा है वह हिन्दू नहीं)

अमरसिंह जसवन्तसिंह और कर्णसिंह—प्रताप के।
सामने तस्वीर रख धन्यवाद वह गाने लगी ॥
जानकर तस्वीर बुढ़िया ने छिपाई उससे एक।
कपकपाहट आगया और दिलमें घबराने लगी ॥

क्यों छिपाई तुमने यह तस्वीर चंचल ने कहा ।
हाथ दोनों जोड़ के बुढ़िया यूँ बतला ने लगी ॥
देखकर चंचल हंसी उस वीर की तस्वीर को ।
"है मुकट यह हिन्दू कुलका" मुखसे फ़र्माने लगी ॥
लाज हिन्दू कौम की अभिमान हिन्दू पदका है ।
ख़िदमते अक़्वाम इसके दिलको उक्साने लगी ॥
यह नहीं स्त्री का दुशमन है मुहाफ़िज़ क़ौमका ।
जन्म भूमि का है सेवक सबको समझाने लगी ॥
लूँगी इस तस्वीरको ऐ "चन्द्र" बेशक आज मैं ।
मेरी भी तबआ रवानी जोश पर आने लगी ॥
दोहा-चंचल का दिल देखकर बुढ़िया इस प्रकार ।
बीरों की तस्वीर लो देखो नयन उघार ॥

भजन नं० ४५ ।

ग़ज़ब यह क्या कियारी-यह क्यों दिखलाई तसवीर ।
जिसके नाम से इन कन्याओं के दिल में नफ़रत थी ।
उस ही औरङ्गज़ेब बादशाह की यह एक मूरत थी ॥ ग़ज़ब
सब लड़कियां हंस कर बोली ! बेढङ्गी तस्वीर ।
ना वाजिब अल्फ़ाज़ से उस तस्वीरकी-की तहक़ीर ॥ ग़ज़ब
एक लड़की ने हंसी में यह तस्वीर ज़मीं पै पट को ।
दूसरी ने पैरोंसे कुचली बुढ़िया देख के भबकी ॥ ग़ज़ब ॥
कहा बिसातिन ने घमंड से अगर यह सुन पावेगा ।
रूपनगर का क़िला खाक में फ़ौरन मिल जावेगा ॥ ग़ज़ब ॥

चंचल कुमारी ने सहेलियों को पहिले समझाई ।
पर बढ़िया के शब्द को सुनकर यह भी तैश में आई ॥ ग़ज़ब
मारो इस पर लात सभी तुम बोली राजकुमारी ।
हिन्दू धर्म का शत्रू है यह पूरा अत्याचारी ॥ ग़ज़ब ॥
अपने दामले वह तसवीर भी उसी जगह पर छोड़ ।
बान्ध पिटारा बुढ़िया बिसातिन भागी पत्ता तोड़ ॥ ग़ज़ब ॥
चंचल का यह कर्म था निश्चय बालक पनको तरङ्ग ।
होनहार ने "चन्द" चढ़ाया इसपै और ही रङ्ग ॥ ग़ज़ब ॥

लावनी नं० ४६ ।

आगा पिटारा उठा बिसातिन लौटके देहली जाती है ।
दर्या बीबी सुरमा वाली उसे यहां मिल जाती है ॥
उससे सारा ये हाल कहा उसने महलों में जाय कहा ।
ज़ेबुन्निसा और जयपुरी बेगमसे नहीं ये सहा गया ॥
जयपुरी ने औरङ्गज़ेब से ऐसा मुनासबा चाहा ।
जब मानँगी चंचल कुमारी हुक्का ताज़ा करे मेरा ॥
ज़ेबुन्निसां भी तो अपने पास इसबाना चाहती है ॥ १ ॥
औरङ्गज़ेब ने रूपनगर को फौरन ख़त भिजवाया है ।
चंचल कुमारीको यहां भेजो यह उसमें लिखवाया है ॥
विक्रमसिंह के दिलमें भी तो विचार ऐसा आया है ।
शाही महल में भेजने को सामान सारा कराया है ॥

ख़बर सुनी जब यह चंचलने मन ही मन घबड़ाती है ॥२॥
उदयपुर वाले राजसिंह को चंचल ने ख़त पहुंचाया।
आओ! बचाओ! राजकन्याका बेड़ा भंवरमें चकराया ॥
राजसिंह तैयार हुआ रास्ते में डेरा डलवाया।
जाता हुआ डोला दिल्ली को राजसिंह ने रुकवाया ॥
रजपूतों की जीत हुई है यवन सैन्य घबराती है ॥ ३ ॥
ज़ेबुन्निसा और उदयपुरी चंचल की क़ैदमें जाय पड़ी।
क्षत्रानी ने अपने सामने जब दोनों को करी खड़ी ॥
कहो! कहा था क्या दिल्ली में बोली तुमने बात बड़ी।
बड़े बोलका सिर नीचा है याद करो बस वही घड़ी ॥
उदयपुरी से कहा कि हुक्का क्यों नहीं भरके लाती है ॥४॥

दादरा नं० ४७।

टेक-अब तो हुक्का हमारा भरना पड़ेगा ॥
आई हो मेरी क़ैद में तुमको दिखलाऊंगी।
तुम से ही आग अपनी चिलम पै धराऊंगी ॥ १ ॥
जो चाहती थी और से सिर अपने आपड़ी।
क्या शेरनी को छेड़ना था कोई दिल्लगी ॥ २ ॥
मजबूर होके हाथ में अपने चिलम उठा।
ठण्डा किया है पेचवान आगे ला धरा ॥ ३ ॥
मुँह अपना गरेबान में अब देख लीजिये।

किसने भरी चिलम है ज़रा गौर कीजिये ॥ ४ ॥
क़ानूने राजपूती से तुझको रिहा करूं ।
दिल्ली में औरङ्गज़ेब से कह देना हुक्म दं ॥ ५ ॥
तस्वीर को जो शाह की पैरों तले मले ।
क्या उससे हुक्का भरने की उम्मेद थी तुझे ॥ ६ ॥
अब "चन्द्र" हिन्दू क़ौम में वह देवियां नहीं ।
कहने को बयां रह गया लेकिन निशां नहीं ॥ ७ ॥

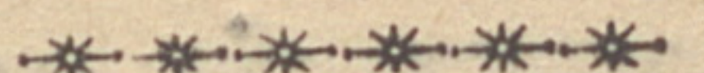

बादशाह औरङ्गज़ेब का दर्बार ॥ ४८ ॥

❀ दोहा ❀

एक दिन औरङ्गज़ेब का लगा हुआ दर्बार ।
राजपूत रण बांकुरे बैठे सभा मझार ॥

❀ शैर ❀

बादशाह के सभा में आने की थी देर ।
पिंजड़े में लाया गया बन्द जङ्गली शेर ॥

॥ ख्याल ॥

बोला अभिमानी औरङ्गज़ेब अभिमान से चैहरा लाल हुआ ।
जसवन्तसिंह जग में मेरा कैसा बुलन्द इक़बाल हुआ ॥
देखा यह जङ्गली शेर मेरे पिंजड़े में पड़ा पामाल हुआ ।
कितने ही ऐसे शेरों का मेरे हाथों से काल हुआ ॥

मेरी ताकत के आगे देखो सिंह आज शृगाल हुआ।
हरिदत्त कहै इतना सुन कर दरबार का रङ्ग निढाल हुआ॥

❀ दोहा ❀

लेकिन जसवन्तसिंह से सहे नहीं गये बैन।
एक दम बोले गरज कर रक्त वर्ण कर नैन॥

आपके पिंजड़ेमें शेर बन्द है किन्तु—

भजन नं० ४६।

हमारे घर में नित प्रति शेर बच्चों में खेला करते हैं।

कवित्त—बादशाह गुस्से से भौंहे कमान कर बोले अभी आप का ग़रूर हुआ चूर नहीं। रस्सी तो जल चुकी बल अभी बाक़ी है इनका भी निशान मिटे समय कुछ दूर नहीं॥ आप का शेर क्या इससे भी ज़बरदस्त जिसकी दहाड़ तेज़ सहना कोई शूर नहीं। कल अपने शेर को दर्बार बीच हाज़िर करो दानों लड़े छुट्टी करो झूठा ग़रूर नहीं॥

कली—बोले जसवन्तसिंह फिलहाल, ऐसे नहीं हमारे शेर।
जिनके थप्पड़से ही ढेर, ऐसे सिंह रोज मरते हैं॥ हमारे

कवित्त—बादशा करता हूं कल को दर्बार बीच अपने घर पाला हुआ शेर लेकर आऊंगा। कैसे पछाड़ता है लड़ाई में इस पामर को अपने बबर शेर का जौहर दिखलाऊंगा॥ झूँठा

[ग़रूर जसवन्तसिंह करता नहीं कहता हूं निश्चय वही उससे कराऊंगा। आप अपने शेर को हर तरह तैयार रक्खें मैं अपने शेर को यहां लाऊंगा ॥

कली-दूसरे रोज़ भरा दर्बार, आकर बैठे सब सर्दार। साथले पृथ्वीसिंहकुमार, कदम जसवन्तसिंह धरते हैं। हमारे

—○:o:○—

कवित्त-औरङ्गजेब बोला अपना शेर क्यों लाये नहीं हमारे इस केहरीसे किसको लड़ाओगे। बातों में कुलाबे ज़मीं आसमां के मिलाते हो अब कहो कुश्ती आज किससे कराओगे ॥ जसवन्तसिंह बोले आप अपना निकालें शेर मेरा सिंह मेरे पास बैठा हुआ पावोगे। इतने में पृथ्वीसिंह कूदा कटार तान जसवन्तसिंह बोले दाग़ कुल को लगाओगे ॥

कली-निहत्थे पर लेकर हथियार, क्षत्रिय करते नहीं हैं बार
इसलिये रखदे यहीं कटार, क्षत्री कौल से नहीं टरते हैं

कवित्त-फैंक कर कटार बाल पृथ्वीसिंह तैयार हुआ. शेर निकल पिंजड़े से सामने को आया है। लेकिन बड़ी फुर्ती से पृथ्वसिंह बहादुर ने उसका वार रोक अपना दिखलाया है ॥ अगले दोनों पैर पकड़ चीर के बनाये दो जाकर अगारी बादशाह के गिराया है। छोटे बच्चे का ऐसा वीरत्व देख जय २ का नारा सब दर्बार ने लगाया है ॥

कभी हम थे ऐसे बलवान, जिनके बल से था जग भयमान।
आज हरिदत्त जनें सन्तान, गलियों में पिटते फिरते हैं ॥ हमारे

पन्नाधाय की अपूर्व राज भक्ति का आदर्श

ख्याल नं० ५०

पन्नाने धरधीर कलेजा पकड़ के ऐसे फ़र्मायां।
अभी करूंगी यत्न बचाने का तू क्यों ऐसा घबड़ाया॥
कितनी गुज़री पुश्त हमारी आज तलक दुख नहीं पाया।
कैसे छोड़ूँ धर्म्म नमक मैंने संग्रामसिंहजी का खाया॥
इतना ही कुँवर था एक पन्ना का सोते से उसको बैठाया।
उतार शाही लिबास उदयसिंह का सारा उसे पहिनाया॥
उदयसिंह ले लिया गोद में और छाती से चिपटाया।
अपना कुँवर दिया सुला वहां जहां कालका चक्कर था आया॥
उदयसिंह को रख टोकरे में ऊपर से कूड़ा भरवाया।
किसी सेठ के यहां उसी हज्जाम के हाथों पहुंचाया॥
दोहा-अब पन्ना ने उदयसिंह इस विधि दिये निकाल।
रही मौत की आश कर बैठ पुत्र के नाल॥

भजन नं० ५१।

टेक-आख़ीरी देख रही तरवीर, खड़ी पन्ना कुँवर अपने की।

❀ बारहमासा ❀

कह रही पन्ना कुंवर तुझ पर हूँ मैं बलिहारियां।
धर्म हित परलोक को तू कर चला तैयारियां॥

कर चला मुझको सपूती आज इस संसार में ।
करके न्यौछावर चला तू प्राण पर उपकार में ॥
धन्य बेटा भाग्य तेरे धन्य है वह शुभ घड़ी ।
जिस में तैंने जन्म लीना कह रही माता खड़ी ॥

कड़ी–मन समझा रही थी महतारी, आई इतने में मृत्यु दुखारी
कर ले करके तीक्षण कटारी, महलमें आगया बनबीर॥ खड़ी

❀ बारहमासा ❀

यों कहा बनबीर से पन्ना ने राजन् आइये ।
किस लिये इस वक्त में तकलीफ़ इतनी पाई है ॥
फिर कहा बनबीर ने पन्ना से यों करके बयां ।
खैर सल्लाह कुंवर को लेने को आया मैं यहां ॥
सुनकर बचन पन्ना को इकदम बेक़रारी आगई ।
उधर बच्चे के कलेजे पर कटारी आगई ॥

कड़ी–कर ले करके कई दवाई, नहीं पलभर की देरी लगाई ।
दया ज़ालिमको तनक न आई, बीचसे दिया कलेजा चीर। खड़ी

❀ बारहमासा ❀

ज्यों हीं बच्चे के लगा सीने में खंजर कारी है ।
एक दम बच्चे ने मारी ज़ोर से किलकारी है ॥
वह तो उसको मार पहुंचा अपने महलों जाय के ।
इधर पन्ना गिरपड़ी ग़श पुत्र अपने का खाय के ॥
होश आते ही रोपड़ी पुरग़म बुलन्द आवज़ से ।

सुनकर आये और बहुत एकदम कठिन किलकारसे ॥

कड़ी-आये सुनकर सब चित्तौड़वाले नर नारी वृद्ध और बाले ।
कर कौन गया ऐसी चालें करें सब पन्नासे तक़रीर ॥ खड़ी ॥

❀ बारहमासा ❀

कुछ न देकर भेद पन्ना फ़िर सुबह वहीं आगई ।
मगर मातम की घटा सारे शहर में छा गई ॥
फिर एकदिन ऐसाहुआ लिया राज उदयसिंह पाईके ।
जिसको पन्नाने किया था परत्रिश दबकाय के ॥
धर्म हित में पुत्र तक धरो कर्द पन्ना की तरह ।
अपने राजा के बनों हमदर्द पन्ना की तरह ॥

कड़ी-अए मेरे प्यारे भाई-करो सब के साथ भलाई ।
करी तेजसिंहने कविताई-कटे तभी दुख रुपी ज़ंज़ीर ॥ खड़ी ॥

धर्मवीर हक़ीक़तराय ५२ ।

[ग्यारह वर्ष का वीर बालक धर्म नहीं छोड़ता प्राण देना स्वीकार है माता पिता समझाते हैं]

टेक-रही माता समझाय मानों कुँवर हमारे ।
बेटा बदक़िस्मत मेरी, देखी जंज़ीर और बेड़ी ।
क़तल करवाय दिया जाय, लेकर तेग़ दुधारे ॥ रही । १ ।
एक सूरत बरी की बताई, होजावे ये जिससे रिहाई ।

बेटा सुनलो कान लगाई, जो मुसलमान बन जाय ॥
हरगिज़ न जाओगे मारे ॥ रही ॥ २ ॥
जो क़तल किया जावे तू . फिर मुझको कहां पावे तू।
गर मुसलमान बन जावे तू, कभी तो सूरत मिलजाय ॥
हाय बैनों के तारे ॥ रही ॥ ३ ॥
यों बोले हक़ीक़त बानी, मेरी माता करे नादानी।
ये लाला है झूंठा जिस्मानी जिस्म ये मिट्टी होजाय ॥
फिर धर्म को क्यों बिसारे ॥ रही ॥ ४ ॥

ग़ज़ल नं० ५३।

आंखों में आंसू भर के हक़ीक़त से यों कही।
वालिद ने उसके आह फिसर तुम किधर चले ॥
तुम किस पै छोड़े जाते हो मुझ बद नसीब को।
किस की सुपुर्द माता ओ बीबी को कर चले ॥
कलमा ही पढ़ ले पुत्र तेरी जान तो बचे।
मेरे ही सामने तो न सूये सफ़र चले ॥
तैयार हूं मैं तेरी एवज़ जान देने को।
तदबीर गर कोई मेरी नूरे बसर चले ॥
ओ बच्चे! लाल मेरा यह लाखों का पाला है।
इस योग्य यह नहीं है कि इस पर तबर चले ॥
आराम पाया होगा किसी ने जहान में।
इस ज़िन्दगी के हाथों मगर हम तो मर चले ॥

हक़ीक़त का उत्तर नं० ५४।

सुन कर पिता की बात हक़ीकत ने यों कहा।
हम आज अपने धर्म पर देने को सर चले॥
मुमकिन नहीं अधर्म के रास्ते पै मैं चलूं।
सूरज चले ज़मीं चले या क़मर चले॥
प्राणों से प्यारे धर्म पर तन मन निसार है।
हा तेग़ अब गुलू पै मेरे बे ख़तर चले॥
गर्दन झुकी हुई मेरी झुम्मिश न खायगी।
ख़ंजर चले कटार चले या तबर चले॥
गर लाख बार भी हो मुझे जिस्म ये अता।
हर बार हूं शहीद मेरा बस अगर चले॥
कोई पिये पिये न पिये हमको क्या ग़रज़।
हम तो लहू से जामे शहादत हैं भर चले॥
मरने की ख़ातिर आये हैं सब इस जहान में।
लेकिन हम जहान से होकर अमर चले॥
कुत्तों की मौत मरना नहीं शाने बशर है।
दुनियां से गर चले तो मिस्ल शेर नर चले॥

दादरा नं० ५५।

कैसे छोड़ूँ धर्म मोंहि प्यारा॥ टेक॥
येही धर्म हरिश्चन्द्र ने न छोड़ा, जाय नीच के घर में किया था गुज़ारा॥ १॥ ये ही धर्म रामचन्द्र ने न छोड़ा, तज राजपाट

वह बन को सिधारा ॥ २ ॥ यही ही धर्म मोरध्वज ने न छोड़ा,
इकलौते सुत के धरा शिर आरा ॥ ३ ॥ कहते तेजसिंह ऐसे
हक़ीकत, फिर कैसे जावे ये मुझ से बिसारा ॥ ४ ॥

भजन नं० ५६ ।

दोहा–बस अब ज्यादह मत कहो, और मतना हो दिलगीर ।
देरी भी लाओ नहीं, करिये जल्द अखीर ॥

टेक–क़त्ल करवाय दो जी मुझको है मरना मंजूर ।

भूमंडल का राज्य मिले और मिले क़िला सोने का ।
तब भी अपना धर्म छोड़ कर नहीं तुर्क होने का ॥ १ ॥
धर्म छोड़ कर बहिश्त पाऊं पाऊं ग़िलमां हूर ।
इस जीने पर लानत भेजूँ डालूँ सब पर धूर ॥ २ ॥
ये सारे सुख धर्म के पीछे सब कुछ ये सामान ।
इतना पाकर भी तैयार है वह भूमी शमशान ॥ ३ ॥
तेजसिंह यों कहे हक़ीकत धर्म नहीं खोने का ।
इस अपयशकी बेलको निज कुलमें नहीं बोनेका ॥४॥

❀ ग़ज़ल ❀

मुसलमां होने को ऐ क़िबला मैं तैयार नहीं ।
आप की नज्र है यह सर ज़रा इंकार नहीं ॥
शर्म होती जो किसी पाप के बदले मरता ।
धर्म के वास्ते जां देने में कुछ आर नहीं ॥

मत अज़ाबों से डराओ मुझे डरना क्या है।
दूध क्षत्राणी का पीना यहां बेकार नहीं ॥
समझे क्या बैठे हैं बुज़दिल मुझे मेरे दुश्मन।
मुझ में सत्ता है जिसे वार नहीं पार नहीं ॥
मां का दुःख बीबी का रंडापा जो सुनाते हो मुझे।
बस करो सुन जो लिया उनका क्या कर्त्तार नहीं ॥
तुम जिसे मांगते हो दुनियां के सुखके बदले।
मुझको वह त्याग के जीना भी तो दर्कार नहीं ॥
धर्म ईश्वर की अमानत है उसे बेचूँ क्यों कर।
धर्म के बदले मैं दुनियां का ख़रीदार नहीं ॥
धर्म और जक्त के दुःख होते हैं अक्सर साथी।
फूल पाओगे कहां सोच जहां ख़ार नहीं ॥
आत्मा मरता नहीं जिस्म को चाहे मारो।
लोहे की आग की पानी की यहां मार नहीं ॥
काट सकते हो जो बाहर का हक़ीकत काटो।
काटती अस्ल हक़ीकत को यह तलवार नहीं ॥

—○○○○○—

गुरु गोविंदसिंह जी के दो पुत्र।

(जिस समय दीवारमें ज़िन्दा चुने जाते हैं उस कुरबानी का नज़ारा)

ग़ज़ल नं० ५७।

जिक्र इस्लाम का इस वक्त न हम से कर तू।
जिस्म तो दब चुका अब सीस पै पत्थर धर तू॥
नुक्ते गोविन्दके हैं जिनसे है हिलती शाही।
सिंह पुत्रों को न गीदड़ के बराबर कर तू॥
ज़िस्म खाकी को मिला खाकमें मिलना है जरूर।
रूह को मार के दिखा दे तो जानूं? नर तू॥
हुक्म ईश्वर का यूं ही इस में इज़ारा क्या है।
तमअ देता है क्या ले जायगा हमराह ज़र तू॥
सर को दे तेग़ बहादुर ने थी ली सरदारी।
हम को भी आज उसी ज़ेलमें ज़ालिम धर तू॥
शुक्र सद शुक्र हुए धर्म के बदले कुरबां।
ग़ौर से देख हक़ीकत की हक़ीकत पर तू॥
धर्म से प्रेम करें जिस्म से उल्फ़त तोड़ें।
वस्ल आसान नहीं मरने से पहिले मर तू॥
हाथ तो दब चुके अब आंखें उठाकर यह दास।
अर्ज़ ईश्वर से यही भक्तों से भारत भर तू॥

ग़ज़ल नं० ५८।

(हाकिम सर हिन्द से दोनों मासूम बच्चों की बातें)

सामना मौत का बे ख़ोफो ख़तर कर लेंगे।
हुक्म जल्लाद पै हम आगे को सर कर लेंगे॥
मुँह से उफ़ तक न निकालेंगे परेशां होकर।
तीरे ग़म खायेंगे और सीना सिपर कर लेंगे॥
फोड़ डालेंगे हम आंखों को जो निकालेगा आंसू।
सीना फ़ौलाद का पत्थर का जिगर कर लेंगे॥
न जवानी की तमन्ना है न हविस पीरी की।
हम तो तिफली ही में दुनियां से सफ़र कर लेंगे॥
क्या बिगाड़ेगा हमारा तू सितमगर बन कर।
क्या हमारा यह तेरे तीरो तबर कर लेंगे॥
दूध बख्शेगी न माता हमें मरते दम तक।
शिकवहे जुल्म कभी मुंह से अगर कर लेंगे॥
सर उड़ाने का हमें ख़ोफ दिलाता है क्या?
तू जो सर लेगा तो हम मौत को सर कर लेंगे॥
हां क़लम करदे जबां शौक से खामोस हैं हम।
वरना नाले दिले क़ातिल में असर कर लेंगे॥
राहतें सारे जमाने की मुबारक हों तुझे।
ज़िन्दगी हम तो मुसीबत में गुजर कर लेंगे॥
सर पै तलवार चला धर्म के मैदां तू।

हार जायेंगे जो हम आंखों को तर कर लेंगे ॥
तू हमें आलमे फ़ानी से मिटा दे हाकिम ।
नर्क को छोड़ के हम स्वर्ग में घर कर लेंगे ॥
मशयते नूरे सदाक़त को करेंगे रोशन ।
ज़ुल्मते शब को भी हम नूरे सहर कर लेंगे ॥

ग़ज़ल नं० ५६ ।

लिफ़ाफ़ा हाथ में लाकर दिया जिस वक्त माता ने ।
लगे झट खोलकर पढ़ने दिया है छोड़ खाने को ॥
लिखा था उसमें कुछ हिन्दू बिधर्मी होनेवाले हैं ।
जो आसकते होतो पढ़तेही चले आओ बचानेको ॥
मुसाफ़िरने पढ़े जिसवक्त यह अलफ़ाज उसख़तके ।
निवाला छोड़ कर धोकर हुए तैयार जाने को ॥
पहिन कपड़े उठा फिरतर किताबें साथले अपने ।
मुलाज़िम से कहा जाओ सवारी जल्द लानेको ॥
कहा माता ने ऐ बेटा अभी तो आके बैठा है ।
अभी फिर हो गया तैयार तू पर देश जाने को ॥
तू माता और बीबी को कुछ ऐसा भूल जाता है ।
नहीं आता महीनों तक हमें सूरत दिखाने को ॥
ख़ैर सुधि बुधि हमारी तू न लेता है न ले बेटा ।

मगर लड़कालवे जां है नहीं खाता जो खानेको ॥
रहम कर इसपै कुछतो तू न जा हरगिज़ न जा हरगिज़ ।
दवा कर इसकी और लेजा हकीमोंके दिखाने को ॥

मुसाफ़िर का उत्तर नं० ६० ।

यह सुनकर बात माता की मुसाफ़िर ने यों फ़रमाया ।
जमाने के लिये आये हैं हम गर्दन कटा ने को ॥
जो मरता है तो मर जाये बला से मेरा एक बेटा ।
मैं जाती के बहुत से लाल जाऊंगा बचा ने को ॥
मुलाज़िम भी इसी अर्सें में सवारी लेके आ पहुंचा ।
लो माता जी नमस्ते है मैं हूं मजबूर जाने को ॥
सवार हो रेल में पहुंचे जहां जिस जा कि जाना था ।
बचाया हिन्दुओं को जा यह अफ़साना है गाने को ॥
सुबह को तार यह पहुंचा कि लड़का चलबसा जगसे ।
तो बोले फ़िक्र क्या है हर एक आया है जाने को ॥
मुसाफ़िर धन्य तुम को आपसे संसार के प्यारे ।
जो वैदिक धर्म की ख़ातिर छुरा आये थे खाने को ॥

आर्य्य मुसाफ़िर के अन्तिम शब्द ६१ ।

सुनो ऐ आर्य्य सुजनो न छोड़ो धर्म की उलफ़त ।
यह वैदिक धर्म का अमृत है सबके ही पिलाने को ॥
अगर क़ातिल ने ख़ंजर लगाया मेरा क्या बिगड़ा ।

यह सब कुछ है किया मुझको धर्म सेवक बनाने को ॥
न घबराओ न घबराओ ऋषि का खून फल लाया ।
हुआ तैयार मुझसा जो धरम पर जां गंवाने को ॥
अगर क़ातिलभी मिलजाये उसे हरगिज़ न कुछ कहना ।
अविद्या से हुआ तैयार था बरछी चुभाने को ॥
मगर देखो कभी तहरीर का नहीं नाम मिट जाये ।
कि है तहरीर एक ज़रिया सचाई के फैलाने को ॥
नमस्ते है हमारी अब सभी को आर्य्यः मण्डल ।
हमारी जान जाती है तुम्हारे काम आने को ॥

राम के वियोग में भारत माता का विलाप

ग़ज़ल न० ६२ ।

राम जल्दी से मेरी जान बचाओ आकर ।
बूढ़ी माता को ज़रा धीर बंधाओ आकर ॥ १ ॥
दम घुटा जाता है बस थोड़ी सी जां बाकी है ।
देखलो शक्ल मेरी अपनी दिखाओ आकर ॥२॥
साथ लक्ष्मण व भरत शत्रुघ्न को लाना ।
अपनी नगरी को ज़रा देख तो जाओ आकर ॥३॥
तेरे जाने से हुआ हिन्द का गुल्शन बर्बाद ।
अपने हाथों से वहां फूल खिलाओ आकर ॥४॥
हो गये धर्म के शत्रु हैं हज़ारों पैदा ।

उनको सद्धर्म का उपदेश सुनाओ आकर ॥ ५ ॥

पापी रावण की तरह दुष्ट बढ़े जाते हैं ।

धनुष और बाणोंसे तुम उनको नसाओ आकर ॥ ६ ॥

बिजिया दशमी को अगर याद रखाना चाहो ।

धर्म के दुश्मनों को मार गिराओ आकर ॥७॥

मेरी सन्तान फिरे बन के भिखारी दरदर ।

अपनी छाती से उसे जल्द लगाओ आकर ॥ ८ ॥

तुम से मिलने का वह दिन रात यतन करते हैं।

अपने रहने की उन्हें ठौर बताओ आकर ॥ ९ ॥

चार कोटी से अधिक एक समय खाते हैं ।

भोज निज हाथसे भरपेट खिलाओ आकर ॥१०॥

कृष्ण तू छोड़ समाधी को बिरज में बस जा ।

अपनी सन्तान को अब योग सिखाओ आकर ॥११॥

गौऐं करती हैं तुम्हें याद बहुत रो रो कर ।

उनकी इस डूबती नैया को तराओ आकर ॥१२॥

भीम अर्जुन व नकुल और हो सहदेव कहीं ।

मुझसे उस पुत्र युधिष्ठिर को मिलाओ आकर ॥१३॥

आप आयेंगे तो फिर भारतोदय होवेगा ।

इस की रक्षा के लिये हाथ बढ़ाओ आकर ॥१४॥

प्रेमी भी आप से दो चार करेगा बातें ।

उसको निज प्रेम का उपदेश सुनाओ आकर ॥१५॥

श्री राम का भारत माता को उत्तर

गजल नं० ६३ ।

मात मेरी मैं तेरे पास अब आऊं क्योंकर ।
क्या करूं कैसे करूं धीर बंधाऊं क्योंकर ॥
सुन के हालत को तेरी दिल में घुटा जाता हूं ।
सोचता हूं मैं यही तुझको बचाऊं क्योंकर ॥
लक्ष्मण वीर चरत और भरत से त्यागी ।
कर्म फल रोकते हैं साथ में लाऊं क्योंकर ॥
वह अवध जिस में कभी राज किया करता था ।
आज तागज है हा ! उसका सजाऊं क्योंकर ॥
जान कर करते हैं जो पाप बता तो उनको ।
सत्य उपदेश सुनाऊं तो सुनाऊं क्योंकर ॥
हैं लजाते मुझे सब स्वाङ्ग बना कर मेरा ।
फिर दशहरे के लिये खून बहाऊ क्योंकर ॥
आलसी लोग तो घर घर ही फिरेंगे मारे ।
उन निकम्मों को मैं बलवान बनाऊं क्योंकर ॥
मुझसे मिलने को फिरें मेरी कराकर दुर्गत ।
शर्म आती है मुझे मुँह न छिपाऊं क्योंकर ॥
कोई अधिकारी हो तो जन्म लूँ उसके घर में ।
दुष्ट घर पैदा हो गौवों को बचाऊंक्योंकर ॥

ग़ज़ल सीता नं० ६४।

नाथ मुझको भूल बैठे क्या मेरी तकसीर है।
जाम खोदँगी मैं अपनी अब न बंधती धीर है ॥१॥
छुट गई संगकी सहेली और छुटा परिवार सब।
आपने चित्तसे बिसारी क्या मेरी तकदीर है ॥२॥
जितने अङ्गारे गगन में कोई भी गिरता नहीं।
क्यों जलावे जब कि दिलमें आपकी तसवीर है ॥३॥
होके अर्धाङ्गिन तुम्हारी क़ैद रावण की पड़ी।
राक्षस मुझको सतावे हाथ में शमशीर है ॥ ४ ॥

शेरखां और महाराज बूँदी का सम्वाद ६५

लग रहा दर्बार देहली में एक दिन शाह का।
कर्मचारी सब उपस्थित वक्त था उत्साह का ॥
नागाहा ही बादशाह ने प्रश्न ऐसा कर दिया।
जिस की हो स्त्री पतिव्रता बतावे वो यहां ॥
बूँदी के महाराज के तन में सरारा आगया।
खोल सीना और खड़े हो बादशाहसे कहदिया॥
धर्म पर अपने मरें क्षत्राणियों की शान है।
है मेरी स्त्री पतिव्रता मुझे अभिमान है॥
दोहा-शेरखां कहने लगे, सुनिये शाह जहान।
झूँठा दावा ये करे, रहा खूब मैं जान॥

लावनी नं० ६६ ।

घर के अन्दर का पता नहीं औरत क्या स्वांग रचाती है ।
करे खोटे कर्म खो बैठी धर्म और पतिव्रता कहलाती है ॥
करे औरत का विश्वास नाश दुनिया में अपना करते हैं ।
है त्रिया चरित्र मशहूर शूर फंस जाल में इनके मरते हैं ॥
ये चंचल चाल चलें चपला चटकीला रूप बनाती हैं ।
कर प्रहार नैनों के वार मारे फुँकार डस खाती हैं ॥
एक मासकी मोहलत दो मुझको मैं सारा हाल बतलाऊंगा ।
अभिमानी का अभिमान तोड़ सब शेखी धूल मिलाऊंगा ॥

दोहा—आखिर को ये फैसला, हुआ सरे दर्बार ।
झूँठे को फांसी मिले, सच्चे को अधिकार ॥

बंदी पहुंचा शेरखां, घर धोके का जाल ।
कुटनी एक बुलाय के, चली चाल तत्काल ॥

लावनी नं० ६७ ।

ये कुटनी थी बड़ी फितनी रूप बनाया धोखे का ।
कैसे महलों में जाऊं इन्तजार किया उस मौकेका ॥
कर सोलह शृंगार सजीली डोले अन्दर बैठ गई ।
महाराज बंदीकी बुआबन महलोंके अन्दर पहुंचगई ॥
रानी को यह मालूम हुआ रखीमीकी बुआ है आई ।

ये भोली भाली क्या जाने जो माया इसने फैलाई ॥

दोहा–एक रोज कहने लगी, सुन्दर अवसर जान ।
आ बेटी संग बैठ कर, कर लेवें अस्नान ॥
अनहोनी होवे नहीं, होतबता हो जाय ।
अचल मचल और रुठकर, रानीली समझाय ॥

❋ लावनी ❋

अय बेटी मन में ग़ौर करो क्यों नाहक को इतराती हो ।
छोड़ मरोड़ नहीं लूँगी तोड़ कुछमनमें क्यों दहशतखातीहो ॥
करो पूरी आश न करो निराश चलो बैठ पास स्नान करो ।
उट्ठो सवेर न करो देर नहा धोकर ईश्वर का ध्यान धरो ॥
चल गई चाल न रहा ख्याल अब जाल में रानी फंसती है ।
पहला प्रहार कर दीना वार एक डंक में नागन डसती है ॥

दोहा–रानी के बायें पैर में, लहसन का आकार ।
फौरन कुटनी ने उसे दिल में लिया उतार ॥
एक दो दिन के बाद, हुई चलने का तैयार ।
रानी से मांगन लगी, प्राणपति की कटार ॥

भजन नं० ६८ ।

हमारे मन को भाती है, रानी ये तेरी कटार ।
मन भावन और हृदय लुभावन कैसी पैनीधार ॥

दो ये निशानी अपनी रानी, हो अहसान अपार ।
बुआ क्या नितप्रति आती है ॥ हमारे मन० ॥ १ ॥
प्राण प्यारे प्रीतम की ये बुआ जी है कटार ।
जो कुछ इच्छा हो सो मांगो नहीं मुझे इंकार ॥
तेग़ ना मुझ से दी जाती है ॥ हमारे मन० ॥ २ ॥
ले बेटी एक तुच्छ बात पर करी तेरी पड़ताल ।
महाराज के पास जाय कर अभी कहूं सब हाल ॥
मुझे तू क्या ठुकराती है ॥ हमारे मन० ॥ ३ ॥
रुप भयंकर देख बुआ का करने लगी मलाल ।
लो बुआ नाराज़ न हो तुम दे दी तेग़ निकाल ॥
कुटनी मन में हर्षाती है ॥ हमारे मन० ॥ ४ ॥
कुटनी से लेकर कटार होकर तैयार देहली आए ।
देहलीमें आकर शेरखांने सब हाल शाहको समझाये ॥
लो कटार बूँदी रानीकी एक और चिन्ह बतलाता हूं ।
है जंघापर लहसनका चिन्ह जोअभी देखकर आताहूं ॥
पूछो इस झूठे राजा से जो मैंने क्या चिन्ह बताया है ।
ये कटार इसकी है या नहीं जो रानीको देकर आया है ॥

दोहा–बूँदी के महाराज के बिदा हुए सब होश ।
नीचा सर अपना किया बैठे हैं ख़ामोश ॥
शेरखां ने जो कहा सब है सही जनाब ।
हाय आज संसार में बिगड़ी मेरी आब ॥

लावनी नं० ६६ ।

हे ईश्वर हे कर्तार मेरे ये कैसी मुसिबत आती है ।
गई लाज है कुलकी आज मेरे अपमानित स्त्री जातीहै ॥
मेरे कुलमें पतिव्रता नार हुई, सर्वश्व धर्मपर वार गई ।
दुनिया में मेरी हार हुई मेरी रानी धर्म गंवाती है ॥
मैंने जिसकेऊपर विश्वास किया मंझधारमेंमुझकोडुबादिया
परतीत न करना जगमें कोई जो स्त्री चरित्रदिखाती है ॥
दो दिन की मोहलत पाते हैं बूँदी को राजा जाते हैं ।
रानीको मारी क्रोध निगाह मुँहसे न कही कुछ जाती है ॥
दिल्लीको फ़ौरन लौट गये रानी के ख़ता ओसान हुए ।
हमभी तो नरेन्द्र हैरान हुए कुछ बात समझमें नआतीहै ॥
ये कैसा रंग निराला है मालूम दाल में काला है ।
कुटनी ने झगड़ा डाला है आंखों से अश्रू बहाती है ॥
मर्दाना बेश बनाय लिया घोड़े पर जल्द सावार हुई ।
दो चार सहेली संग लेकर, दिल्ली को रानी जाती है ॥
देहली में पहुंची जा रानी है अजब हाल जी घबड़ाता ।
लग जाये पता क्या मेरी ख़ता मालूम मुझेभी होजाता ॥
मचरहा शोर चारोंही ओर. महाराज बूँदी फांसीखावे ।
रानीने कलंक लगाय दिया, कुल लाज गई अबना पावें ॥
दिये भेज दूत लेने सबूत, क्या ग़ज़ब आज ये आया है ।
जब मिला हाल खुलगया जाल रानी ने यत्न बनाया है ॥

रानी का गाना (ग़ज़ल) नं० ७० ।

तेरे दरबार में अय हक़ सच्चाई की फते होवे ।
सरों पे शहनशाहों के ताज इन्साफ का शोवे ॥
प्रभू तेरे यहां तो जांच होती सत्य असत्य की है ।
बिगाड़े और को जो उसकी पत मगवान तू खोवे ॥
दयामय देर क्या है क्यों छुपाया झूठने सत्य को ।
बंधी क्यों धाक झूंठेकी सत्यवादी खड़ा रोवे ॥
हमें विश्वास है ईश्वर तू सबके जानता मनकी ।
कहै ऋषिराम वैसा फल मिले जैसा कोई बोवे ॥

❀ रानी ❀

सरकार न कुछ दरकार मुझे सब कुछ है आपकी कृपा से ।
हैं पांच सौ रुपैया कर्ज़ मेरे दिलवा दो अभी शेरखां से ॥

❀ शेरखां ❀

सरकार यह झूंठी बकती है मैं सच्चा बयां सुनाता हूं ।
कभी सूरत इसकी नहीं देखी क़सम कुरां की खाता हूं ॥

॥ रानी ॥

जो शक्ल नहीं तूने देखी, तो कटार कैसे लाया है ।
और कैसे मेरी जंघा पर लक्ष्मन का चिन्ह बतलाया है ॥
जो कुछ रानी पर बीती थी वो सारा हाल सुनाया है ।
एक दूतिन के ज़रिये इसने यह सब परपञ्च रचाया है ॥
दोहा-रानी की सुन दास्तां गया सन्नाटा छाय ।

देखो जालिम शेरखां जाल रहा फैलाय ॥

बादशाह का हुक्म नं० ७१ ।

जसवन्तसिंह को रिहा करो फांसी पर इस को लटका दो ।
झूंठे की दशा यह होती है सारे आलम को दिखला दो ॥
इस लिए झूंठ से बचो सभी झूँठे का होता मुँह काला ।
ऋषिराम सत्य से प्रेम करो सत का होता है बोल बाला ॥

जसवन्तसिंह को महारानी की फटकार ।

बहरे तवील नं० ७२ ।

बन्द फाटक किले का करा दीजिये,
रण से भागा हुआ बढ़ने पावे नहीं ।
ऐसे कायर पती का न देखूंगी मुँह,
कह दो आकर मुझे मुँह दिखावे नहीं ॥१॥
युद्ध भूमी में दुशमन को मारे मरे,
झंडा लेकर फ़तह का किले में चढ़े ।
वरना आकर न हमको कलंकित करे,
अपनी इज्ज़त में बट्टा लगावे नहीं ॥ २ ॥
क़दम क्षत्री समर से पिछारी धरे,
यहां अपकीर्ति आगे नर्क में पड़े ।

अपमानित का जीना मरे से परे,
प्राण देकर पग पीछे हटावे नहीं ॥ ३ ॥
हाय तक़दीर मेरी गई फूट यों,
ऐसे कायर पती संग फेरे पड़े।
अपनी करनीका फल खुदही भोगेगा पर,
राज गद्दी को आकर लजावे नहीं ॥ ४ ॥
आर्य्य जाति का उद्धार होगा तभी,
जन्म लेंगी यहां ऐसी देवी कभी।
प्राण देने को तैयार होंगे सभी,
पार गुंडों की फिर कुछ बसावे नहीं ॥५॥
मेरी माताओ आपने पति पुत्रों से,
कहदो आया समय पग न पिछे धरो।
धर्म जाति पै जीवन निछावर करो,
और हरदत्त को कुछ सुहावे नहीं ॥ ६ ॥

******

महाराणी कुन्ती का पुत्र भीम पाण्डव बली गदाधारी।

ख़्याल नं० ७३।

धीरज धर न घबड़ा बहिना तेरा सब कष्ट मिटाऊंगी
तेरे सुत के बदले अपना सुत दाने को भेट पठाऊंगी ॥

तेरा प्यारा इकलौता पुत्र राक्षस से मारा जायेगा।
यह महा कष्ट होगा सुतका तुमसे न सहारा जायेगा॥
हैं पांच पुत्र मेरे योधा गर उनमें एक गया मारा।
फिरभी तो चार रह जायेंगे तेरा सुत इकलौता प्यारा॥
मत रुदन करे सुत अपनेको छातीसे लगा समझातीहूं।
दानेकी भेटमें जायेगा अभी भीम बलीको बुलाती हूं॥

दोहा-भली भांति समझाय कर, परहित चित में धार।
कुन्ती पहुंची भीम पर, ज़रा न कीनी वार॥

कवित्त-अरे बेटा भीम चली नित्य इस नगरी से आदमी का भक्षण करने दाना एक आता है। जिस के घर रह कर हम तुमने आनन्द किया, इसका रुदन सुनकर जिगर मेरा थर्राता है॥ इसकी है बारी भीतर जो रो रही है नारी आज, भेट इस की इकलौता पुत्र जाता है। कलै हरिदत्त बेटा दाने के निकाल प्राण, क्यों ना इस नगरी को निर्भय बनाता है॥

दोहा-ऋषि मुनि प्रनीत है, यह ही वैदिक धर्म।
मनुष्य मात्रको पांचयज्ञ, आवश्यक नितकर्म॥

लावनी नं० ७४।

आवश्यक नित कर्म धर्म है यह वैदिक सब से उत्तम।
श्रेष्ठ सकल जन नित्यप्रति सर्वदा करें करके उद्यम॥
प्रातःकाल एकान्त स्थानमें स्वयम् शुद्ध हो संध्या करे।

स्वांस रोक कर प्राणायाम फिर जगत्पतीका ध्यानकरे॥
गायत्री से अर्थ विचारे मनके सकल विकार हरे।
दृढं प्रतिज्ञा वीर पुरुष की किसी काल में नहीं टरे॥
सत् पुरुषोंका कथन यही है वर्णित है यह निगमागम ॥१॥
देवयज्ञ या अग्निहोत्र का तत्पश्चात् सामान करे।
"अमृतोपस्तरणमसी', इत्यादि से जलपान करे॥
अङ्गस्पर्श प्रज्वलित अग्नि हवन कुण्ड दरम्यान करे।
सर्वोपकार औषधि सब को अग्नि द्वारा दान करे॥
औरों का उपकार करे धर्मात्मा बनता है स्वयम् ॥२॥
पितृयज्ञ निज मात पिता की सेवा में तन मन लाना।
भोजन वस्त्र आवश्यक वस्तु उनको सादर पहुंचाना॥
चौथा कर्म है भोजन कालमें ग्रास न मुँह तक लेजाना।
कुत्ते कृमिका भाग पृथक् कर पीछे भोजन खुदखाना॥
कर्म पांचवा शेष रहा है जिसको दर्शाते हैं हम ॥३॥
ऋषिमुनि साधु संन्यासी जो आ पवित्र निजद्वार करें।
प्रेमपूर्वक गृहस्थ लोग सब अतिथि का सत्कार करें॥
भेंट करें आवश्यक वस्तु कभी न गुप्ताधिकार करें।
"चन्द्र" कहे सर्वदा साहसी उद्यमी परोपकार करें॥
इतिहासिक गाथा इसपर तुम्हें सुनावें सर्वोत्तम ॥४॥

दोहा—श्री राणाप्रताप का, पढ़ देखो इतिहास।
विपन्न बन में जब किया, कई बार उपवास॥

दादरा नं० ७५।

खाते थे वृक्षोंकी छाल, पीते थे झरनों का पानी।
कोई भोज्य वस्तु नहीं पावें, चुनके बीज वृक्षोंके लावें ॥
भोजन उनको पीस बनावें, कन्या पुत्र संगमें रानी। खा०।
ना कछु पतली ना कुछ मोटी, ना कुछ बड़ी नहीं कुछ छोटी।
बांटे आधी आधी रोटी, ब्याकुल दीन दुखी सब प्रानी। खा० ।२
ऐसा बहुत हुआ अवकाश, करते कई कई दिन उपवास।
नन्हें बालक पावें त्रास, होगई सकल वस्तु की हानी। खा० ।३
फिर भी था राणा दृढ़वीर, कि किंचितमात्र न हारे धीर।
"चन्द्रकवि" होनेलगे अधीर, पढ़सुनके इतिहास कहानी। खा०।४

ग़ज़ल नं० ७६।

सर्व क्लेशो ने मिल कर परस्पर सखा।
राणा प्रताप पे भारी वार किया ॥
न अधीर हुआ धीर कर से न दी।
लाख दुःखों ने निसदिन प्रहार किया ॥ १
अति ब्याकुल दुखी हुआ ऐसा विकल।
किया यवनोंने छलवल से पल पलमें छल ॥
बन में वृक्षों के भी न मिलें फूल फल।
शोक फिर भी नहीं एक बार किया ॥२॥

ऐसा हाल बेहाल हुआ निढाल हुआ।
शुभ काल बिकाल की चाल चला ॥
वृत्त छाल का भोजन न गाल गहा।
ऐसा शत्रुओं ने अत्याचार किया ॥ ३ ॥

पर काज के काज में लाज बचा।
आज राज का स्वामी बे ताज हुआ ॥
कष्ट पै कष्ट बन में सहन कर रहा।
तो न अकबरसे मिलना स्वीकार किया ॥४॥

"चन्द्र" प्रताप सन्ताप आप भरे।
पै त्याग बिलाप यह जाप करे ॥
उस घड़ी शोक संकोच मेरा टरे।
जन्म भूमि का देखूँ उद्धार किया ॥ ५ ॥

दोहा कांटा सा खटके अधिक. अकबर के मन खेद।
राणो जो मिलता नहीं, क्या है इस में भेद ॥

भजन नं० ७७।

टेक-पल क्षण यह सोच विचार है प्रताप नहीं मिलता है।
राजपूत योधा बलधारी. छत्रपति सैनिक बड़े भारी ॥ हरे ॥
सब आये हैं शरण हमारी यह ही क्लेश अपार है। प्र० ॥१॥
रहता चित्त मलीन हमारा, सकल राज है क्षीण हमारा ॥ हरे
राणो हो आधीन हमारा, किन्तु यह दुश्वार है। प्रताप ॥२॥

कौड़ी उसके हाथ नहीं है, सेना उसके साथ नहीं है ॥ हरे ॥
फिरभी नवाता माथ नहींहै, पक्का सब प्रकार है। प्रताप ॥३॥
भेष बदलके अकबर जावें, क्या कारणहै पता लगावें ॥ हरे ॥
आगेका वृत्तान्त सुनावें, 'चन्द्र" कथन निर्धार है। प्रताप ॥४॥
दोहा–एक दिन अकबर बादशाह, धारन कर सन्यास।
अलख जगाई आन के, राणा जी के पास ॥१॥
प्रताप ने तत्क्षण कहा अ सन लो महाराज।
दर्शन अतिथिके किये धन्य भाग्य है आज ॥२॥
सन्यासी कहने लगा, जाता हूं इस बार।
आऊंगा फिर जिस समय भोजन हो तैयार ॥३॥

❀ चौबोला ❀

सन्यासी तो चल दिया, राणा हुआ उदास।
भोजन दूँगा क्या उसे, अन्न नहीं है पास ॥
इतनी दरिद्रता में भी राणा क्या अतिथि सत्कार करे।
नीर लगा नयनों से बहने मन में सोच विचार करे ॥
अतिथि आ के भूखा जावे ना मेरे आहार करे।
डूबगया चिन्तामें "चन्द्र" तब मनमें शोक अपार करे॥
राणी यूँ कहने लगी, धैर्य्य धरो भर्तार।
रक्षक पालक ईश्वर, सृष्टि का कर्तार ॥
राणा रानी से कहे, बुरा दिवस है आज।
भूखे जङ्गल में पड़े, क्षत्रियोंके शिरताज ॥

भजन नं० ७८ ।

टेक-यही तो शोक है जी चिन्ता अग्नि लगी है तन में ॥
स्वयम् भूखे प्यासे थे हम इसका नहीं विचार ।
किन्तु अतिथि भूखा जावे यह है शोक अपार । यही० ॥१॥
उस दिन शोक नहीं था जिस दिन तजे पुत्र ने प्राण ।
अतिथि भूखा फिरे द्वारसे है वह शोक महान । यही० ॥२॥
लाखों क्लेशों से नहीं किञ्चित् घबराया प्रताप ।
अतिथि हेतु नहीं भोजन गृहमें है यह महासन्ताप । य० ॥३॥
चम्पा रोचल के कुल में यह लगा जाय है दोश ।
इसकी कह राणा प्रतापसिंह गिर गये हो बेहोश । यही० ॥४॥
"चन्दु" कहे कि वह राणा जो कभी नहीं घबराया ।
भूखा देख निज द्वारपे अतिथि मूर्छित होगई काया । य० ॥५॥

दोहा-पृथ्वी पे राणा पड़ा, तन का हाल निढाल ।
पुत्र सहित पुत्री तहां, आ पहुंची तत्काल ॥ १ ॥
पुत्री माता से कहे करो अतिथि सत्कार ।
भोजन दूंगी मैं उन्हें, त्यागो सोच विचार ॥ २ ॥
रानी पुत्री से कहे, मैं पूछूं हूँ तेय ।
क्या देगी कह तो सही, क्यों कलपावे मोय ॥३॥
चम्पा फिर कहने लगी, मत घबराओ आप ।
भोजन लाती हूं अभी जाग उठे प्रताप ॥ ४ ॥
सुन्दरसिंह व्याकुल अति, मां ने लिया उठाय ।

गोदी में ही सो गया, चम्पा पहुंची आय ॥ ५ ॥
राणा रोटी देख कर, बहुत मगन हो जाय।
कित से लाई रोटियां मुझको दे समझाय ॥ ६ ॥

ग़ज़ल नं० ७६।

रोटी आई है कहां से चम्पा समझा ने लगी।
हाल प्रथम दिवस का राणा को बतलाने लगी ॥ १ ॥
एक रोटी रात को आई थी मेरे बांट में।
यह तो वह है देखलो राणाको दिखलाने लगी ॥ २ ॥
वास्ते सुन्दर के यह रोटी छिपा रक्खी थी मैं।
भूख में मैं अपनी पत्ते प्रेम से खाने लगी ॥ ३ ॥
माता के बांटे में रोटी आज कोई थी नहीं।
आज की रोटी भी रख मैं दिलको बहलाने लगी ॥४॥
बैठी पत्थर पे खिलाती थी मैं सुन्दरसिंह को।
भूख में रोटी उसे देने इधर आने लगी ॥ ५ ॥
वास्ते अतिथि के घरमें कुछ न पाया जिस घड़ी।
थे दुखी इस दुःखसे तुम माता भी घबराने लगी ॥६॥
दुखित बाणी दूर से मैं आते २ सुन लई।
कर सकी ना सहन मेरी काया कुम्हलाने लगी ॥ ७ ॥
सो गया सुन्दर विचारा भूख का मारा थका।
वास्ते अतिथि के रोटी चम्पा रखवाने लगी ॥ ८ ॥

"चन्द्र" हो परिवास जिस राणाका ऐसा धन्य है।
शत्रुओं के हाथ उसकी पाग क्यों जाने लगी ॥ ६ ॥

दोहा-राणा ने जब सुन लिया, आद्योपान्त सब हाल।
नयनन आंसू प्रेम के, भर आये तत्काल ॥

❋ कवित्त ❋

पुत्र होते आज कल के कहते यूँ पुकार के,
हमतो करें मौज चाहे पगड़ी बिके आपकी।
हम तो मरें भूखे और अतिथि को भोजन दें,
क्यों जी कोई कौड़ी हमपे चहिये उसके बापकी।
राणा के परिवार को देखो तो निहार नयन,
सीमा नहीं सकल जगमें जिसके महा तापकी।
अतिथि सत्कार परोपकार में नौछावर है,
"चन्द्र" यूं ही आजतक है जय २ प्रताप की ॥

❋ कवित्त ❋

उदय से अस्त लौ देखलो पसार आंख,
ऐसा कोई उदाहरण पाओ संसार में।
भिक्षुक सो मांगे अन्न गाली कु वाक्य मिले,
प्रेम दया उपजे किसी विरले उदार में ॥
राणा प्रताप जैसे वीर और योधा बली,

कुटिया बनाय पड़े जाके उजार में ।
प्राणों से प्यारे बालकाओं से ग्रास छीन,
भेंट प्रेम सहित किये अतिथि सत्कार में ॥
दोहा–रोटी की चिन्ता मिटी, सोच हुआ एक और ।
पाकर भोजन अल्प यह, क्षुधा बुझे किस तौर ॥
आस विचार आधीन हो, धर ईश्वर का ध्यान ।
प्रार्थना करने लगा, रखलो मेरा मान ॥

भजन नं० ८० ।

टेक–तुमको लजके कहां ईशजाऊं दुखड़ा अपना किसे मैं सुनाऊं ।
मेरे घरमें हैं केवल द्वै रोटी, हाय वह भी तो है छोटी २
क्या मैं अतिथि को भोजन जिमाऊं । दुखड़ा० ॥ १ ॥
बप्पा रावल का कुल आज हाय, घड़ी परमें रस नलको जाय
हाय कैसे इसे मैं बचाऊं । दुखड़ा० ॥ २ ॥
अतिथि द्वारे पे अपने जो आया, उसने करने भोजन न पाया
क्यों न दुनिया में पापी कहाऊं । दुखड़ा० ॥ ३ ॥
"चन्द्र" चिन्ता से चित्त चपल है, ताप प्रताप ऊपर प्रबल है
मृत्यु आवे तो छाती लगाऊं । दुखड़ा० ॥ ४ ॥
दोहा–चम्पावती कहने लगी क्यों हो पिता उदास ।
यह लो बाकी और भी, दो पैसे हैं पास ॥

भजन नं० ८१ ।

टेक–मत पिता जी तुम घबराओ, अब जाकर आटा लाओ ।
नहीं पलक्षण देर लगाऊं, मैं रोटी अभी बनाऊं जो अतिथि
को आप जिमाओ जी ॥ अव० ॥ १ ॥

भोजन में इतना अन्न, हो जायगा वह प्रसन्न । जी चिन्ता
मन से बिसराओ ॥ अब० ॥ २ ॥

है दीनों का क्षुद्र भोजन, भर दीन नीर से लोचन जी । यों
अतिथि को समझाओ ॥ अउ० ॥ ३ ॥

जो उनके नामके लेवा, यो करो अतिथि की सेवा जी ॥ कह
'चन्द्र" जो आर्य कहाओ ॥ अब० ॥ ४ ॥

दोहा–राणा निकट के ग्राम में. आटा लने जाय ।
चम्पा ने शुद्ध ठांव में. आसन दिया बिछाय ॥

सो०–राणा गये सिधार आटा लेने को कहीं ।
अतिथि आया द्वार, बाबा भोजन दीजिये ॥
चम्पा नयन उठाय, अतिथि देखा द्वार ।
आसन दिया बिठाय, भोजन लाती हूं अभी ॥

दोहा हे पुत्री तुम कौन हो, मोय देउ बतलाय ।
कन्या हूं प्रताप की, चम्पा कही सुनाय ॥

सो०–अभी निकट के ग्राम कार्यवश राणा गये ।
शीघ्रतया सुतराम, आते होंगे अतिथि वर ॥

दोहा-प्रेम सहित चम्पावती, चटनी रोटी लाय ।
शीतल जल आगे धरा, अतिथि रही जिमाय ॥

भजन नं० ८२ ।

टेक-मुझे आती है लाज, भोजन तुच्छ धर आगे ॥
दुर्भाग्योदय हो आया, उत्तम भोजन नहीं पाया ॥
गिरा है शिर से ताज ॥ भो० ॥ १ ॥

मन कथनका यह प्रयोजन, नहीं अच्छा लगेगा भोजन।
क्लेश पाओगे आज ॥ भो० ॥ २ ॥
मैं कहती हूं शर्मा के, जैसा था रक्खा लाके ।
जीम लीजो महाराज ॥ भो० ॥ ३ ॥
चलबसी "चन्द्र" चतुराई सब सेवकन की सेवकाई ।
नष्ट हो गई है आज ॥ भो० ॥ ४ ॥

सो०-बोले तब हर्षाय, अतिथि भोजन पायके ।
मत पुत्री शर्माय, भोजन है सुन्दर अधिक ॥

वार्ता-अतिथि ने भोजन पाकर जल पिया और डकार ली चम्पावती प्रसन्न हो गई कि अतिथि का पेट भर गया. अतिथि ने कहा पुत्री तेरा भला हो अब मैं जाता हूं फिर सायंकाल तेरे पिता से मिलने आऊंगा अतिथि चला गया चमावती यह हर्ष समाचार माता को सुनाने झोंपड़ी में गई परन्तु भूखसे इतनी दुर्बल होगई थी कि चक्कर आगया और गिर गई कुछ समय

पश्चात् राणा आये और अतिथि का प्रसन्न होकर जाना सुनकर हर्षाये और फिर कुछ विचार पश्चात् अकबर बादशाह की पत्री रानी को सुनाने लगे।

दोहा–क्या उत्तर दूं मैं उसे, बोलो वचन सम्हार।
मित्रता करने के लिये, है अकबर तैयार॥
बार बार राणा कहे, सुन लो चित्त लगाय।
अकबर की पत्री तुम्हें सारी देऊं सुनाय॥

अकबर का पत्र।

भजन नं० ८३।

टेक अब करो मित्रता पूर्ण, प्रेम से मिल जाओ राणा॥
स्वाधीनता लूं नहीं तेरी, आधीनता मत करो मेरी।
पै करले प्रीति घनेरी, यही मन मेरा है माना। प्रेम० ॥१॥
लख दीन दशा मुझकूं, बच्चों पे दया मैं लाऊं।
छाती से उन्हें लगाऊं, पड़ेगा फिर नहीं कुम्हलाना। प्रे०।२
स्वीकार नहीं जो आना, किसी और जगह चले जाना।
मैं छोड़ा तुम्हें सताना, यही था केवल बतलाना। प्रे ॥३॥
राणा ने कहा सुन रानी अकबर है दया निधानी।
झट जागी चम्पा सयानी, 'चन्द्र' कवि गाता है गाना। प्रे०।४
दोहा–अस विचार चम्पा उठी, राणा करता पाप।
क्षुद्र बुद्धि कुछ कहत हूं सुनो पिता प्रताप॥

दादरा नं० ८४ ।

पिता अकबर से मिल के खता खाओगे ।

अकबर से प्रेम आज बढ़ाने में जो मगन ॥
कल उसका ठाठ देख के, मनमें लगे लगन ।
वह जो देगा तुम्हें तुम भी ललचाओगे । पिता० ॥ १ ॥
परसों ही को आधीनता शिर अपने धरोगे ।
स्वाधीनता का नाश भली भांति करोगे ॥
बप्पा रावल के कुल को लजाओगे । पिता० ॥ २ ॥
शिरताज बप्पा रावल के कुल की आन है ।
यह ठाठ उसके सामने तृणके समान है ॥
मुँह क्या उनको भलोजाके दिखलाओगे । पिता० ॥ ३ ॥
उसने जो लिखा बच्चों पे आवे मुझे दया ।
दुर्बल नहीं हम बज्र हैं लोहे का है हिया ॥
"चन्द्र" चम्पा चितावे कि पछताओगे । पिता० ॥ ४ ॥

दोहा–क्षुधा पिपास से दुखिन थी चम्पा बलहीन ।
बिस्तर पे झट गिर पड़ी, दुर्बल अबला दीन ॥

वार्ता–रानी ने चम्पावती के मस्तक पर हाथ रख कर देखा कि इसको ताप तो नहीं, चम्पावती ने कहा नहीं माता जी होश में हूं पिता जी तुम अकबर की बात कदाचित् न मानो ।

दोहा–पुत्री के सुनकर बचन, राणा को हुआ बोध ।
तेरी सम्मती से मुझे, किञ्चित नही बिरोध ॥

भजन नं० ८५ ।

टेक–देह में जबलों प्राण, अनुचित नहीं करूंगा ।
भुजोंमें बल है अभी तो मेरे शत्रु को मार गिराऊं ।
बप्पा रावल के कुलको मैं बट्टा नहीं लगाऊं । देह० ॥१॥
उज्ज्वल २ पे हो घाव चूर चूर हो जाऊं ।
जन्मभूमि चित्तौड़की रक्षा करके प्राण गवाऊं । देह०।२।
तुझ जैसी सन्तान कृपासे ईश्वर जबकी पाऊं ।
एकतो क्याहों लाखों अकबर किञ्चितभय नहीं खाऊं दे०।३।
चम्पावती ने कहा सत्य है चेतो 'चन्द्र" चिताऊं ।
बारह से अकबर भी बोला मैं बलिहारी जाऊं । दे० ।४।

वार्ता–जब राणा कह चुका तो चम्पावती ने कहा हां यह ही सत्य है राणा ने चौंक कर पूछा कि कौन है तो अकबर झोंपड़ी के अन्दर गया तो चम्पा ने पहिचान के कहा कि यह तो अतिथि हैं

अकबर ने राणा से कहा—

ग़ज़ल नं० ८६ ।

तुम्हें धन्यवाद है राणा कि जन्म स्थान उत्तम है ।
वहां का अन्न है उत्तम तहां जलपान उत्तम है ॥ १ ॥
कुलोंमें कुल है कुलभूषण शिरोमणी बप्पा रावल का ।

विधि वेदोक्त से फिर उसमें गर्भाधान उत्तम है ॥ २ ॥
रगों में रक्त वीरों का भुजाओं में है क्षत्रीपन ।
है तर्कश कांधे कर बरछी कमर कृपाम उत्तम है ॥ ३ ॥
हृदय में प्रेम है इन बालकों के मातृभूमि का ।
मरे हैं आबरू पे जो सकल सन्तान उत्तम है ॥ ४ ॥
सहस्रों क्लेशों से ग्रस्त हो न घबड़ाये तनक मन में ।
अचल निज वाक्यके ऊपर तुम्हारी आन उत्तम है ।५।
कथन कर इतना अकबर दोनों घुटने टेक कर बैठा ।
तुम्हारा करता हूं सन्मान मम कल्याण उत्तम है ॥ ६ ॥
कथनकर 'चन्द्र' समझावे बहा अकबरके लोचनजल ।
सुनो एकाग्र मन होकर कि यह व्याख्यान उत्तम है ॥७॥

इसलाम की सच्ची तवारीख़

अब तो सोचो भारत वासी, तन जन धन खोकर भाई ।
मुसलमानों ने वास्तव कुछ २ यही बहाना कर दीना ॥
धर्म ही जै हो अधर्म सै हो, मसला दिल में धरलीना ।
जुल्म किये भारत पर बेहद, नफ़रत से कुछ कर कीना ॥
हर एक तरह की दी तकलीफें. जुल्म जबर कर धन छीना ।
दया न की क्या नथा दयानिध, हम पर समझें चितलाई ॥

अब तो सोचो भारत पुत्रो, तन जन धन खोकर भाई।
कासिम छः हजार सेना से, सिन्धू राज पर चढ़ आता॥
दाहर राजा सेना लेकर, उस से लड़ने को आया।
राजा मारा गया राज में, लाखों का सिर कटवाया
कत्ल आम करवा कर वो, दो राजकुमार पकड़ लाया।
उसी वक्त उन दोनों को, बगदाद रवाना करवाई॥
अब तो छोड़ो मूर्ति पूजन, इसी सबब आफत आई।
बेवा रानी राजा की, कासिमसे फिर बड़ी लड़ी॥
घिरी बहुत दिनतक रही किला में, जबकि रसदमें कमी पड़ी
सब बालक बृद्ध सब रानी, आग लगा कर जली खड़ी॥
मर्दों ने फिर किया सामना जान रोक कर बड़ी कड़ी।
मारे सारे गये बच्चों को, गुलाम बान्दी बन वाई॥

अब तो सोचो०

फिर आया महमूद ग़ज़नी, बारह हमले किये यहां।
मन्दिर तोड़ मूर्ति तोड़ी, काटे लूटे मिले जहां॥
मुल्क किया बैरान लश्करां, कत्ल किये ये गिने कहां।
लाखो हो कर गिरफ्तार, कत्ल में सारे गये वहां॥
दस आना तक बेचे न बिके, मसजिद दीने गड़ वाई।

अब तो सोचो०।

इस ने देवल के मन्दिर तोड़, गिरा किला भी फतैह किया।
पहिले ख्वाहिशकी सब ब्राह्मण, मुसलमान हों तै यहकिया॥

पण्डों ने इन्कर किया जब, क़तलाम यह कत्ल किया ।
उमर अठारह से कम का हो, गुलाम बांदी हो तै किया ॥
गुलाम बांदी सब को बना के, बग़दाद को दिये भिजवाई ॥

अब ता सोचो० ।

मूर्तियों के टुकड़ों से इन, पाय दान जा बन वाये ।
जहां मुसलमां उतारें जूता, मसजिद में जाय लगवाये ॥
जिन्हें देवता सुमरे थे हम, वो वे इज्जत कर वाये ।
जिन से दिल दुखे हिन्दुन का, मन्दिरों में वह धरवाये ॥
पण्डन के अन गिन्तिन बालक, ग़जनी को दिये भिजवाई ॥

अब तो सोचो० ॥

बीस रोज तक मथुरा लूटी, काम नीच से नीच किए ।
कर्म दुखाने वाला दिल का, मन्दिरों बीचों बीच किया ॥
राजा ने फिर तुरत आपना हाथों सुपुर्द नीच किया ।
फिर अपने हाथों आपको साथ मौत के खींच किया ॥
एक मन्दिर से नगर कोट के सात लाख मोहरें पाई ।

अब तो सोचो० ॥

नौ मन सोना दो हज़ार मन चांदी ये लूटों की छीनी ।
थे मन बीस जवाहर चीनें, गिनती क्या किसने छीनी ॥
असंख्य धन महमूद ले गया लूट करा जिसने दीनी ।
पण्डों को मारा बे इज्जत, करी बुरी जो मन आई ॥

राजा महावन के संग, महमूद सुलह करके छली करी ।
राजा ने रनवास नाश कर, फिर अपनी खुदकशी करी ॥
डूबे हज़ाराहां जमुना में, स्त्री जल जी बली करी ।
लूटमार नाराज किया सब, मुल्क अजमेर ने भली करी ॥
पण्डों को फिर मारा अरु उन्हें घर से लिये पकड़ वाई ॥

अब तो सोचो० ।

कुतुबुद्दीन ऐवक ने मेरठ में, लूटो मारो हुकम दिया ।
बचा वही जो हुआ मुसलमां, बाकी सब को काट दिया ॥
सिर्फ एक कालिंजर का सुन, वा का धड़का बहुत हिया ।
एक सौ तेरह मन्दिर गिराये, सहस्रों का फिर खून किया ॥
पुजारियों के संग कहूं क्या, मसजिद वहां पर बनवाई ॥

अब तो सोचो० ॥

बिहार में एक लाख ब्राह्मण, इन ने कत्ल करा डाले ।
पुस्तकालय थे यही पुराने, आग दिलाय जला डाले ॥
औरों की क्या शुमार जितने, कत्ल करा करा मारे ।
हजाराहां लौंडी गुलाम कर, कौन सके बतला सारे ॥
बिहार सारी जो मन मनी, उसी तरह से लुटवाई ॥

अब तो सोचो० ॥

गौरी मुहम्मद ऐसा ही था, अति भारी जालिम सफाक ।
जब अजमेर करी इन गारत, बाशिन्दे मारे बे बाग ॥
सब के कच्चे बच्चे लौंडी, गुलाम कर डाले नापाक ।

भारत प्रजा गऊ सी पाकर, मारी काटी बन कज्जाक ॥
बीस हज़ार दुकान तबोली, थीं कन्नौज उजड़वाई ॥
अब तो सोचो० ॥

फीरोज ने दक्षिण लूटा, जब बे शुमार मूरत लाया ।
फिकवा दीं सब किले के दर पर, मुद्दत तक ये करवाया ॥
हजार हिन्दू के खूनों से, नित्त-प्रति इन को न्हलवाया ।
मुल्क मालवा ऊजड़ कर के, बुरी तरह से लुटवाया ॥
रोटी से मुहताज कर दिये, अन्न बिना अति दुख पाया ॥
अब तो सोचो० ॥

इसने जब लिया लूट काङ्गड़ा, पण्डे पकड़ लिये सारे ।
तेरह रजार पण्डों के मुख में गाय गोश्त से भर मारे ॥
कत्ल आम कर मूर्ति तोड़ीं, मन्दिर दीने तोड़ भारे ।
गाय गोश्त से लपेट मूरत, ब्राह्मणों के गल में डारे ॥
रानामल की बाई इसके, बापने जब छिनवाई ॥
अब तो सोचो० ॥

अलाउद्दीन खिलजी ने जा खम्भात गिर्द कत्ल आम किया ।
हजारहां पुरुष स्त्री से, बान्दी गुलाम का काम लिया ॥
बीस सहस्र खूबसूरत औरत, मुल्क अपने भिजवाय दिया ।
कुत्ता बिल्ली तक नहीं छोड़े, तबाह दौलताबाद किया ॥
अन्धों तक घोड़ों की पूंछ से, बंधवा कर दिये खिंचवाई ।

अब तो सोचो० ॥

इसके अहद में हुक्म था हिन्दू, फ़क़त एक रखे कपड़ा ।
खर्च महीने छै से जियादा, रक्खे गल्ला जावे पकड़ा ॥
बाकी सब है महल ईमां की, काफिर कभी न हो तगड़ा ।
हिन्दू का धन मुसलमान का, कानून है क्या झगड़ा ॥
देवल मिले राजपूतों से, कई लड़ाई करवाई ॥
अब तो सोचो० ॥

पङ्गुन को कर तबाह इसीने. मिला खाक में खाक किया ।
इसीने मारी रानी पद्मनी, नदी चित्तौड़ का नाश किया ॥
खानदार बाबर के सब में, एक कुमर ही जान जिया ।
चित्तौड़गढ़ के तीन खून में, एक खून सुत का न दिया ॥
पद्मावत संग सहस्रों अबला, जलीं आग खुद लगवाई ।
अब तो सोचो० ॥

इसके डर से जैसलमेरी, अबला आठ हज़ार जलीं ।
और बिड़ेड़ा में भी चौंतीस, हज़ार ने की आप बली ॥
इसके राज्य में इज्जत के में, राजदुलारी और महली ।
शर्म हया से आर्य्य पुत्री, समझी अपनी मृत्यु भली ॥
सोचो समझो आर्य्य पुत्रो, क्यों हुई मलेछों मत भाई ।
अउ तो सोचो० ॥

इसी ज़ालिम नालायक ने, लूटी देवगढ़ धोके में ।
बाशिन्दों से धन लेने को, दिया बड़ा दुःख ऐके में ॥

रंनथंभौर भी इसी तरह से, लिया वर्ष के धोके में ।
तमाम खान्दान राजा का, करा कत्ल बे मौके में ॥
खाल मुबारिक ने नृप जिन्दा, देवगढ़ की लिखी चलाई ॥
अब तो सोचो० ॥

तुग़लक ने दिल्ली ऊजर कर, जाय देवगढ़ बसवाया ।
एक अन्धा फालिज का मारा, गज की पूंछ से बंधवाया ॥
वाहियात खर्चों से खजाना, जब अपना खाली पाया ।
प्रजा काश्तकारों के ऊपर, लगान जियादो बंधवाया ॥
खेत छोड़ सब चले गये, जङ्गल माही बसे जाई ॥
अब तो सोचो० ॥

जब तुग़लक़ ने सुनी, रिआया जङ्गल में को भाग गई ।
फिर तो इसके दिलमें जिस का सबब यही था आग भई ॥
हुक्म दिया घेरो इन सब को, शिकार खेलो छाग मई ।
बहुत बड़े हिस्से को घेरा, बन्दूकन पर दाग दई ॥
कई दफै ऐसा शिकार कर, अपनी रिआया मरवाई ॥
अब तो सोचो० ॥

तैमूर लिङ्ग यहां पर आना, क़हर अगमानी ही था ।
क़त्ल कराना हिन्दू जाति का, इसका मन मानी ही था ॥
भारत के सुत अगणित जिसने, किये नाशवानी ही था ।
खूंख़ार बेदरदा ज़ालिम, काबिल लासानी ही था ॥
तिलम्ब वासी बुरी तरह से, दिये इन्हें सब मरवाई ॥
अब तो सोचो० ॥

पांच सहस्र दयालपुर के, पण्डा इन मरवा डारे ।
हज़ार चौदह जाय अजुध्या, पूजक कुल करवा सारे ॥
बीस हज़ार बनारस के भी, मूर्ति पूजक जा मारे ।
सब के जितने कच्चे बच्चे, मर्द स्त्री वाला वारे ॥
गुलाम लौंडी बना बना कर, लश्कर में दिये बटवाई ।
अब तो सोचो० ॥

गया शहर भटनेर में ज़ालिम, तीस हजार हिन्दू पकरे ।
मकान में कर क़ैद आग दी, बन्द कर दिये द्वार दरे ॥
डेढ़ लाख तुर्की सिपह को, दिया हुक्म ता रोज करे ।
तईनात कर दिया मुल्क में काटें लूटें धार धरें ॥
रोज़ सुबह जो पकड़े आते, उनको देता मरवाई ।
अब तो सोचो० ॥

तैमूरलंग कहता था मेरा, दो प्रकार से है आना ।
मुसलमान कुल हिन्द करूं, और करूं कत्ल मैं मनमाना ॥
माल लूट कर दोयम इनका, मुसलमान हों धनवाना ।
वरना ये तकलीफ़ गवारा, क्यों करता आना जाना ॥
हुक्म ख़लीफ़ा कत्ल करोया करो मुसलमां सब जाई ॥
अब तो सोचो० ॥

फिर बहुत सी जगह हिन्द में, जहां गया कत्ल आम किया ।
लूटी दिल्ली जब कि फ़ौजन ने, काटा शहर तमाम किया ॥

कुशतों के कुशतों से लागे, हुक्म खुदा कुए अंजाम किया ।
राह रुकी मुर्दों से सहरी, बेहद सारा काम किया ॥
दना दन दिल्ली खोदी, आग दिलाकर फुकवाई ॥
अब तो सोचो० ॥

एक लाख क़ैदी दिल्ली के, पन्द्रह सिन से ऊपर के ।
मरवा कर फिर जश्न कराया. लाखों भारत भूपर के ॥
शुक्र खुदा का किया अदा इन. लाशों के लख ढू करके ।
शरीफ ज़ादी जादे अनगिन, बने गुलाम इस शूकर के ॥
इसका क़त्ल- वयां से बाहर, ख्याल देख कुछ जतलाई ॥
अब तो सोचो० ॥

दिल्ली में फ़क्र से कहा गो, लाखों हिन्दू मार चुका ।
खुदा रसूले हुक्म फूल कर, मैं अशरत में रहा रुका ॥
या तो हिन्द को करूं मुसलमां, नहीं करूं नाबूद फुका ।
छाड़ ऐश अशरत को फिर भी, मारकाट में रहूं भुका ॥
रहा महीनों तक भारत में, थे ये अति ही दुखदाई ।
अब तो सोचो० ॥

बाबर ने मेवाड़ उजाड़ी, वहां सहस्रों नाश किये ।
चिरी चन्देरी कौंने सारी, बाल स्त्री बे शांस किये ॥
हमला किया फ़ौज बाबर पर, मरे वीरता पास किये ।
इसने ही लाहौर जलाई, जुल्म बहुत से खास किये ॥

पकड़ जकड़ दी साल पुरा के, गर्दन सब की झरवाई ॥
अब तो सोचो० ॥

सदियां तक जब लूट मार पुनि, शुरु कत्ल क़तलाम किये ।
चिन्ह मज़हबी पाक इल्म के, इसके बीच तमाम हुये ॥
ज़ालिम बहशी बुरी कौम के, दर्द नाक ये काम हुए ।
शरीफ राजकुमार लड़ मरे, कुछ न नेक अंजाम हुये ॥
बहादुरी से दुशमन मारे, कर्म फलों से न बसाई ॥
अब तो सोचो० ॥

राजिस्तानी सारी भूमि, स्वं शूरों से लाल हुई ।
कुमक मुसलमानों को पहुंची थी पीछे नित काल नई ॥
एक खान्दान के पीछे फ़िर, दूजा आता हाल दई ।
उसी कौम ज़ालिम जाबर ने, करकी खसलत ख्याल मई ॥
इन दुष्टों ने मिलकर छत्री, पृथक् पृथक् दिये निबटाई ॥
अब तो सोचो० ॥

दुर्गावती की वीरता

भजन नं० ८८ ।

जब दुर्गावती रण में निकली हाथों में थी तलवारें दो ॥
धरती कांपी आकाश हिला, जब हिलने लगी तलवारें दो ।१।

गङ्गा की दीवार लगी तपने सरयू का पानी उबल पड़ा।
सूरज की आंखें चुँधियाई, जब चमक उठी तलवारें दो ॥२॥
वायु भी डर से सहम गई, आकाश का रंग भी जर्द हुआ।
उन गोरे २ हाथों में जब तड़फ उठी तलवारें दो ॥ ३ ॥
गुस्से से चैहरा ताम्बा था आंखों से शरारे उठते थे।
घौड़े की बागें दांतों में हाथों में थीं तलवारें दो ॥ ४ ॥
लो फिर गई एक शेरनी हैं हर उज्व बदन का फड़क उठा।
वो चोट पड़ी नक्कारे पर बो निकल पड़ो तलवारें दो ॥ ५ ॥
जिस तरफ गई बिजलोकी तरह इकपरे का मंजर बांधदिया
कट २ के गई दुशमन की सफें जिस तरफ गई तलवारें दो ।६।
हर हाथ पयामें मौत बना हर बार बहाना मौत का था।
सिर धड़ से कटे गाजर की तरह जब कौंदगई तलवारेंदो ।७।
लाशों से भूमि दबने लगी, और रक्त के दरिया बह निकले।
उस तरफ हाहाकार मची जिस तरफ चली तलवारेंदो ॥८॥
वो फंस गई हैं नरगे में वो एक घिरी हैं बीसों में।
वो निकल गई बिजली की तरह सौ से लड़ी तलवारें दो।९।
दुशमन के छक्के छूट गये सब कौम म्लेछी टूट गये।
पांव सिर पर रख भाग उठे जब रुक न सकी तलवारें दो।१०
दुर्गा भारत की शान की थी तू हिन्दुओंकी पतथी मानथी तू
दुशमनको याद अभी तक हैं तेरी खूँनी तलवारें दो ॥ ११ ॥

हो जायेगा नं० ८६।

गर न कोई गुल खिला वीरां चमन हो जायेगा।
पाक दामन खून में काला कफ़न हो जायेगा॥
हिन्दके गुलशन को सींचा गर जो अपने खून से।
ग़म नहीं कुछ जो मेरा छन्नी बदन हो जायेगा॥
शान इङ्गलिस्तान क़ायम जुल्म से होगी नहीं।
लाल छींटों से तेरा मैला बदन हो जायेगा॥
हिन्द के पौदे क़तल जो जुल्म के ख़ञ्जर से हों।
चन्द दिन में फिर वही बागे अदन हो जायेगा॥
आबरू आख़िर मिलेगी इस ज़माने में उसे।
केसरी बाने में जो शैदा वतन हो जायेगा॥
जो हुये 'प्रेमी" फ़िदा अपने वतन की आनपर।
शक नहीं इस कशमकश में फिर अमन होजायेगा॥

मेरा धर्म नं० ९०।

ऐ मेरी जान भरत तेरे लिये ये सर हो।
तेरे लिये हो ज़र हो तेरे लिये जिगर हो॥
हिचकूँ न तेरी सेवासे मेरी जान भारत।
गर्दन पै मेरी रक्खो शमशेर या तबर हो॥
ग़म जानके लिये भी मुझको कभी न होगा।
भारत तेरे लिये ही आतीये काम गर हो॥

क़िस्मतका मेरी अख्तर चमके फिर आसमां पर
सेवामें तेरी माता गर ज़िन्दगी बसर हो ॥
भारतमें ही सदा मैं पैदा हूं और मरूं मैं।
ईश्वर न कुछ हो मनमें यह आरज़ू मगरहो ॥
गर देश ही की सेवा हो प्यारा धर्म मेरा।
परमात्माकी तो फिर मेरी तरफ़ नज़र हो ॥
जीवन सुफल तभी बस समझेगा साधु अपना।
सेवा में तेरी माता सर मेरा गर नज़र हो ॥

उपदेश नं० ६१।

करो कुछ देश हित भ्राता अगर आये हो दुनियां में।
निछावर देशपर सिर कर निशां रखनेको दुनियां में ॥
भलाई कर चलो सब से तुम्हारा भी भला होगा।
भलाई के लिये सर दे दिये लाखों ने दुनिया में ॥
अगर इच्छा तुम्हारी है तरक्की हिन्द कर जाये।
हटाओ मत क़दम पीछे बढ़ाये जाओ दुनिया में ॥
ज़रूरत है कि हों क़ुरबानियां भारत पै लाखों की।
फ़क़ीरी धारलो भारत का यश रखने को दुनिया में ॥
जो करना चाहो करलो आज फिर कलका भरोसा क्या।
समय गुज़रा कहीं आता सुना हमने न दुनिया में ॥

तोड़ो दासता की बेड़ियां स्वाधीनता ले लो ।
वतन का राग घर घर को सुनादो सारी दुनिया में ॥

हिन्दोस्तां हमारा नं० ६२

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा ।
हम बुलबुलें हैं उसकी वो गुलिस्तां हमारा ॥

गुरबतमें हों अगर हम रहता है दिल वतन में ।
समझो हमें वहीं पर दिल हो जहां हमारा ॥

परबत वह सबसे ऊंचा हमसाया आस्मां का ।
वो सन्तरी हमारा वो पासबां हमारा ॥

गोदी में खेलती हैं जिसके हज़ारों नदियां ।
गुलशन है जिनके दमसे रश्के जिनां हमारा ॥

ऐ आबेरोदे गङ्गा वह दिन है याद मुझको ।
उतरा तेरे किनारे जब काफ़ला हमारा ॥

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना ।
हिन्दी है हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा ॥

यूनान, मिश्र, रोमा सब मिट गये जहां से ।
अब तक मगर है बाकी नामो निशां हमारा ॥

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़मां हमारा ॥

"इक़बाल" कोई महरम अपना नहीं जहां में ।
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां हमारा ॥

प्रतिज्ञा नं० ९३ ।

संसार को देंगे दिखा हम देश पर कुरबान हैं ।
परवा नहीं कुछ भी हमें हम देश पर कुरबान हैं ॥
बलिदान होना मैंने सिखा है पतङ्गों से अहो !
चिन्ता नहीं होवें भसम हम देश पर कुरबान हैं ॥
लड़ना पड़े यदि काल से भी देश भारत के लिये ।
जीत लेंगे उसको भी हम देश पर कुरबान हैं ॥
लाखों सहें हम आपदा पर मुख न मोड़ेंगे कभी ।
पिस पिसके चटनी होयेंगे हम देश पर कुरबान हैं ॥
मातृ भूमि के लिये यदि जेल में जाना पड़े ।
साबित वहां भी हम करेंगे देश पर कुरबान हैं ॥
तोपों की तीक्ष्ण बाढ़से भय खा नहीं सकते कभी !
हम रोक देंगे सीना अपना देश पर कुरबान हैं ॥
स्वराज्य के हम यज्ञ में निर्भीक कूदेंगे प्रभो !
हंसते हंसते हम जलेंगे देश पर कुरबान हैं ॥

मर जायेंगे नं० ९४ ।

देश हित पैदा हुए हैं देश पर मर जायेंगे ।
मरते मरते देश को जिन्दा मगर कर जायेंगे ॥
हुक्को पीसेगा फलक चक्कीमें अपनी कब तलक ।
खाक बनकर आंखमें उसकी बसर कर जायेंगे ॥

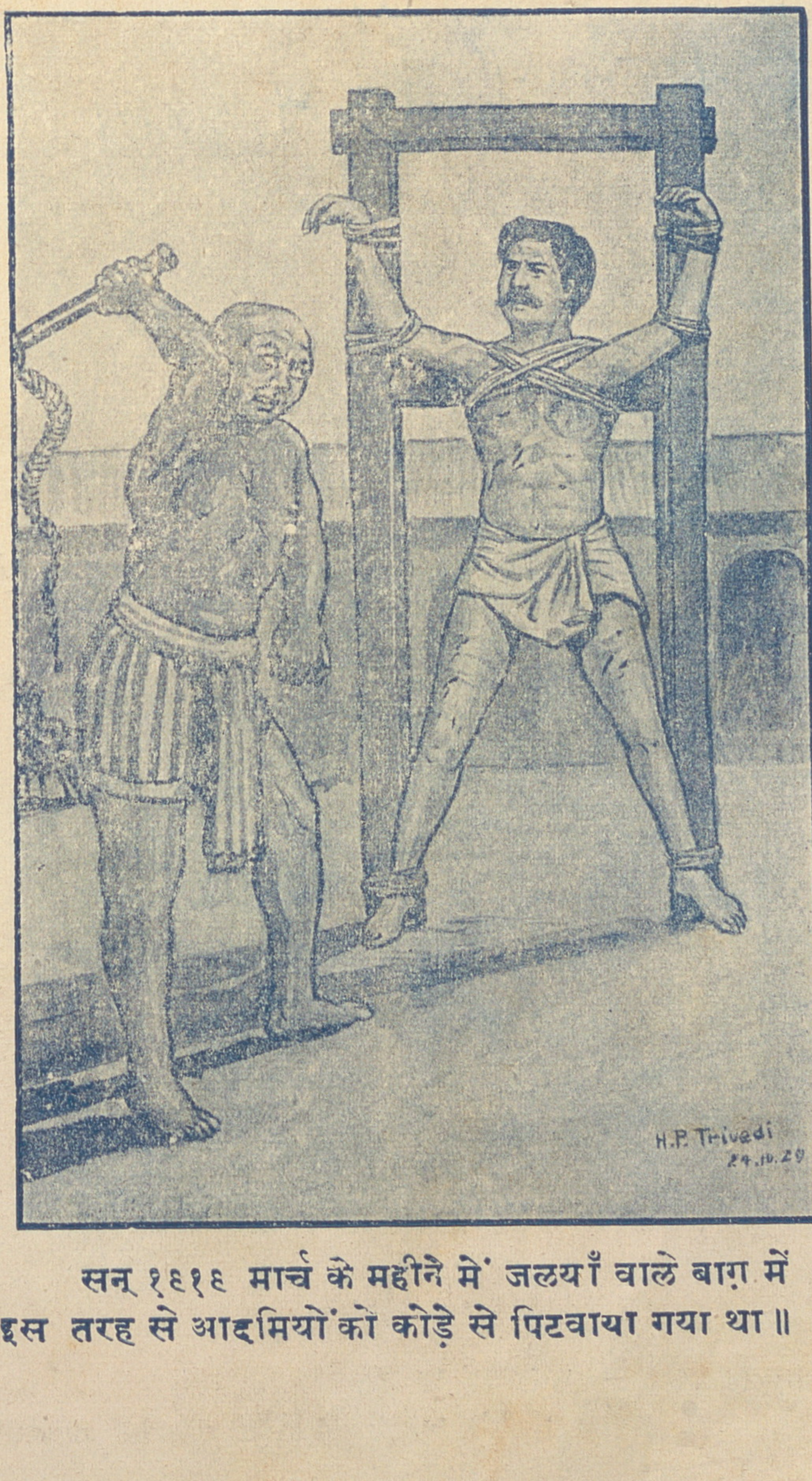

सन् १९१९ मार्च के महीने में जलयाँ वाले बाग़ में
इस तरह से आदमियों को कोड़े से पिटवाया गया था ॥

कर बही बर्गे खिज़ां को बादे सर सर दूर क्यों।
पेशवाए फ़स्ले गुल हैं खुद समर कर जायेंगे॥
ख़ाक में हम को मिलाने का तमाशा देखना।
तुख्म रेज़ी से नये पैदा शजर कर जायेंगे॥
नौ नौ आंसू जो रुलाते हैं हमें उनके लिये।
अश्क के सैलाब से बरपा हशर कर जायेंगे॥
गर्दिशे गरदाब में डूबे तो कुछ परवा नहीं।
बहरे हस्ती में नई पैदा लहर कर जायेंगे॥
क्या कुचलते हैं समझ कर वह हमें बर्गे हिना।
अपने खूँ से हाथ उनके तर बतर कर जायेंगे॥
नक़्शे पा है क्या मिटाता तू हमें पंरे फ़लक।
रहबरी का काम देंगे जो गुज़र कर जायेंगे॥

आरजू नं० ६५।

जगदीश यह विनय है जब प्राण तनसे निकले,
प्रिय धर्म देश रटते यह प्राण तन से निकले॥
भारत वसुन्धरा पर, सुख शान्ति संयुता पर।
शस्याव श्यामला पर यह प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तनसे निकले॥
भारत का चित्र पट हो, युग नेत्र के निकट हो।
श्री जाह्नवी का तट हो तब प्राण तनसे निकले॥

"हिन्दोस्तां मेरा" नं० ९६

पसे मुर्दन भी होगा हश्र में यों ही बयां मेरा।
मैं इस भारत की मिट्टी हूं, है यह हिन्दोस्तां मेरा॥
मैं इस भारतके इक उजड़े हुए खण्डहरका जर्रा हूं।
यही मेरा पता है, है यही नामो निशां मेरा॥
खिज़ां के हाथ से मुरझाये जिस गुल्शनके हैं पौदे।
मैं उस गुल्सनकी बुलबुल हूं वही है गुलिस्तां मेरा॥
कभी आबाद यह घर था किसी गुज़रे ज़माने में।
हुआ क्या गर बदस्ते ग़ैर उजड़ा ख़ानुमां मेरा॥
अगर यह प्राण तेरे वास्ते जायें न ऐ भारत।
तो इस हस्ती के तख़्ते से मिटा नामो निशां मेरा॥
मैं तेरा हूं सदा तेरा रहूंगा बावफ़ा ख़ादिम।
तुही है गुलिस्तां मेरा, तुही जन्नत निशां मेरा॥
मेरे सीने में तेरे प्रेम की अग्नि भड़कती है।
निगाहों में मेरे भारत तुही है कुल जहां मेरा॥

जेल की तैय्यारी नं० ९७

घर बार छोड़ करके जावेंगे जेलख़ाना।
यह डर नहीं है मुझको पावेंगे जेलख़ाना॥
जिस जेल में महा प्रभु श्रीकृष्ण जन्म पाये।
मेरे लिये तो प्यारा मन्दिर है जेलख़ाना॥

कहते हैं लोग होती है जेल में फ़ज़ीहत।
गर वाक़ई में पूंछो जन्नत है जेलख़ाना॥
ये हथकड़ी औ बेड़ी हैं ज़ेवरात सुन्दर।
हुब्बे वतन पै करता कुरबान जेलख़ाना॥
गृह कार्य में अनेकों जंजाल दीख पड़ते।
चित्त शान्ति का सुसाधन है एक जेलख़ाना॥
दर दर बिपिन गुफा में धूनी रमायेंगे क्यों।
यदि मुक्ति मार्ग मैंने पाया तो जेलख़ाना॥

स्वतन्त्र होकर नं० ६८।

अधीन होकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर।

सरल को तज कर गरल का प्याला,
है भरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

पड़ी हों हाथों में हथकड़ी गर,
तो स्वर्गके सुखसे लाभ क्या है।

नरक के दुःख में निश्वास निश-दिन,
है करना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥

जो दास होकर मिलें भवन में,
सुस्वादु भोजन तो तुच्छ हैं वह।

सदैव उपवास करके बन-बन,

विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

मिले उपाधी या मान पदवी,
जो सेवा करके तो व्यर्थ है सब ।
घृणा व अपमान के गढ़े में,
उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

आह ! नं० ९९ ।

कब तक पियोगे प्याले, भारत के रहने वाले ।
अब आंख खोल देखो, हिन्दोस्तान वाले ॥
ग़ैरों ने तुमको लूटा, सदियों से तुमको मारा ।
क्यों बे ख़बर पड़े हो जग को जगा ने वाले ॥
कपड़ा रहा न तन पै, खाने को कुछ नहीं है ।
करते गदा गरी हो, शाहों के नाम वाले ॥
सुन्दर भवन कहां वे, रत्नों से जो जड़े थे ।
उनका पता नहीं है, भारी गुमान वाले ॥
सन्तान जो तुम्हारी, फिरती है मारी-मारी ।
करती है आहो जारी, भीषम के नाम वाले ॥
आपस की फूट भाई, हम पर यह रङ्ग लाई ।
तब ही तो मार खाई, ऊंचे निशान वाले ॥
धर्मात्मा वही हैं, करते जो देश—सेवा ।
बिनती यही है मेरी, भारी ईमान वाले ॥

नालए बुलबुल नं० १०० ।

देदे मुझे तू ज़ालिम मेरा यह आशियाना ।
आराम गाह मेरी मेरा बहिश्त ख़ाना ।
देकर मुझे भुलावा घर बार छीन कर तू,
उसको बना रहा है मेरा ही क़ैद ख़ाना ॥
उसके ही खाके टुकड़े बदख़्वाह बन गया तू,
मुफ़लिस समझके जिसमे दिलवाया आबोदाना
मेहमां बना तू जिसका जिसने पनाह पाई,
अब करदिया उसी को तूने है बे ठिकाना ॥
उसके ही बाग़ में तू उसके कटा के बच्चे.
मुसिफ़ भी बनके खुद ही तू कर चुका बहाना
दर्दे जिगर से लेकिन चीख़ूँगी जब मैं हर-दम,
गुलचीं सुनेगा मेरा पुरदर्द यह फ़िसाना ॥
सोज़े निहां की बिजली सर पर गिरेगी तेरे,
ज़ालिम तू मर मिटेगा बदलेगा यह ज़माना।
मुझको न इस तरह का तब कुछ मलाल होगा,
गुलज़ार फिर बनेगा अशरतका कारख़ाना ॥

विजय होगी नं० १०१ ।

उठो अब सत्य पर भाई विजय होगी विजय होगी ।
कटादो अपना सर भाई विजय होंगी विजय होगी ॥

अगर वह गन मशीनों की धमकियां तुमको देते हैं,
बढ़ादो बढ़के निज छाती विजय होगी विजय होगी ॥
अगर वह हथकड़ी बेड़ी दिखायें तो दिखाने दो।
करो कर्तव्य सुखदाई विजय होगी विजय होगी ॥
मेरे प्यारे शहीदो अब नहीं है काम देरी का।
दिखादो चाल रौताई विजय होगी विजय होगी ॥
अगर इस जङ्ग में चूके समझ लेना बुरा होगा।
न पिछड़ा देख कर खाई विजय हागी विजय हागी ॥
इधर है शेर गांधी जी उधर हैं शासकों का दल।
बना मोहन के अनुयायो विजय हागी विजय हागी ॥

भावना नं० १०२।

मादरे हिन्द की तसवीर हो सीने पै बनी।
बेड़ियां पैरों में हों और गले में कफ़नी ॥
आज से शबे वफ़ा का यही जौहर होगा।
फर्श कांटों का हमें फूलों का बिस्तर होगा ॥
फूल हो जायेगा छाती पै जो पत्थर होगा।
कैदखाना जिसे कहते हैं वही घर होगा ॥
सन्तरी देख कर उस जोश को शरमायेंगे।
गीत ज़ंजीर की झनकार पै हम गायेंगे ॥
दिल तड़पता है कि स्वराज्य का पैग़ाम मिले।

कल मिले, आज मिले, सुबह लिले, शाम मिले
हुक्म हाकिम है फ़रियाद ज़बानी रुक जाय।
पर यह मुमकिन नहीं यह जोश जवानी रुकजाय॥
हों ख़बरदार जिन्होंने यह अज़ीयत दी है।
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने करवट ली है॥

लहर नं० १०३।

सुना है तेज़ करते हैं दुबारा धार ख़ंजर की।
करेंगे आजमाइश का मुक़र्रर वह मेरे सर की॥
सबब पूछा तो यों बोले नहीं ज़ाहिर ख़ता कोई।
मगर कुछ दीख पड़ती है शरारत दिलके अन्दर की॥
उजाड़े घोंसले कितने चमन बरबाद कर डाले।
शरारत उनको नस नस में भरी है खूब बन्दर की॥
चलेंगी कब तलक देखें यह बन्दर घुड़कियां उनकी।
नचावेगी उन्हें भी एक दिन लकड़ी कलन्दर की॥
मेरे इन जिगर में आह में नाले में शेवन में।
नज़र आती है हरसू सूरते ज़ालिम सितमगर की॥
ख़मीदा करके गर्दन को कहा तेग़ाज़माई हो।
रह गई क़बज़ए क़ातिल में ख़ाली मूँठ ख़ंजर की॥

आज़ादी की दुआ नं० १०४

प्रभु हो मेहर की नज़रों से गर इरवाद तेरा हो।
तो यह उजड़ा भारत अहा! आबाद मेरा हो॥
हज़ारों साल से बे दर्द लोगों के हवाले है।
न यूं ग़ैरों के पंजे में वतन बरबाद मेरा हो॥
खुशी रखता है दुनिया को सभी का अन्न दाता है।
मगर अफ़सोस फिर भी यह चमन नाशाद मेरा हो॥
कटें बेड़ी गुलामी की तेरी नज़रे इनायत से।
यही फ़रियाद करता हूं वतन आज़ाद मेरा हो॥
उठाते हैं मुसीबत पर मुसीबत जिस तरह से हम।
पड़ा पिंजर में मेरी ही तरह सय्याद मेरा हो॥

गाना नं० १०६।

खौफ़ अ फत कहां दिल में रिया आयेगी,
बात सच्ची है जो, वह लव पै सदा आयेगी।
दिलसे निकलेगी मरके भी न वतनको उल्फ़त,
मेरी मिट्टी से भी खुशबूए वफ़ा आयेगी।
मैं उठालूंगा बड़े शौक से उसका सर पर,
खिदमते कौम में जो रंजो बला आयेगीं।
सामना सब्रो शुजाअत से करूंगा मैं भी,
खिंचके शमशेर जो कभी तेग़े जफ़ा आयेगी

ग़ैर ज़ौम और खुदी से जो करेगा हमला,
मेरी इम्दाद को खुद ज़ाते खुदा आयेगी।
आत्मा हूं, मैं बदल डालूंगा फौरन चोला,
क्या बिगाड़ेगी अगर मेरी क़ज़ा आयेगी।
खूब रोयेगी मेरे शमा लाशे पै शफ़क,
गम मनाने के लिये काली घटा आयेगी।
अब्रतर अश्क बहायेगी मेरे लाशे पर,
खाक उड़ाने के लिये बादे सवा आयेगी।
ज़िन्दगी मैं तो मिलने से झिझकती है फलक,
खल्क़ को याद मेरी बादे फ़ना आयेगी।

गाना नं० १०७।

देश की खातिर मेरी दुनियां में यह ताबीर हो।
हाथ में हो हथकड़ी पैरों पड़ी जंजीर हो॥
शूली मिले फांसी मिले या कोई भी तदबीर हो।
पेटमें खंजर दुधारा या जिगर में तीर हो॥
आंख खातिर तीर हो मिलती गले शमशीर हो।
मौतकी रक्खी हुई आगे मेरे तस्वीर हो॥
मरकर भी मेरी जानपर जहमत बिला ताख़ीरहो।
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो॥
खास कर मेरे लिये दोज़ख नया तामीर हो।

अलग़रज़ जो कुछ हो मुमकिन वह मेरी तहकीरहो
हो भयानक से भयानक भी मेरा आख़ीर हो।
देशकी सेवा हो लेकिन एक मेरी तहशीर हो॥
इस से बढ़कर और दुनिया में अगर नाज़ी हो।
मंजूर हो! मंजूर हो!! मंजूर हो!!! मंजूर हो!!!!
मैं कहूंगा फिर भी अपने देश का शैदा हूं मैं।
फिर करूंगा काम दुनिया में अगर पैदा हुआ॥

ग़ज़ल नं० १०७।

हूर को छोड़ दिया तेरी मुहब्बत के लिये।
मैं तेरे कूंचे में मुज़तर नहीं जन्नत के लिये॥
बेवफ़ा उलफते अग़ियार न छूटी तुझसे।
हमने अहबाबको छोड़ा तेरी उलफ़तके लिये॥
आइये आइये दीजे कहीं दर्शन आकर।
रूह जिन्दां में तड़फ़ती है ज़यारत के लिये॥
दे दिया मुझको दवामी तेरा दर्दे फ़ुरक़त।
बैठा कस्सामें अजल जिस घड़ी क़िस्मतके लिये॥
होंगे वह भी जिन्हें वस्ल हुआ होगा नसीब।
हम तो तरसा किये बर्सों तेरी सूरतके लिये॥
ऐ फ़लक जाके किसी और पै आफ़त ढाता।

क्या हमीं रह गये थे तेरी शरारत के लिये ॥

जिन्दा दर गोर हूं मैं तेरे वगैर ए। प्यारे।

हकसे कुछ मांगा हुआ दौरए फुरकतके लिये ॥

राज़े शब होता गया हाल हमारा अबतर।

कोई दरियां न मुयस्सर हुआ सेहत के लिये ॥

ऐ फलक वक्ते मुसीबत में है घबराहट क्या।

पेश खैमा है यह इन्सान की राहतके लिये ॥

ग़ज़ल नं० १०८।

हिन्द में आह चलीं उलटी हवाऐं क्यों कर।

घिरके इफलास की आई हैं घटाऐं क्यों कर ॥

खींच कर गल्ला जो ले जाऐं विलायत वाले।

फिर कहो भूक से हम जां न गवायें क्यों कर ॥

है कभी ताऊन कभी कहत कभी हैजा है।

नहीं मालूम टलेगी यह बलायें क्यों कर ॥

क्या कमल जाने जो है गूँज में भौंरा के मज़ा।

गोरे तसलीम करें कालों की रायें क्यों कर ॥

हम फ़लक फूँक के रखते हैं जमीं पै भी क़दम।

आसमां सर पै उठायें तो उठायें क्यों कर ॥

—o—

ग़ज़ल नं० १०६ ।

अपमान हिन्द वालो कब तक सहा करोगे ।
दुर्वाक्य दूसरों के कब तक सहा करोगे ॥
ग़ैरत से तुम किसी दिन कुछ हक़ अदा करोगे ।
दुर्भाग्य ही का अथवा शिकवा किया करोगे ॥
कपड़ा रहा न तन पै भोजन से तङ्ग आये ।
अन्धे बने रहोगे कब तक लुटा करोगे ॥
लेते नहीं हो करवट किस नींद सो रहे हो ।
रोओगे हाथ मल-मल तुम और क्या करोगे ॥
शेरों के पुत्र होकर गीदड़ बने रहोगे ।
गैरों की धमकियों से कब तक डरा करोगे ॥
दुनियां के देश सारे आज़ाद होगये हैं ।
भारत को तुम बताओ कब तक रिहा करोगे ॥
अपने ही देश में तुम रहते हो अजनबी से ।
बाहर किसी से क्योंकर फिर क्या मिला करोगे ॥
मांगे से कब किसी को देता है राज कोई ।
दामन किसी के आगे फैलाके क्या करोगे ॥
बेढब को आसरा है हे श्याम आप ही का ।
भारत हुआ ग़ारत किस दिन दया करोगे ॥

कृष्ण का अर्जुन को उपदेश ।

ग़ज़ल नं० ११० ।

मियाने रज़मगाह यह कच दिलापन ।
तुम्हारी अक़ल पर सद हैफ़ अर्जुन ॥
नहीं मरता है हरगिज़ मरने वाला ।
है कायर वह ऐसा करने वाला ॥
अमर है आत्मा फानी नहीं ।
अजल इसको कभी आनी नहीं ॥
ज़रर पहुंचा नहीं सकती है बारिश ।
जला सकती नहीं है उसको आतिश ॥
हवा खुश्क इसको कर सकती नहीं ।
कभी मारे यह मर सकती नहीं ॥
न ग़लवा इस पै हैं हथियार पाते ।
न लश्कर हैं इसे नीचा दिखाते ॥
फ़ना रखो ख्याल इसको नहीं है ।
तनुज्जुल या ज़वाल इसको नहीं है ॥
फटे कपड़े बदल लेते हैं जैसे ।
बदल लेती है क़ालिब यह भी वैसे ॥

हुआ पैदा जो इक दिन वो मरेगा।
नई फिर जिन्दगी हासिल करेगा॥
रहेगा सिलसिला यह योंही जारी।
खुशी वाजिब न इस पर आहो जारी॥
बनो आक़िल मेरे कहने को मानो।
बस अब दिल जवां मर्दी का ठानो॥
तफक्कुर छोड़ दो हिम्मत दिखाओ।
उदू से अपनी ताक़त आज़माओ॥
बहादुर जो है. है उसको यह लाजिम।
रहे हर वक्त वह हिम्मत पर आज़िम॥
लड़ाई में कभी वह दिल न छोड़े।
मरे मैदान में लेकिन मुंह न मोड़े॥
किया भगवान ने वो स्वर्ग का दर।
हुआ मुक्ति का अब मौका मुअस्सर॥
मुबारिक जानो उसी क्षत्रीकी तक़दीर।
जो लड़ कर जङ्ग में हो कुश्तये तीर॥
लड़ाई है हर तरह फायदे मन्द।
यही मेरी नसीहत है यही पन्द॥
मरोगे तो मुअस्सर होगी जिन्नत।
अगर मारा तो पाओगे हुकूमत॥
फराहम जिस कदर पियें जवां है।

यह समझो कोई दम के महमां हैं॥

अगर तुम फेंक कर सब हथियार।
न रखोगे लड़ाई से सरोकार॥
यह लुकमा मौतका फिर भी बनोगे।
किसी सूरत न हरगिज़ बच सकोगे॥
सिपाही फ़ौज हर जानिब कटेगी।
जो होती है वह होकर ही मिटेगी॥
कमां लेकर तभी कहता हूं उठो।
जो दुश्मन हैं उन्हें मुर्दा ही समझो॥
पहाड़ों की तरह तुम उन पै डटो।
करो सर फिर मजे शाही के लूटो॥
करो मत ऐ फ़लक इसमें शंका।
बजाओ फतह और नसरत का डंका॥

ग़ज़ल नं० १११।

जै भारत जिसकी कीर्ती सुरों ने गाई।
हम हैं भारत सन्तान करोड़ों भाई॥
हां गूँज उठे आकाश अनिल द्वारा।
अगणित कण्ठोंसे बहे एक स्वरधारा॥
कह दो पुकार कर सुने चराचर सारा।
अबतक भी है अस्तित्व अखंड हमारा॥
अबतक भी है कुल कीर्ती हमारी जाई।

बस इसी दिशासे प्रथम प्रकाश हुआथा ॥
शुभ शामगानसे मोह विनाश हुआ था ।
पृथ्वीतल का पशु-भाव हताश हुआ था ॥
मानव-कुलमें मनुजत्व बिकाश हुआथा ।
हमसे जीवन की ज्योती जगतने पाई ।२।
सब बातों में हम रहे सदा आगे हैं ।
विघ्नों के डर से कभी नहीं भागे हैं ॥
सदियों तक सोये किन्तु पुनः जागे हैं ।
अब भी हमने निजभाव नहीं त्यागे हैं ॥
फिर वारी है संसार हमारी आई ॥

ग़ज़ल नं० ११२ ।

इकसां रहना है कभी रङ्ग ज़माना कोई,
जान भी खोना है ग़म में कहीं दाना कोई ॥
यों कहा कहना कि जङ्गल में है मंगल मुझको ।
मेरी जानिबसे कभी रंज न लाना कोई ॥
जी भरे रखना पिताजी का सभी मिल २ कर ।
पोछना आंस कोई सब दिलाना कोई ॥
कोई समझाना उन्हें दिल बहलाना कोई ।
पिछले इतिहासों को पढ़ २ के सुनाना कोई ॥
मैं करीब आपके कदमों से बज़ाहिर हूं दूर ।
दिल के आईने में सूरत को दिखाना कोई ॥

जाते हैं चौदह वर्ष चुटकी बजाते कहना ।
राम आमिलते है आंसू न बहाना कोई ॥
आए जब भाई भरत मेरी तरफ से कहना ।
राज पा कर न कभी नीति भुलाना कोई ॥
जब तलक लौटूँ पिता माता को संतुष्ट करें ।
प्यारी प्रजा का कभी दिल न दुखाना कोई ॥

ग़ज़ल नं० ११३ ।

जिस ख़ाक़ से बने हैं उसी ख़ाक में मिलें ।
गुल हों तो अपने बाग़को ख़ाशाक में मिलें ॥
बूए वफ़ा न ख़ूए सफ़ा का हो जिस में रङ्ग ।
जल्द ऐ खुदा वह फूल कहीं ख़ाक में मिलें ॥
उलफत का मज़ा दर्द में भी आए कुछ न कुछ ।
गर जख़्म जख़्म से दिले सद चाक में मिलें ॥
दिलको खबर हो दिलकी तो हो दिलसे दिलको राहत ।
ख़त सबको हुब्बे क़ौम के इस डाकमें मिलें ॥
आखों से चुन के दिल में रखें फूल की तरह ।
कांटे वतन के जो ख़सो खाशाक में मिलें ॥
खाके वतन ही लेगी फलक गोद में हमें ।
कुछ ग़म नहीं जो पैके अजल ताक में मिलें ॥

ग़ज़ल नं० ११४ ।

मुसीबत आ तेरा हम दिलसे इस्तकबाल करते हैं ।
पये शमशीर सीना औ जिगर को ढाल करते हैं ॥
खबर दार अहले हिन्दोस्तान कि बनती है वही सवज़ा।
जला कर दस्त में जिस घास को पामाल करते हैं ॥
हम गाढ़े पसीने की कमाई दें तो क्या ग़म है ।
यहां के जानवर तक नज़र अपनी खाल करते हैं ॥
खुदा की महरबानी जानते हैं हिन्द के मुफलिस ।
सुलूक इनसे जो आये दिन बबा ओ काल करते हैं ॥
कोई और इस तरह क्या फाग खेलेगा लंगोटी में ।
विलायत को तवंगर हिन्द के कंगाल करते हैं ॥
है मौसम फाग़ का खेलेंगे अब होली इसी से हम ।
ज़मीने हिन्द को खूने जिगर से लाल करते हैं ।

ग़ज़ल नं० ११५ ।

पूछते क्या हो कि क्या अरमां हमारे दिल में हैं ।
कुछ वतन की याद में आहे दमें बिसमिल में हैं ॥
साकिनाने बाग़ आलम सब रिहाई पा चुके ।
इक हमी आफत मारे कैद को मुशमिल में हैं ॥

देश वालो दामने हिम्मत कभी छोड़ो नहीं।
इम्तहाने इश्क़ की तुम पहिली ही मज़िल में हैं॥
आही पहुंचेगी किनारे किश्तीए मारत कभी।
कोई दममें देखना हम दामने साहिल में हैं॥

ग़ज़ल नं० ११६।

आज काशी में मेरा कोई खरीदार नहीं।
सत्य कहते हैं मुसीबत में कोई यार नहीं॥
प्राणप्यारे पतिका धर्म जो गिर जाय कहीं।
मुझसी पत्नी का बेड़ा होगा कभी पार नहीं॥
पतिका प्रण हो पूरा बस तो मेरी लाज रहे।
पतिकी सेवा बिना होगा मेरा उद्धार नहीं॥
राज गया पाट गया फिरते हैं बन बन मारे।
जिस्म के बचने में भी कुछ इन्कार नहीं॥
तड़पती हूं और बिलखती हूं खड़ी आजयहां।
मोल लेने के लिये भी कोई तैयार नहीं॥
शोक हा! शोक!! हरिश्चन्द्रकी खड़ी रानी कहे।
शहर काशी में मुझे दीखता बाजार नहीं॥

ग़ज़ल नं० ११७।

झूठ जो चीज है फिर उससे मुहब्बत कैसी।
ख़ाक हो जाय जो दम भर में वह सूरत कैसी॥

रंग बदल जाय जो कुछ दिन में वह हालत कैसी ।
जिन गुलों पर हो खिजा उनकी वह रंगत कैसी ॥
जो डुबा दे तुम्हें मझधार में वह मुहब्बत कैसी ।
चीज़ अपनी छिन जाय अगर तो कुब्बत कैसी ॥
जिसके परदे में मुसीबत हो वह राहत कैसी ।
आख़री वक्त में दूरी हो तो कुवव्त कैसी ॥
दिल में परहेज़ की बू हो तो इताअत कैसी ।
दिल कहीं और फंसा हो तो इबादत कैसी ॥
मेरा तेरा तो बखेड़ा है कहे राधेश्याम ।
मौत जब सर पे खड़ी है तो सकूनत कैसी ॥

ग़ज़ल नं० ११८ ।

क्या कहें आलम में हम इन्सान या हवान थे ।
ख़ाक थे क्या थे ग़रज़ एक आन के महमान थे ॥
कर रहे थे अपनी क़ब्जा गैर की हमलोक पर ।
छीन ली उसने तो जाना कि हम नादान थे ॥
एक दिन उस्तखां ऊपर पड़ा मेरे जो पांव ।
क्या कहूं उस वक्त मेरे दिल में क्या ख़ ध्यान थे ॥
पांव पड़ते ही गरज उस उस्तखां ने आह की ।
और कहा आखिर कभी हम भी साहब जान थे ॥
दस्त वा जानू शिकम गर्दनो पुश्तो कमर ।
देखने को आंख और सुनने की खातिर कान थे ॥

रात के सोने को क्या २ नर्म नाज़ुक थे पलंग।
दिन को ख़ातिर बैठने को तख्त औ ऐवान थे॥
एक ही चक्कर अजल ने आन कर ऐसा दिया।
ना वह हम थे ना हमारे ऐश के सामान थे॥
ऐसी बेरहमी से हम पर पांव मत रखना जरा।
ओ मियां हम भी तेरी तरह इन्सान थे॥

ग़ज़ल नं० ११६।

डराता मौत से है क्या अमर है आत्मा मेरी।
नहीं कुछ कारगर होने की इसपर तेग़ यह तेरी॥
इसे छेदे इसे काटे कहां यह तीर की ताक़त।
इसे बांधे इसे जकड़े कहां जंजीर की ताक़त॥
गला सकता नहीं इस को सुमऐ बेदादगर पानी।
जला सकती नहीं है आग की भी शोले अफ़सानी॥
अजलका खौफ़ है इसको न है कुछ मर्ग का खटका।
डरा सकता नहीं हरगिज़ इसे बिजलीका भी कड़का॥
देशपर मर मिटूँगा मैं देश ही मुझको प्यारा है।
यही हम दर्द है मेरा यही मेरा सहारा है॥
देशपर कर गये गुरु तेग़ अपनी ज़ानको कुरबां।
हुआ सर सब्ज़ जिनके ख़ूनसे यह बाग हिन्दोस्तां।
देश के वास्ते गोविन्द ने खुद जान तक वारी।

सहे दुःख हर तरहके और मुसीबत झेलली सारी ॥
गुरु गोविन्द के लाड़ले बेटों ने सर वारा।
चुने ईटों में ख़ातिर धर्म के लेकिन न जी हारा ॥
देश के वास्ते प्रताप ने सौ आफ़तें झेलीं।
वलाएं सैकड़ों सर पर हजारों आफ़तें ले ली ॥
देश के वास्ते सम्मानें कटवाये दस्तो पा।
रामने भी देशकी खातिर किया था बनमें जा डेरा ॥
लिया बनवास सीता ने प्यारे देश की खातिर।
धर्म के वास्ते दशरथ ने देदी जान तक आख़िर।
दिखा दूँगा कि इन वीरोंकी एक औलाद हूं मैं भी
देश पर जान देने के लिये दिल शाद हूं मैं भी ॥
क़ज़ा के खौफ़ में अपने अकीदों को न छोड़ूंगा।
मरूंगा जान दे दूंगा धरम से मुँह न मोड़ूँगा ॥
सुनो अहले वतन तुम भी धरम पर जान दे देना।
गमों रंजो अलम सरपर जो आजाये वह ले लेना ॥
पिता जी दीजिये रुख़सत मुझे चोला बदलने की।
इज़ाज़त मांगती है आत्मा बाहर निकलने की ॥
न करना ग़म मेरे मरने का माता चैन से रहना।
भजन ईश्वर का करना यादमें मेरी न दुख सहना ॥
तमन्ना जिन्दगी की है न कुछ जन्नत के लेनेकी।
जो ख़्वाहिश है तो बस अपनी यही बलीदान होने की

कर ऐ जल्लाद जो तेरे दिल में समाई है
चला खंजर फ़लक ने देर से गर्दन झुकाई है ॥



ग़ज़ल नं० १२० ।

तुम प्रबल भय दिखला रहे इसका न मुझको ध्यान है ।
मेरे हृदय में सर्वदा निज धर्म ही का मान है ॥
मैं निज कठिन कर्तव्य पथ से बिमुख होने का नहीं ।
आपत्तियां क्या दृढ़ हृदय को हैं हिला सकती कहीं ॥
अपनी भयानक मृत्यु का मुझको तनिक भी भय नहीं ।
पर देखना संकट न आये आप के ऊपर कहीं ॥
फांसी दिलाना सर कटाना मारना आसान है ।
पर हृदय पर अधिकार करना तनिक टेढ़ा काम है ॥
चाहे भले ही काट लो प्रत्येक अङ्ग शरीर का ।
विचलित कदापि न हो सकेगा मन हकीकत वीर का ॥
शतशः कृपाण प्रहार तन पर एक बार हों यदि कहीं ।
आनन्द से वह भी सहूंगा धर्म छोड़ूँगा नहीं ॥
हे पूज्य गुरुवर ! हे पिता ! मन शान्त अपना कीजिये ।
कुछ भय न करके जाइये धर धैर्य्य मां को दीजिये ॥
हां पूज्य जननी को सुनाना यह सन्देश तात का ।
प्रिय जननी दृढ़ विश्वास रखना मैं रहूंगा आप का ॥
प्रिय जाति के सम्मान हित निज प्राण देना धर्म है ।

तन देश वेदी पर चढ़ाना परम पावन कर्म्म है ॥
यह प्राण मेरे जायेंगे निज देश सेवा के लिये ।
मैं त्यागता हूं देह भावी विजय की आशा के लिये ॥
धिक्कार है वह जन्म जिससे जाति का कुछ हित न हो '
उस भृत्यु को धिक्कार है जो निज देशसेवा हित न हो ॥
जातीय सेवा लक्ष्य च्युत सब कार्य को धिक्कार है ।
निज देश प्रेम बिहीन मन धिक्कार है धिक्कार है ॥
मरता हक़ीक़त एक है आज अत्याचार से ।
होंगे हक़ीक़त सैकड़ों ही इस रुधिर की धार से ॥
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का ।
हां नाश होगा उस समय दुख शोकके लव लेश का ॥

ग़ज़ल नं० १२१ ।

भारत को रोते रोते सौ साल हो गये हैं ।
अफ़सोस है कि सारे पामाल हो गये हैं ॥ १ ॥
तुमने हमारे हक़ में पर कुछ भी नहीं कसरकी ।
सीनेसे सिल हमारे इक इंच भी न सर की ॥ २ ॥
जापान हम से कितना आगे निकल गया है ।
मग़रिब हमें कभी का नीचे कुचल गया है ॥ ३ ॥
ईरान गिरते गिरते कैसा सम्भल गया है ।
अब चीन पेश्तर से बिलकुल बदल गया है ॥ ४ ॥
हालत मगर हमारी वह आपने बना दी ।

जो भी उधर से गुजरा दो ठोकरें लगा दी ॥५॥
आख़िर यह हिन्द वाले बेजान तो नहीं हैं।
इन्सान ही हैं आख़िर हैवान तो नहीं हैं ॥ ६ ॥
अच्छा बुरा न समझें नादान तो नहीं हैं।
मज़बूर गो बहुत हैं अनजान तो नहीं हैं ॥ ७ ॥
आख़िर यह एक न इक दिन बेदार क्यों न होते।
कबतक खुंवार रहता होशियार क्यों न होते ॥८॥
आख़िर तो उनके तन में भीषम का ख़ूँ रवा है।
दुनियांमें सबसे अच्छी इक उनकी दास्तां हैं ॥ ९॥
इनमें भी कौमियत है लेकिन अभी निहां है।
आंखों में उनके हरदम अब भी वही समां है ॥ १०॥
इनके बड़ों ने आख़िर क्या कुछ नहीं किया था।
कब धर्मसे हटे थे कब सर नहीं दिया था ॥ २१ ॥
ऐ अहले हिन्द कह दो सब इक ज़बान हो कर।
हिन्दोस्तां रहेगा हिन्दोस्तान होकर ॥ २२ ॥
आपस में हम रहेंगे जिस्मओ जान होकर।
चमकेंगे आसमां पर कौमी निशान होकर ॥ २३ ॥
घबरायेंगे न हरगिज़ बिगड़े जो काम बन कर।
पर अब नहीं रहेंगे हिन्दी गुलाम होकर ॥ २४ ॥
ऐ ! नौ ज़वानो तुम पर इज़्ज़त का ताज होगा।
भारत निवासियों का जिस दिन स्वराज्य होगा।२५।

कुछ काम कल करेंगे कुछ काम आज होगा।
करसरत से दूध होगा सस्ता अनाज होगा ॥ १६ ॥
दुनियां के लोग हम पर मुतलक़ नहीं हसेंगे।
चालों में मारले की अब हम नहीं फसेंगे ॥ १७ ॥

ग़ज़ल नं० १२२।

लाखों हमारे भाई फ़ाके से मर रहे हैं।
उफ़ जिनके पास ज़र है वह चैन कर रहे हैं ॥
दुख दर्द की अमीरां को कुछ ख़बर नहीं है।
और गैर कौम वाले जाम अपना भर रहे हैं ॥
उफ़ इन्क़लावे दुनियां अल्लाह रे दोर गरदूँ।
नाज़ो पले हमारे फाकों से मर रहे हैं ॥
मुफ़लिस जो आज कल है उनके बुज़ुर्ग दामन।
इमदादे ग़ैर ही में दौलत के सर रहे हैं ॥
हमदर्दी का हुआ गर कहत इस तरह मुर्रविज।
मांगेंगे भीख यों ही जो पेट भर रहे हैं ॥
हिन्दुस्तानियों की जो अक्ल ऐसी चर गई है।
चारा उन्हीं को देंगे खेती जो चर रहे हैं ॥
अग़यार खा रहे हैं खेती हमारी सारी।
हम भूखों मर रहे हैं वह पेट भर रहे हैं ॥
सुनते फ़लक़ है कोई ऐसा भी था जमाना।

जिनसे हैं ज़ेर अब हम उन पर जबर रहे हैं ॥
बाग़ से सर २ का भौंरा आशिय ना ले गयो ।
अब्दलीवों को क़फ़स में आबो दाना ले गया ॥
कौन कहता है ज़बरदस्ती से हम पकड़े गये ।
जेल में खुद हम को शौके जेलखाना ले गया ॥
कुछ गुलो गुलची का शिकवा बुलबुलले भारत न कर ।
तुझको पिंजरे में है तेरा चहचहाना ले गया ॥
क्यों घटा अदवार की छाये न अहले हिन्द पर ।
खींच कर इङ्गलैंड सब मालो खजाना ले गया ॥
पूछने क्या हो जमीदारों की दौलत क्या हुई ।
कुछ तो रिशवत कछनज़र कछ मालयानालेगया ॥
शामये किस्मत से एक दाने का हम तरसा किये ।
झोलियां भर कर वगरना कल ज़माना लेगया ॥
भूक से क्यों न तड़पें हिन्द के बच्चे फ़लक ।
खींच कर इंगलैंड यहां से दाना २ ले गया ॥

ग़ज़ल नं० १२३ ।

ऐ ग़ैर क़ौम वालो लाचार तुम से हम हैं ।
तयार हम से तुम हो बीमार तुमसे हम हैं ॥१॥

दिन रात मुबतिलाये आज़ार तुम से हम हैं
सच्ची तो बात यह है वेजार तुम से हम हैं ॥२॥

आख़िर निभेगी कबतक यों आपकी हमारी।
है राम राम लब पर आ गोश में कटारी ॥३॥

हम सब तरह सुखी थे आराम कर रहे थे।
काम आये आक़बत में वह काम कर रहे थे ॥४॥

आनन्द में सुबह से हम शाम कर रहे थे।
आग़ाज़ कर चुके थे अंजाम कर रहे थे ॥५॥

नाहक़को तुमने आकर एक खलबली मचादी।
हिन्दोस्तां में आकर इक आग सी लगा दी ॥६॥

भारत निवासियों को मज़नू बना के मारा।
बुत बन के तुमने उनको बन्दा बनाके मारा ॥७॥

जो जो रहे थे उनको ज़ख़्मी बना के मारा।
जो बच रहे थे उनको कुछ दे दिला के मारा ॥८॥

क्या मार है ग़रज़ की अपना बना के मारा।
जो मर रहे थे उनको फिर फिर जिलाके मारा ॥९॥

हमने जो उठ के देख बेहाल हो रहे हैं।
हिन्दोस्तान वाले कंगाल हो रहे हैं ॥ १० ॥

उपदेश—किस्मत जुदाजुदा है।

भजन नं० १२४।

इक बाप के दो बेटे किस्मत जुदा जुदा है।
इक बादशाह जहां का इक फिर रहा गदा है॥
मट्टी जिसम की इक है जो जीव पैदा होते।
इक तो बना है नारी इक मर्द बन खड़ा है॥
हस्ती बशर की इक है लेकिन एमाल दो हैं।
इकतो सनातन धर्मी इक नास्तिक बना है॥
चांदी तो एक ही है उसके बने दो जेवर।
इक सीस का मुकट है इक पांव का कड़ा है॥
इक ही सदफ से दोनों मोती हुए हैं पैदा।
इक ख़रल में है आया इक ताज में जड़ा है॥
पत्थर तो एक ही है हाथों में कारीगर के।
इक की तो होती पूजा इक फर्शमें जड़ा है॥
बर्षाको बूँद होती पड़ती है दो के मुख में।
इक सांप जहर उगले काफूर इक बना है॥

दादरा नं० १२५।

पीते जाइयो जी महाशय प्याला प्रेम २ का।
नहीं है स्वांग तमाशा नहीं है यहां थियेटर।

यहां तो बजता है नक्कारा सच्चे वेद धर्म का ॥ १ ॥
नहीं है यहां कुछ धोखा नहीं है यहां लालच ।
सबको रोशन होके आये ये एक नियम प्रेम का ॥ २ ॥
रस्ता सीधा तो बताया दयानन्द ने आकर ।
यश क्योंकर नहीं गावें उसके सच्चे प्रेम का ॥ ३ ॥
सब सज्जनों से कहता प्रेमी हाथ जोड़ कर ।
तुम भी पालन करलो आके ऐसे सच्चे धर्म का ॥ ४ ॥

गुरु गोविन्दसिंह के बच्चों का प्यारा धर्म

ग़ज़ल नं० १२६ ।

करलो क़तल खुशी से हमको उजर नहीं है ।
प्यारा है धर्म अपना जितना कि सर नहीं है ॥
होने को हैं मुसल्मां दोऊ बन्धु में न कोई ।
दीवार में चुनेंगे इसका भी डर नहीं है ॥
पाबन्द धर्म के हैं चुन जायेंगे खुशी से ।
दोनों को इसकी परवाह बिलकुल नहीं है ॥
जिस ने मनुष्य होकर रक्षा न धर्म की की ।
सींगों से हीन पामर पशु है वह नर नहीं है ॥
हम धर्म बेच अपना लेंगे न जिन्दगी को ।
हैं राज्य के न भूखे दरकार ज़र नहीं है ॥
जिस पुत्र ने पिता की मानी नहीं नसीहत ।

कहने को वह पिसर है लख्ते जिगर नहीं है ॥
होता रहेगा कबतक जोरो सितम तुम्हारा ।
इसका भी अन्त समझो ईश्वर किधर नहीं है ॥

जब दोनों दीवार में चुन दिये गये यह भयानक समाचार माता पिता को पहुंचे जो पृथक् २ स्थानों पर थे माता जी ने तुरन्त मिठाई बटाई और कहा कि मैं आज कोखवती हुई पिता ने सुनकर नक्कारे बजवाये और कहा कि आज गोविन्द सिंह यथार्थ में पुत्रवाला हुआ ।

ग़ज़ल नं० १२७ ।

आर्यों की नस्ल हो मुसलिम कहना छोड़ दो ।
छोड़ दो इसलाम का झूठा फिसाना छोड़ दो ॥
एक ईश्वर की करो पूजा तुम अब बहरे खुदा ।
संग असबत को मियांजी सर झुकाना छोड़ दो ॥
है रवां गङ्गा तुम्हारे दरपै सदियों से अज़ीज़ ।
जाके मक्के आवे ज़मज़म भरके लाना छोड़ दो ॥
तुम बने हो दोस्तो इस पाक खाके हिन्द से ।
टर्की और ईरान के अब गीत गाना छोड़ दो ॥
क्या मज़ा हो गर फिरिस्तोंसे मैं कहदूँ अर्श के ।
तुम खुदा का तख्त अब सरपर उठाना छोड़दो ॥
गर तुम्हें दरकार है रहमत खुदा की भाइयो ।
खून नाहक बेकसों का तुम बहाना छोड़ दो ॥

बैठ उठ लेट जाने से खुदा मिलता नहीं।
इस लिये अब तुम नमाजे पंज गाना छोड़ दो॥
हो चुकी अब दिल्लगी बरसों खुदा के वास्ते।
हूरों गिल्मों से मियांजी दिल लगाना छोड़ दो॥

शैर नं० १२८।

आग में पड़कर भी सोने की दमक जाती नहीं।
काट देने से भी हीरे की चमक जाती नहीं॥
सिलपर घिस देनेसे भी जाती नहींचन्दनकी बू।
फूलकी मिट्टी में मिलकर भी महक जाती नहीं॥
जा नहीं सकती कटहरों में भी शेरों की दहाड़।
अन्दलोवों की कफ़समें भी चहक जाती नहीं॥
खौफ़ा खतरे में बदल सकती नहीं मर्दों की हूं।
धूप की तेज़ी में जड़ों की लहक जाती नहीं॥

अमेल विवाह

भजन नं० १२९।

धरम का आसन उठा कलियुगके आजाने के बाद।
दैत्य दुःख देने लगे अधरम के छा जाने के बाद॥
घोर अन्धेरी है छाई सूझता कुछ भी नहीं।

बोल ने उल्लू लगे सूरजके छुप जाने के वाद ॥
दुष्ट व्यभिचारी दुराचारी करोड़ों बढ़ गये ।
कहते हैं गौ घात श्री गोविन्दके जाने के वाद ॥
दांव दुष्टों का लगा करने लगे उत्पात नित ।
आधुसे घर फोड़कर मालिक के सो जाने के बाद ॥
लेगये जो रत्न थे नहीं यत्न से रक्खे हुये ।
रो रहे सिर पीटकर चोरों के भग जाने के बाद ॥
क्या कहें जिस भांति अत्याचार की आंधी चली ।
धूल बरसी सत्य के सब फूल उड़ जाने के बाद ॥
बेच कर बेटी भरी थैली बने धरमात्मा ।
रङ्ग चड़ाया पागपर जब खोक पड़ जाने के बाद ॥
हो गये अस्सी बरष के थरथराता तन अहो ।
ब्याह किया है मुवेने दांत गिर जाने के वाद ॥
ले गये यमलोक को बुड्ढे टिकट कुछ रोज में
काटली अबला की गर्दन फेरे फिर जाने के बाद ॥
हो रहा अति आर्त क्रन्दन विधवाओं का देश में ।
धरम से विचलित हुई तरुणाई आ जाने के बाद ॥
भागती कितनी ही तरुणी नित विधर्मियों के साथ।
बन रही वेश्या खलोंके हाथ पड़ जाने के बाद ॥
बाल वृद्ध विवाह ने भारत को गारत कर दिया ।
होश कुछ आने लगा बर्बाद हो जानें के बाद ॥

धर्म अबलाओं का हरते करते पापाचार यह।
खूब सोचते हैं गर्भ रह जाने के बाद॥
तीर्थ का करते बहाना भ्रूण हत्या के लिये।
ताव मूछों पर लगाते गर्भ गिर जाने के बाद॥
घोर अत्याचार करते रात दिन यह नर पिशाच।
हथकड़ी ही पहिन ली मालूम पड़ जाने के बाद॥
फूस का छप्पर है घर पर घिस के माचिस दी लगा।
खोदते कुआं अनारी आग लग जाने के बाद॥
दीन जन की टेर सुनिये चक्रधर करुणानिधे।
आइये माधव प्रतिज्ञा पूर्ण हो जाने के बाद॥

हिन्दुओं से खिताब

ग़ज़ल नं० १३०।

हिन्दओ नींद ये अब तक भी तुम्हारी न गई।
ठोकरें इस क़दर खाकर के खुमारी न गई॥
शिद्दते दर्द से है क़ौम की हालत नाज़ुक।
इस से दुःख दर्द की तदबीर विचारी न गई॥
चोटियां जिसके सबब कटचुकीं लाखों अफ़सोस।
तुम से अब तक छुआछूत विसारी न गई॥

सलतनत जिस के बदौलत गई कुल कुंच कर ।
तुमसे उस फूटकीं जड़ अब भी उखाड़ी न गई ॥
सैकड़ों हो चुके मिस्मार शिवाले अब तक ।
मगर गफ़लत तेरी अय शिव के पुजारी न गई ॥
लीडरो कौंसिलें सब आप की होंगी बेकार ।
अहले इस्लाम को गर अक्ल सुधारी न गई ॥
जिन्दगी तेरी मुसाफिर है जहां में बेकार ।
तुझसे अपनी यह गिरी कौम सम्भारी न गई ॥

गोरक्षा विषय में
ग़ज़ल नं० १३१ ।

गौओं का रोना हर हम से सहा जाता नहीं ।
देखकर इनको मुसीबत अब रहा जाती नहीं ॥
क्या ख़ता इनसे हुई जो बिसार दी इनकी ख़बर ।
दे क्षमा का दान क्यों दुष्टों को समझाता नहीं ॥१॥
सब गौयें कहती हैं पुकारके प्रभु अर्ज इनकी कबूल हो
तेरे सिवा इनका जहां में कोई सुखदाता नहीं ॥२॥
दूध घृत मक्खन खिलावे घास जंगल में चुगें ।
बेगुनाह को मारते इनको तरस आता नहीं ॥३॥
यवन और कृश्चीन आर्य सब को जानत एकसम ।
सबको दूध पिलाती है क्या सब की ये माता नहीं ॥४॥

इस पर भी काटे इनको यवन दया से काम क्या ।
हे दयामय ! दुष्टों से क्यों इनको छुड़वाता नहीं ॥५॥
गौओंके इस हाल पर कीजै कृपा जगदीश अब ।
इनका दुख बलदेव से हरगिज सहा जाता नहीं ॥६॥

ग़ज़ल नं० १३२ ।

टेक—नुस्ख़ा शुद्धि का सबको पिलाये जायेंगे ।
सारी दुनियां को कर के दिखाये जायेंगे ॥
भगवान रामचन्द्र ने कर के दिखादिया ।
शिवरी निषाद नीच को फौरन पिला दिया,,
हम तो गुणगान उनके ही गाये जायेंगे ॥ १ ॥
शंकर ही शुद्धियों का था एक ढंग निराला ।
शंकर सरोज में लिखा शंखों का हवाला ॥
शङ्ख अब भी उन्हीं का बजाये जायेंगे ॥ २ ॥
सोलह पुराण कह रहे यह पुकार कर ।
इस्लाम की शुद्धि करो गङ्गा धार पर ॥
इसी गङ्गा में इनका निहलाये जायेंगे ॥ ३ ॥
वैदिकधर्म की शुद्धियां होती हैं धड़ाधड़ ।
भगवान दयानन्द के वीरों की पड़ापड़ ॥
मान मन्त्रों की इनमें दिलाये जायेंगे ॥ ४ ॥
शुद्धी को अशुद्धी कहें कैसे गंवार हैं ।

शुद्धी बिना संसार में जीना ही ख्वार है ॥
भूले भाँडुओंका भ्रम हम मिटाये जायेंगे ॥५॥

भारत वर्ष को शुद्ध कर बैठे न रहेंगे।

जाकर अरब ईरान की हम गैल गहेंगे ॥
आवे जमज़म पर डेरे जमाये जायेंगे ॥ ६ ॥

दफ्तर बनेगा शुद्धी का मक्के के भवन में।

फैलेंगी शाखें टर्की के हर एक सदन में ॥
संगे असबद पर ऋषिके गुणगाये जायेंगे ।७।

वेदों को तरफ़ आवेगा तबियत जहान की।

तालीम होगी ताक में बाइबिल कुरान की ॥
मुर्दा जाति को श्याम जिलाये जायेंगे ॥ ८ ॥

दादरा नं० १३३ ।

टेक-मेरा शुद्धी से होगा सुधार कहना मानो मियां।
नफ़रत है नसीबन से न मैं अब कहाऊंगी।
पद्मावती ही नाम मैं अपना रखाऊंगी।
बनूँ क्षत्राणी बांधू कटार ॥ १ ॥

बुरक़ा उतारूं अब मैं न पर्दा रखाऊंगी।
कुरते पाजामे की अभी धज्जी उड़ाऊंगी ॥
करूं साड़ी पै तन मन निसार ॥ २ ॥

तबदील नाम नाथ तुम अपना भी करालो।

ख्वाजा हसन को छोड़ परशुराम धरालो ॥
धारो कांधे पे नित ही कुठार ॥ ३ ॥
करलो खुशामद नाथ शुद्धी भवन में जाकर ।
दाढ़ी मुड़ावें आप की क्षण मात्र में आकर ॥
होवे ओ३म् नाम उच्चार ॥ ४ ॥
वैदिक धर्म का झण्डा नित ही उठायेंगे ।
भगवान कृष्णचन्द्र की गौवें चरायेंगे ॥
गावें बंशी को धुन में मलार ॥ ५ ॥
वीरों वीराङ्गणाओं से भारत को भरेंगे ।
दुःख दूर सभी मात्र भारत का करेंगे ॥
श्याम वेदों की आई बहार ॥ ६ ॥

भजन नं० १३४ ।

सर जमीने हिन्द को सर उठाना है मना ।
सरसे वह ताजे गुलामी भी हटाना है मना ॥
अब ऋषि सन्तान कों खुशियां मनाना है मना ।
वरसरे वाजार अब बाजे बजाना है मना ॥
धर्म के प्रचार का अब हौसला क्योंकर बढ़े ।
वालिआने हिन्दूको हिन्दू कहना है मना ॥
संघठन कांटा उदू की आंख में बस ने लगा ।
देर के बिछौंड़ों को अब सीने लगाना है मना ॥

और दिखलाता है क्या वह मुकद्दर देखिये ।
अब कौमी शान को खाक़ो दिखाना है मना ॥

अन्दलीबों को गुलों पर हो गया आना जुरम ।
धर्म अस्थानों को अपना आना जाना है मना ॥

है मरीजे नातवां की हालते कबल रहम ।
कि चराग यासो हसरत का भुजाना है मना ॥

रंजोगम शर्मा सहेजा रहे सम्भलता साथ साथ ।
धर्म वैदिक में किसी का दिल दुखाना है मना ॥

स्वामी का स्वामी से मिलाप

❀ और ❀

बिछड़े वालों का मिलाप

भजन नं० १३५ ।

मरते मरते भी हमें मरना सिखा कर चल दिये ।
यह अमर-जीवन सुसखा था बतलाकर चल दिये ॥१॥

आप की हस्ती थी या तसवीरें इस्तकलाल थी ।
गोलियां पिस्तौल की सीने पै खाकर चल दिये ॥ २ ॥

कब तमंचे से कलेजे में हुए सूराख तीन ।
तीन अक्षर ओम् के दिल में दिखा कर चल दिये ॥३॥

नम गई जब खून की धारों से पकी दाग बेल ।

वीर पुत्रों के लिये रस्ता बना कर चल दिये ॥ ४ ॥
केस शुद्धि का न अब तनसीख के काबिल रहा ।
फैसले पर खून की मुहरें लगा कर चल दिये ॥ ५ ॥
अब चली शुद्धि के पौदों की जड़ें पाताल को ।
खूने दिल से बांगवा पानी लगा कर चल दिये ॥ ६ ॥
हासिदों को था शराफत और असालत पर गुरूर ।
आजमाना था उन्हें बस आजमा कर चल दिये ॥ ७ ॥
देखकर कातिलका अपने महज बुजदिल, जनसिख।
हथकड़ी की चूड़ियां करमें पिन्हाकर चल दिये ॥ ८ ॥
मुद्दआ यह था न औरों पर पड़े गर्दो गुबार ।
धर्म के पथ में लहू अपना बहा कर चल दिये ॥ ९ ॥
कोई मा का लाल हो अब आके सज्जादा-नशी ।
आप तो मठमे पवित्रासन बिछा कर चल दिये ॥१०॥
देखलो आशा का लाशा और मनोरथ का बिमान ।
चार दिन जो मोहनी मूरत दिखाकर चल दिये ॥११॥
आगया था रनके अग्नी-बाण. अग्नि का पयाम ।
यूँ शरण में अग्नि का आनन्द पाकर चल दिये ॥१२॥
हो गये 'बेताब' श्रद्धानन्द स्वामी जब शहीद ।
धैर्य और सन्तोष सब दामन छुड़ाकर चल दिये ॥१३॥

भजने नं० १३६ ।

वैदिक धर्म का स्वामी डंका बजा गये हैं ॥
मुर्दा दिलों को स्वामी जी जिन्दा बना गये हैं ॥

तरजे अमल हमारा हम को बता गये हैं।
कर्तव्य का पालन करना हमें सिखा गये हैं॥
सारी उमर गुजारी थी खिदमते धर्म में।
सेवा यह आखरी भी स्वामी निभा गये हैं॥
बागे धर्म को सींचा अपने लहू से आखिर।
कुर्बानियों का हम को करना सिखा गये हैं॥
खुद हो गये अमर वह जाति में डाल दी जां।
वैदिक धर्म की सेवा करना बता गये हैं॥
हां रोएगां न हरगिज जायेगा खून उनका।
वह जानशीन हम को अपना बना गये हैं॥
हंस २ के जान देना सीखेंगे इस तरह से।
अपना लहू बहा कर हम को दिखा गये हैं॥
इस्लाम की जुलम की ताईद में मुस्लिमां।
स्वामी का खून बहा कर मोहरे लगा गये हैं॥
कुर्बान वेद हो कर पायेंगे शान्ति हम।
यह आखरी सबक वह हम को पढ़ा गये हैं॥

भजन नं० १३७।

उठो हिन्दुओ सुति ओ हुण तां जगाणा दी लोड।
मालावार बिच साइयां मोपलिआ छुरिआं चलाइआं।

हिन्दू देण दुहाइयां पहुंचे छेती कोई कोल उठो ॥
अगां मन्दिरां नूँ लाइआं छुरिआं हमलाते चलाइवा ।
हजारां बेवा बनाइयां हुण तलवार दे जोर उठो ॥
छोटे छोटे हुलारे टुकड़े कर कर के मारे ।
पेट छुरियां नाल पाड़े मारे गर्दन मरोड़ उठो ॥
लक्खां घिरानै उजाड़े जालिम दिन दहाड़े ।
हिन्दू जीउंदे ही साड़े पीपे तेलां दे रेड उठो ॥

धर्म पर बलीदान

भजन नं० १३८ ।

धर्म के नाम पर प्यारो तुम्हें मरना नहीं आता ।
लहू से कासए तकदीर का भरना नहीं आता ॥
छुरी से पेट फड़वाना तुम्हें आता नहीं प्यारो ।
हकीकत की तरह कुर्बान सर करना नहीं आता ॥

धर्म की राह पर चलना तुम्हें तो होगया मुश्किल ।
छुरी की धार टेढ़ी पर कदम धरना नहीं आता ॥
तुमहो औलाद शेरोंकी मगर अब बहरे हस्ती में ।
समय का फेर है सीधा तुम्हें तरना नहीं आता ॥

तबाही का तुम्हारी एक ही कारण है बस मित्रो ।
तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता ॥

'मुसाफिर' महर्वा सद महर्वा है तेरी हिम्मतपर।
धर्म की राह में हो नर तुम्हें डरना नहीं आता ॥

भजन नं० १३६

मची धूम शुद्धि तो ख्वाजा पुकारे,
कोई है जो अब काम अपना सवारे। मची०
रही धूम शुद्धि की यूं गर इलाही.
खुदा जाने किस तौर होंगे गुजारे। मची०
हुए शुद्ध जब गांव के गांव मुसलिम,
भला देखता ख्वाजा कैसे नजारे। मची०
हजारों को शुद्धि से मुक्ती मिली जब,
रहे देखते पर यह ख्वाजा बेचारे। मची०
सितारे हैं कौमी मदन स्वामी-लाला,
तब ही नज्र ख्वाजा को दिन आये तारे।
यह क्या कम समझते हैं ख्वाजा को काफिर,
वह उलमाए हिन्दी मुसलमान सारे। मची०
रहे "असगरी" पास मुसलिम के क्योंकर,
कि कुरआं में बाकी रहे बस सिपारे। मची०
बिलआखिर मुहमम्दअली को भी गांठा,
कि सहरा चढ़े सर हमारे तुम्हारे। मची०

समझ सब गये कोई है चाल यह भी,
हुए ख्वाजा मौलाना केजब इशारे ॥ मची०
नहीं ख़ाली इल्लत था आपसका झगड़ा,
नतीजा था इसका गये स्वामी मारे ॥ मची०
कहां से यह पिस्तौल आया बताओ,
जो खाकरके गोली स्वामी सिधारे ॥ मची०
शिकश्त इसको वाजिब है मुस्लिम की कहना,
जो यँ मौत के घाट स्वामी उतारे ॥ मची०
अगर दस्ते इस्लामी इसमें न होता,
बजाते शहादत पे क्यों यह दुतारे ॥ मची०
हों मायूस क्यों हम शहादत ऋषि पर,
शहीदों पे चलते ही आये हैं आरे ॥ मची०
शहिदत यह दुश्मनका दिल चीर देगी,
मुसलमान एक दिन बनेंगे हमारे ॥ मची०
हो इन्साफ अपना यहां गर तो बेहतर
मुक़द्दर पे शाकिर हैं हम किदगारे ॥ मची०
पशेमां हैं दुनियां के सारे मुसलमां,
चुनीं कर्द आकिल चुनीं 'सोज़' कारे ॥ मची०

ग़ज़ल नं० १४० ।

शुद्धि का जमाने में हम नाद बजादेंगे ।
जो कौल है मर्दों का वह करके दिखादेंगे ॥

ऐ सीनये सौंजां के अङ्गार थमे रहना ।
खुद उनके सितम उनको दुनियां से मिटादेंगे ॥
स्वामी को जो मारा है पिस्तौल क़ातिलने ।
क्या जुल्म से शुद्धि को जल्लाद मिटादेंगे ॥
हो जायेंगे सब क़ातिल गरक़ाबे फना इकमद ।
आखों से ज़रा भी गर हम अश्क बहादेंगे ॥
तलवारों की छाहों में तोपों की क़तारों में ।
हम अपनी जबांमर्दी गैरों को दिखा देंगे ॥
शेरों की तरह हम भी गुर्रायेंगे दुनियां में ।
सीनों में अगर खन्जर जज्बों को जगा देंगे ॥
हम ज्ञान से वेदों के श्रद्धा से मुहब्बत से ।
बिछुड़े हुए भाई को भाई से मिला देंगे ॥
दुनियां के शहीदों में पोजायेंगे वह रुतबा ।
वेदी पै वतन की जो सर अपना चढ़ा देंगे ॥

खुदा की शुद्धि नं० १४० ।

शुद्धि ने लोगो यह फरमाया है ॥ टेक ॥
शुद्धि बोली ऐ चोटी वालो, जो मुझको अपनाओगे ।
ताती ब्यार लगन ना दूँगी, तुम पीछे पछताओगे ॥
गऊ माता की सेवा करूंगी, जिससे अन्न कमाओगे ।
इक्कीस करोड़से तेतिस करदूँ. जो मोहे रगड़े जाओगे ॥
गर जोमोहे धरके भूलगये, तो चोटीकी सफाई पाओगे

मोहे छोड़कर याद रखो तुम, रामका नाम डुबाओगे ॥
गऊ माता का बींज रहे ना, किस से हल चलाओगे ।
यह म्लेच्छ तुमको खायेंगे, तुम खड़े खड़े डकराओगे ॥
जबसे तुमने छोड़ दी मैं, यह देश डुबाया है ॥ शु० ॥
शुद्धि बोली स्वामी जी से, मैं कटवों घर जाऊंगी ।
वह मेरी बहिन नसीबन करीबन, उनको शुद्ध कराऊंगी ॥
सुथनी छोड़ पहनोदूं लहंगा, सरपर चुँदड़ी उढ़ाऊंगी ।
गऊ गोबर से चौका देकर, गङ्गा जल चढ़वाऊंगी ॥
हवन कुँड तैयार करा कर उसमें यज्ञ कराऊंगी ।
या इलाइलिल्लाह निकालकर, फिर गायत्री जपवाऊंगी
मक्के तकसे पकड़ पकड़ कर, भर भर कर लाऊं गाड़ी ।
जो मेरा नाम असल शुद्धि है, (कट्टरोंकी) एकन छोड़ दाढ़ी
देश आर्यन का कर दूँगी, अब अड़ कर होगई ठाढ़ी ॥
सबको शुद्ध करती जाऊंगी जो कोई आवेगा आड़ी ।
कुरान छुड़ाकर वेद पढ़ादूं यही ऋषिने बताया है ॥ शु० ॥
शुद्धिने कहा स्वामीजी से, एक काम रहा और जबर ।
तख्त सातवें आस्मान पर, वहां खुदा का बना है घर ॥
चार फरिश्ते उठा रहे हैं, टिके नहीं हैं अधर पधर ।
पिस्तौलकी गोलियोंका बहाना, स्वामी नहीं गए हैं मर ॥
स्वामी गए हैं फलकके ऊपर, खुदाकी शुद्धि रहे हैं कर ।
हवन कुण्ड रच दिया जनेऊ, सरपर चोटी दई हैं धर ॥

होके शुद्ध खुशी हुआ अल्ला. फिर देखे है ठुमर ठुमर ।
जञ्जल सारी शुद्ध हो रही, शुद्धि लावे पकड़ पकड़ ॥
क्यों भूले डोलो भाई, क्यों करते हो नकर नकर ।
खदा शुद्ध हो गया तुम्हारा फिर तुमको काहेका डर ॥
चौदहवीं सदी लगी तुम्हारी शुद्धि घुस बैठी घर घर।
खत्राज़ा बिचारा रोवत डोले, यह तो पलटा खाया है ॥ शु०
फिर शुद्धि ने कहा आर्यों आज तुम्हारी आगई लार ।
पल्टन फौज सजाके चलदो. मैं भी तुमसे चलं अगार ॥
शुद्ध होंय तो सबसे अच्छे, नहीं मक्के को लेचलो लार ।
बम्बई तक तो रेल चले है, यहां से आगे चलें जहाज ॥
वहां से आगे ऊंट चलें हैं, खानेको नहीं मिलता नाज ॥
वहां भी पहुंच गये हम यारो, कई हुई तैयार समाज ।
बाकी रहा ईसा का कुनवा. वह लेके बैठं तत्काल ।
वही ९६ करोड़ गऊ होजांयगी. तुम होजाओगे मालामाल
"फतहसिंह" की कही मानलो. छुआ छूतका तोड़ोजाल
जिस दिनको तुम याद करोथे. आज वही दिन आया है ।शु०

ग़ज़ल नं० १४१ ।

उठो धर्मवीरो ! सहर होगईहै कि अब रात सारी बसर होगईहै ।
तुम्हें कुम्भकरणी छः मासी है छाई,
तबाह कौम अपनी मगर हो गई है ।
पड़ी कौम की कौम बे होश उफ़ क्या,
किसी बद नज़र की नज़र हो गई है ॥

संभालो संभालो ऐ चारहगरौ,
अब कि माता चिरागे सहर होगई है।
जो जां से गुज़रते हैं गैरों की खातिर,
तो हां रूह उनको अमर हो गई है॥
निकाला दिलों से अगर बुज़दिली को,
तो समझो महिम एक सर हो गई है।
संभल कर चलो राहे हुब्बे वतन में,
यह लायन भी अब पुरख़तर होगई है।
छिपाया हजार अपनी कमजोरियों को,
मगर अब तो घर घर खबर होगई है॥
जगाने से तेरे अगर "चन्द्र" जागे,
तो कहना ग़ज़ल पुरअसर हो गई है॥

ग़ज़ल नं० १४२।

किरकिरी हो जायेंगी सब शेखियां इस्लाम की।
अब लगे हिन्दू उड़ाने धज्जियां इस्लाम की॥
हम ऋषि सन्तान हैं पुल जिसने बांधे सिन्धुके।
फिर हकीकत क्या रखें यह नालियां इस्लाम की॥
तेग़ से तलवार से दहशत से फैला दीन यह।
चोटियां कुछ ले गईं हां! रोटियां इस्लाम की॥
देखलो, पढ़लो सफह इतिहास के सब रंग रहे।
सख्तियों पर सख्तियां खूंरेजियां इस्लाम की॥
आंख मारें कुछ नुकीली और कटीली तोक कर।
इश्क से बे दीन करती रंडियां इस्लाम की॥

मारते खांओं को अब तो हो चली ढीली अकड़।
पिल पिलाने लग गईं हैं पसलियां इस्लाम की ॥
मोलवी, हाफिज़, कुरैशी शुद्ध अब होने लगे।
होगई सब पर अयां कमज़ोरियां इस्लाम की ॥
अब परखने हम लगे "शर्म्मा" भले प्रकार से।
आर्य्यों की परखियां और बोरियां इस्लाम की ॥

ग़ज़ल नं० १४३।

खुदा के सामने मुस्लिम खड़े फरियाद करते हैं।
खबर ले ओ खुदा ये आर्य बरबाद करते हैं ॥
कुराने पाक को मद्दे मुकाबिल रखके वेदों के।
करें तर्दीद उसकी और हमें बेजार करते हैं ॥
खुदा के नाममें हज़रतका जबतक नाम न आए।
बता कर शिर्क पर ईमां हमें लाचार करते हैं ॥
बनाया शिर्क का मुजिद जो तूने नाम रख शैतां।
तुही शिर्कत का मबदा है यह यों इज़हार करते हैं
बनाया तूने जन्नत उसमें गिल्मा हूर क्यों रक्खे।
हुआ बदनाम खुद भी और हमें बदनाम करते हैं ॥

भजन नं० १४४।

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे ॥
उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे।

उसी के लिये हम जियेंगे मरेंगे ॥
गुंजायेंगे वेदों के हम गीत गाकर,
दिखायेंगे दुनियां पुरानी बनाकर ॥
उजाड़ेंगे शहरों को जङ्गल बसाकर।
बितायेंगे जीवन को सच्चा बनाकर ॥
उठायेंगे ऋषियोंकी आवाजको हम।
बनायेंगे फिर स्वर्ग संसार को हम ॥
मिटायेंगे सब सम्प्रदायों मतोंको।
बनायेंगे फिर आर्य सारे जगत को ॥
वही प्रेम गङ्गा फिर यहां पर बहेगी।
जो संसार की ताप माला हरेगी ॥
कहेगा जगत फिरसे एक स्वरमें सारा।
वही वृद्ध भारत गुरु है हमारा ॥

सोजे दिल नं० १४६।

शहीदे कौम का खूं रङ्ग लायेगा अयां होकर।
चमक उठेंगी आहें बेकसोंकी बिजलियां होकर ॥
जफा पर हो न तू नाज़ां बुरा अन्जाम है इसका
हजारों मिट गये बेदादगर नक्शे गुमा होकर ॥
हमारे लीडरों पर जुल्म गर करते रहे ज़ालिम।
हमारी हसरतें टूटेंगी उनपर बिजलियां होकर॥
न छोड़ेंगे कभी शुद्धि के हम प्रचार को क़ातिल।
उड़ें हरचन्द हस्ती अपनी गर्दे कारवां होकर॥

सितम के जुल्म के, वेदाद के अंजामको सोचा ।
चलावो तीर सीने पर न तुम अब बद गुमां होकर ॥
बहा कर प्रेम गङ्गा हम अछूतों को उठायेंगे ।
रखेंगे हाथ सर पर बेकसों के महरबां होकर ॥
वफा सैले फना होगा हमारे खंन नाहक से ।
जमीनो आसमां बहजायेंगे आबे रवां होकर ॥
ये सब बेकार जायेंगे तेरे पिस्तौल और खंजर ।
बरस जायेंगी आहें जब हमारी गोलियां होकर ॥
सितम ऐ "आफताब"! उसने किये क्या नो निहालों पर
किया बर्बाद बागे हिंद को बादे खिजां होकर ॥

हिन्द बच्चों का गीत नं० १४७ ।

ऐ दुश्मनो ! हिंद-जातिके बच्चों से आंखें चार करो ।
तुम धर्म का लेकर सबक दुनियां में परोपकार करो ॥
मरने का हमें नहीं खोफो खतर, दिल खोल कर हम पै वार करो
तुम छुरियों से पिस्तौलों से, दिल खोलके हम पै वार करो ॥
हम गर्व आज निहत्थे हैं, पर आर्य्य जाति के बच्चे हैं ।
हम धर्म न छोड़ेंगे हरगिज, तुम तीर जिगर के पार करो ॥
ऐ बांके जवानो ! आगे बढ़ो, मक्कारों से बिल्कुल न डरो ।
तलवारों के साये के तले, शुद्धि का तुम प्रचार करो ॥
जो शीश धर्म पर कटवाये, जो वेद की खातिर मरजाये ।
कुर्बान जो शुद्धि पर जाये, वह सीना तुम तैयार करो ॥
एक प्रेम की माला बन जावो, अब रूठे मन के मिल जावो ।
अब प्यारी हिन्दू-जाति से नफरत का दूर आजार करो ॥

गर अक्ल से काम नहीं लोगे, तो दुनियां से मिट जावोगे !
यह वक्त है अपनी जाति को, गफलत से तुम वेदार करो ॥
जो जुल्म की रस्म चलाते हैं, जो बच्चे अग़वा कराते हैं।
उन दुष्ट कमीने लोगों की, दुनियां में मिट्टी ख्वार करो ॥
ऐ "आफताब" ! इस दुनियां से, पापों की जुल्मत दूर हुई।
गफलत में सोने वालों को, अब आई सहर बेदार करो ॥

श्रद्धा के फूल नं० १४८ ।

डंका वेदों का जमाने में, बजा कर चल दिये ।
करके शुद्धि कुफ़ को हस्ती मिटाकर चल दिये ॥
मुर्दा भारत वर्ष को, जिन्दा करा कर चल दिये ।
मरते २ "ओ३म्" का नारा लगाकर चल दिये ॥
ज़िन्दए दर गोर आता है नजर अब्दुल रशीद ।
जुल्मका इंआम ज़ालिमको दिखाकर चल दिये ॥
तोप या तलवार से शुद्धि का मिटाना है मुहाल।
लोह दिलपर धर्मका नक़्शा जमा कर चलदिये ॥
था अनाथों की तड़प से आपका सीना फ़िगार।
कौम को बिगड़ी हुई हालत बनाकर चलदिये ॥
छोड़ कर घरबार को गङ्गा किनारे तप किया ।
आत्मिक शक्तिका पूरा बल दिखाकर चल दिये ॥
कर दिया बनवास में गो सारे जीवन को व्यतीत।
काङ्गड़ी में ज्ञान की गङ्गा बहा कर चल दिये ॥



ग़दर के शांत होने पर जो वृद्ध मकानों में से भाग नहीं सकते थे उनको इस तरह गोली से मारा गया था ॥

अब ज़लीलों ख्वार हिन्दू कौम रह सकती नहीं।
संगठन का नाद घर २ में बजा कर चल दिये ॥
खत्म जब उद्देश उनकी जिन्दागानी का हुआ।
सरकशों को दहर में नीचा दिखाकर चलदिये ॥
उम्र भर सुनते रहे बेकस अछूतों की पुकार।
बेनवा बेवाओं की धीर बन्धा कर चल दिये ॥
काम पर उपकार का निष्काम भाव से किया।
वेद की तालीम का सिक्का जमा कर चल दिये ॥
गोलियां सीने पै खाकर धर्म-वीरों की तरह।
जिन्दगी का राज दुनिया को बताकर चलदिये ॥
मरते २ भी दिखाया मुक्किरों का माजज़ा।
संग दिल जल्लाद का पागल बनाकर चलदिये ॥
जिन्दगानी में कहां अग़यार की खुलती जवां।
मरते २ मुफसिदों का दिल हिलाकर चलदिये ॥
खून छींटों से मुर्दा हड्डियों में 'आफताब"।
प्यारे वैदिक धर्म की गङ्गा बहा कर चल दिये ॥

ग़ज़ल नं० १४६।

खेलने को जान पर जो सूरमा तैय्यार हो।
जिसके इक २ सांस से इस देश का उद्धार हो ॥
उस पै धोके से सितमगर ने चलाई गोलियां।
हैफ़ श्रद्धानन्द पै ये बुज़दिलाना वार हो ॥
स्वर्गमें मिलजाय ऋषियोंको अमरजीवनका फल
बच्चा २ कौम पर मरने को गर तैय्यार हो ॥

रञ्ज क्या गर आप हम पर यों सितम करते रहे।
फिकर क्या गर आपकी शमशीर दिलके पार हो।
गोलियां सीने पै खाना फ़ख़ है उसके लिये।
वेद मारग में कत्ल होने को जो तैयार हो॥
मर्द मैदाने वफा को कर नहीं सकता फना।
तीरे जहर अलूदा हों या तेगे जौहर दार हो॥
लाजपत राय सा जिसमें शेर दिल मौजूद है।
मालवी सा शूरमा जिस कौम का सरदार हो॥
क्या मिटा सकते हैं उसका संगदिल नामोनिशां।
जिसकी नस २ में धर्म वीरों का खूं सञ्चार हो॥
खून से लिखा गया है सफह ये तारीख पर।
तुम सराये दहर में मक्कार हो गद्दार हो॥
आजमाइश में उसे क्या डाल सकते हैं अदू।
इम्तहां जिस कौमका इक दिनमें सौ २ बार हो॥
"आफताबे" सोख्ता दिलकी तमन्ना है यही।
मेरी गर्दन पर रवां बेदर्द की तलवार हो॥

ग़ज़ल नं० १५० ।

स्वामी की तरह मिलती है गर शान्दार मौत।
बहतर है ज़िन्दगी से ये दश लाख बार मौत॥
दुश्मन तुम्हारी ताक में रहते थे देर से।
खाये हुये ही बैठी थी तुम पर उधार मौत॥
तुम बेकरार रहते थे जाति की फिकर में।
और पीछे २ फिर रही थी बेकरार मौत॥

जीने का था वह रङ्ग तो मरने का है यह ढङ्ग ।
जिस पर हजार जिन्दगी कुरबां हजार मौत ॥
डाली है मर के आपने जाति में जिन्दगी ।
लायेगी बाग़े कौम में ताजा बहार मौत ॥
मरते नमूनियां से होनी न ये बहार ॥
बिस्तर तेरा बना गई हैं लाले जार मौत ॥
जी जाऊं जो इस तरह से मरना मुझे पड़े ।
"शैदा" नसीब हो मुझे यूं बार बार मौत ॥

भजन नं० १५१ ।

हिन्दुओ अब भी धर्म रक्षा के लिये तैयार हो ।
लाल लटते हैं तुम्हारे ख़ाब से बेदार हो ॥ हिन्दू० ॥
दुश्मनों ने ठान रक्खी है मिटाने की तुम्हें ।
तुम न जाने किस नशेमें इस क़दर सरशार हो । हिन्दो०
जां बलब है क़ौम इसके दर्द का सोचा इलाज ।
ज़िन्दगीसे आख़िरश क्यों इसकदर बेज़ार हो । हिन्दो०
रूह प्यारे रामचन्द्र की सुनो कहती है क्या ।
मेरी ख़्वाहिश थी कि वैदिक धर्मका प्रचार हो । हिन्दो०
कोई हिन्दू, ईसाई, मुस्लमां बनने न पाये ।
हो गर्म बाज़ार शुद्धि और अछूत उद्धार हो । हिन्द०
जावो जम्मू के इलाके में मचा दो तहलका ।
वेद मन्त्रों से गुनब्बर हर दरो दीवार हो । हिन्दू०
शेर मर्दो आगरे में जाके पहुंचो जल्दतर ।
ताकि बिछुड़े भाइयोंका फिरसे यूं उद्धार हो । हिन्दू०

गर्दिशे अफ़लाक जिसके सामने हो सर नगूं ।
फिर तुम्हारे पावों में गर्मिये रफ्तार हो ॥ हिन्दू० ।
वक्त आने पर पियो जामे शहादत शौक़ से ।
और ज़रूरत होतो मक़दी का लगा अम्बार हो । हिन्दू०
थोड़ा २ दो सहारा मुत्तक़िल होकर अगर ।
क़ौम दरियाये तला तुम ख़ेज़से भट पार हो ॥ हिन्दू०
उस के चौतर्फ़ा लगादो बाड ऐसी ख़ारदार ।
ताकि गुलशनमें गुलचोंका गुज़र दुशवर हो । हिन्दू०
दिल तड़प उठता है सुन २ कर मुसाफ़िरका मगर ।
क्या करे वह जेलमें जब बेबस और लाचार हो । हिन्दू०

भजन नं० १५२ ।

करोरे भाइयों वैदिक धर्म प्रचार ।

दयानन्द भूषण कुल भूषण, कह गये बारम्बार ॥ करो० ॥
भू मण्डल के हैं जो मत वादी, सब मानें हैं वेद अनादी ।
तुमने उनकी याद भुलादी, बिना पढ़े यह तुम मित्रो ॥
सब मानो हो हार ॥ करो रे० ॥ १ ॥
बिन विद्या ब्राह्मण हुये धूरत, क्षत्री हुये नपुंसक सूरत ।
वैश्य शुद्र हुये छल की मूरत, धर्म कामको करें कलङ्कित ॥
करते हैं व्यभिचार । करो रे० ॥ २ ॥
एक वेद पढ़े विप्र कहावे, दो पढ़ले ऋषि पदवी पावे ।
तीन पढ़े महर्षि बन जावे, प्रजापति पद मिले कहें ब्रह्मा ॥
जो पढ़ लेवे चार ॥ करो रे० ॥ ३ ॥

भजन नं० १५३।

ऐ हिन्दू भाई जागो ! किस नींद सो रहे हो।
वक्ते अज़ीज़ क्यों तुम बेकार खो रहे हो ॥ ऐ हिन्दू०।
मस्ते शराब हो कर बरबाद हो रहे हो।
क्यों आब आतशीं में बेड़ा डुबो रहे हो ॥ ऐ हिन्दू०।
बद रस्मियों में अपनी दौलत लुटा लुटा कर।
तुम अपने हक़ में कांटे दिन रात बो रहे हो ॥ ऐ हिन्दू०
इल्मो कमाल खोकर ज़र और माल देकर।
इफ्लास की बदौलत नाशाद हो रहे हो ॥ ऐ हिन्दू०।
मै पीके लाख का घर सब ख़ाक कर दिया है।
अब अपनी जान से भी क्यों हाथ धो रहे हो ॥ ऐ हि०
कस्बो कमाल छोड़ा मुँह इल्मो फ़न से मोड़ा।
अब नङ्गे क़ौम होकर ग़ैरत भी खा रहे हो ॥ ऐ हिन्दू०
तुम अपने हाथ लाये हो सब बलायें सर पर।
रंजो अमल के पत्थर तुम आप ढो रहे हो ॥ ऐ हिन्दू०
अग़ियार तुम से कौसों आगे निकल गये हैं।
तुम मलके दस्त हसरत क़िसमत को रो रहे हो ॥ ऐ हिन्दू
असलाफ़ की बुज़ुर्गी का है ग़रूर बेजा।
बेफ़ायदा गुज़िश्ता अज़मत को रो रहे हो ॥ ऐ हिन्दू०।
खुद करके कुछ दिखाओ यह देखना है हम को।
यों कहते सुनते रह कर क्यों वक़्त खो रहे हो। ऐ हिन्दू
यह ग़ैब की निदा है यह वक़्त की सदा है।
ऐ एक्ले क़ौम जागो ! किसनींद सोरहे हो ॥ ऐ हिन्दू० ॥

भजन नं० १५४।

धर्म बासुरी तू बजाये चलाजा।

जो सोते हैं उनको उठाये चलाजा ॥ धर्म० ॥

मिटादे तू नफ़रतको यकलख़्त दिलसे।

तराना मुहब्बत का गाये चलाजा ॥ धर्म० ॥

न दिलमें जगहदे तनफ्फ़रको हरगिज़

प्रेम और उल्फ़त बढ़ाये चलाजा ॥ धर्म० ॥

उठादे यह तफ़रीक सबकहो महकी।

तू नज़रोंमें सबकी समाये चलाजा ॥ धर्म० ॥

मुख़ालिफ़ से डरकर न तू हार हिम्मत।

सदा ओ३म् की तू लगाए चलाजा ॥ धर्म० ॥

ख़तर क्या है गर दूर मंज़िल है अपनी।

कदम अपना आगे बढ़ाए चलाजा ॥ धर्म० ॥

अछूतोंके कर बेहम को दूर दिलसे।

गले से तू सबको लगाये चलाजा ॥ धर्म० ॥

न खा ग़म अगर है मुखालिफ़ ज़माना

तू वेदों का डंका बजाए चलाजा ॥ धर्म० ॥

फ़िदा होके ऐ वर्क़ अब क़ौम पर तू।

तरक्क़ी का जीना बनाए चलाजा ॥ धर्म० ॥

ग़ज़ल नं० १५५।

शुद्ध हम करते हैं गर मेधों को मलकानों को।

रंज क्यों होता है बेसूद मुसलमानों को ॥ शुद्ध हम० ॥

आतिशे ग़ैज़ भड़कती है दिलों में उनके।
आके समझाय कोई मज़हबी दीवानों को ॥ शुद्ध० ॥
गुलशने हिन्द से फिर ओ३म् की आती है सदा।
खुश्क तकबीर चली अरबो व्याबानों को ॥ शुद्ध० ॥
शमये शुद्धि हुई वारे खुदा अब रोशन।
मौक़ये वस्ल मिला क़ौम के परवानों को ॥ शुद्धहम०।
वह भी दिन आयेगा अब फ़ज़्ले खुदासे जल्दी।
शुद्धि करलेंगे सभी मौलवियों खानो को ॥ शुद्ध हम०।
क़ौम का जलसा श्री काशी में था ऐ बेकस।
जाके देखा था वहां क़ोम के दीवानों को ॥ शुद्ध० ॥

भजन नं० १५६।

मरतबे बढ़ गये शुद्धि से वह मलकानों के।
कृष्णकी नगरी में दर्शन हुए महमानों के ॥ मरतबे०
दाम तज़बीर में क्या आयेंगे बेगानों के।
जोश में आये हुए खून हैं मलकानों के ॥ मरतबे०
ग़ोलके ग़ोल चले आते हैं मलकानों के।
झमघटे बज़्म में शुद्धि के हैं महमानों के ॥ मरतबे०
रंगे तबलीग़ से रोती है लहू चश्मे उदू।
रश्कसे खून हुए जाते हैं अरमानों के ॥ मरतबे०
क्या करें कोई हरीफ़े रुखे रोशन।
शमा के सामने पर जलते हैं परवानों के ॥ मरतबे०
वेद मन्त्रोंसे चलाया है कुछ ऐसा जाद।
दममें आता ही नहीं अब कोई बेगानों के ॥ मरतबे०

घोंट डालेगा गला वहशते दिलका फन्दा।
तौक़ पड़ जायेंगे गर्दन में ग्रेबानो के ॥ मरतबे०
गुलशने बज्मंमें कुछ फूल खिले है ऐसे।
रंग फीके नज़र आते हैं गुलिस्तानों के ॥ मरतबे०
हरतरफ़ दहरमें फैली वह ज़ियाए तौहीद
हैं चकाचौंद में अब. क़ाफ़िले ईमानों के ॥ मरतबे०
पासे दीं वह है. क़दम लेती है अक्सीर जुनूं
पाओं पड़ने लगी कड़ियां भी तो दीवानोंके। मरतबे०
अहले हक़ देखनो शुद्धि की मची है वहधूम
होश बिखरे नज़र आने लगे बेगानों के ॥ मरतबे०
रोक सकता है यह जोश मये उलफ़त कोई।
बन्द मँह हो नहीं सकते कभी पैमानों के ॥ मरतबे०
खुद बखुद दिल खिंचे जाते हैं जो शुद्धिकी तरफ़।
होसले आज तरक्की पै हैं मलकानों के ॥ मरतबे०
फिरसे गुलज़ार मोहब्बतमें बहार आई है।
फिर से सामान हुए ऐश के सामानों के ॥ मरतबे०

ग़ज़ल नं० १५७।

सरे बाज़ार करते हैं जो तहक़ीर शुद्धि की।
उन्हीं के मुँहसे सुन लेना कभी तक़रीर शुद्धिकी। सरे०
अगर आवाज़े हक़ शुद्धि नहीं है शेख़ जी साहब।
तो रखती है असर बिजलीका क्यों तक़रीर शुद्धिकी। सरे०
मैं जब दिलदादये वैदिक मज़हब हूं राहे हक़पर हूं।
न क्यों पेशे नजर हरदम रहे तसवीर शुद्धि की ॥ सरे०

नहीं रहता है अरसे तक ख़्याले मसजिदो कावा।
जो सुन लेते हैं मुल्ला जी कहीं तक़रीर शुद्धि की। सरे०
क़यामत का नज़ारा क्यों न नज़रों में समाजाते।
डराती है उन्हें सोतोंको जब तक़रीर शुद्धि की ॥ सरे०
मुख़ालिफ़ जिस क़दर हों सबके छक्के छूट जाते है
जिधर इकबार चलजाती है यह शमशेर शुद्धि को। सरे०
गई हशमत मिलेगी फिर इसीसे हिन्दुओ तुमको।
बनायेगी तुम्हें कुन्दन यही अकसीर शुद्धि की ॥ सरे०
उरूजे कामयाबी का यही ज़ीना ज़मुर्रद है।
जो करते हैं उन्हें करने भी दो तहकीर शुद्धि की। सरे०

भजन नं० १५८।

अब सुदर्शन चक्र शुद्धि का चलाना चाहिये।
वेद के दुशमन को अब चक्करमें लाना चाहिये ॥ अब०
वेद मुक़द्दस की शरण में जो न आये शौक से।
उनको अज़मत वेद पढ़कर के सुनाना चहिये ॥ अब०
मुनहरिफ़ जो वेद की तालीम से है अब इन्हें।
मौत्क़िद वेदे मुक़द्दस का बनाना चाहिये ॥ अब०
मुसलिमों के जबसे जो हो गये हम से जुदा।
दौड़कर उनको कलेजे से लगाना चाहिये ॥ अब०
आर्यो ! कसलो कमर अब शुद्धियों के वास्ते।
सारे मुल्ला मल्का नों को बहसों पहलू में भगाना बिठाना चाहिये ॥ अब०
हिन्दुओं में कशमकश है बेउसूली पड़ रही।

प्यार से फटकार से इसको मिटाना चाहिये ॥ अब०
आग तू तू और मैं मैं की लगी है बेतरह।
आलिश तफ़रीक़ को जल्दी बुझा। चाहिये ॥ अब०
मन्दिरों में दर्शनों को उनको जाने दीजिये।
और कुओं पर अछूतों को चढ़ाना चाहिये ॥ अब०
क़दर नको हिन्दुओं ने इन अछूतों की अगर।
खैर सल्लाह फिर उन्हें अपनी मनाना चाहिये ॥ अब०
अब शुद्धि सँगठन की धूम भारत में मची।
तुमको भाइयो! इसमें अब तन मन लगाना चाहिये। अब०

भजन नं० १५६।

ज़रा भी सोचा यह क्या सबब है,
जो हिन्दुओं का है हाल अबतर ॥
कि ऐसी तेज़ी से हो रहा है,
हर रोज़ इनका शुमार कमतर ॥ ज़रा०
इसी तरह पर रहेगी घटती,
गर इनकी तादाद आगे आगे।
तो कुछ दिनों में रहेगा इनका
जहां से नामो निशान मिटकर ॥ ज़रा-
कभी था बहत्तर करोड़ भारत में,
हिन्दुओं का शुमार लेकिन।
रही है बाईस करोड़ से कम,
अब अस्सी तादाद इनको घटकर ॥ ज़रा

अरब के उम्मी का पढ़ के कलमा,

हुये जुदा छः करोड़ हम से।

मसीह के गल्ले में जा मिले है,

मसीही चालीस लाख बनकर ॥ ज़रा-

रवां है ज़ुल्मो सितम अगर यह,

अछूत जाति पै हिन्दुओं का।

बनेंगे ईसा मसीह के चेले,

हैं जितने यहां पर चमार मेहतर ॥ ज़रा

भलाह ऊँचे वर्ण के लोगों को,

बद रूलूको का कुछ ठिकाना।

अछूत कौमों को यह समझते हैं,

कुत्ते शूकर से सख़्त बदतर ॥ ज़रा-

खुशी से कुत्तों को गोद में ले,

सुलावें बिस्तर पै साथ अपने।

मगर जो छूले चमार इनको,

तो सख़्त नाज़िल हो क़हर उसपर ॥ ज़रा

कुऐं का पानी तो भ्रष्ट हो जाय,

जो छू ले भूल कर चमार कोई।

वले नहीं दूध, घी बिगड़ता है,

कुत्ते बिल्ली की राल लग कर ॥ ज़रा-

रहे हैं जब तक यह लोग हिन्दू,

तो समझें नापाक सख़्त इनको।

हों ज्योंही ईसाई और मुसलमां,

तो पाकहों फिर एकदमके अन्दर ॥ ज़रा
रहे हैं जब तक यह गाय रक्षक,
है इनके छूने में दोष बेशक।
बने मगर जूहीं गाय भक्षक,
तो फ़ख़्रसमझ हैं इनसे मिलकर ॥ ज़रा
अबे तबे दूर हो परे हो,
सुने हैं जब तक रहें यह हिन्दू।
कटाके चोटी जब हों ईसाई,
बने तुरन्त ही हुजूर मिस्टर ॥ ज़रा-
कोई अगर हम से पूछे सालग,
ज़वाल के हिन्दुओं का बाइस।
तो साफ़ कह देंगे, फिर रहे हैं,
अक़्ल के पीछे यह लाठी लेकर ॥ ज़रा

भजन नं० १६०।

फ़ना नहीं है मोहब्बत के रङ्ग, बू के लिए।
बहारे आलम फ़ानी रहे रहे न रहे ॥ फ़ना० ॥
जनूने, हुब्बे देश का मज़ा शबाब में है।
लहू में फिर यह रवानी रहे रहे न रहे ॥ फ़ना० ॥
रहेगी आबोहवा में ख़याल की बिजली।
यह मुश्ते ख़ाक है फ़ानी रहे रहे न रहे ॥ फ़ना० ॥
जो दिल में ज़ख़्म लगे हैं वह खुद पुकारेंगे।
ज़बां की सेफ़ बयानी रहे रहे न रहे ॥ फ़ना० ॥

मिटा रहा है ज़माना देश का इल्मो अदब ।
यह मरमिटों की निशानी रहे रहे न रहे ॥ फ़ना० ॥
दिलों में आग लगे यह जयां का जौहर है ।
यह जमा ख़र्च ज़बानी रहे रहे न रहे ॥ फ़ना० ॥
जो करना है अभी करलो देश के लिए ।
यह आरजू की जवानी रहे रहे न रहे ॥ फ़ना० ॥

भजन नं० १६१ ।

उठ जाग देख भारत अब क्या है हाल तेरा ।
क्यों ख़ाक में मिला है जाहो जलाल तेरा ॥ उठ० ॥
पहली नहीं है सनअत हिरफ़त न है तिजारत ।
बुर्ने ज़वाल में है बद्रे कमाल तेरा ॥ उठ जाग० ॥
वह शूरमां कहां हैं प्रताप और सांगा ।
करता है फ़ख्र जिनपर हर नौनिहाल तेरा ॥ उठ० ॥
अफ़सोस लाल तेरे नाने जबों को तरसें ।
क़ब्ज़े में दुशमनों के होजाय माल तेरा ॥ उठ० ॥
तू था वफ़ा का तालिब एक मारे आस्तीं से ।
भारत ग़लत यह निकला आख़िर ख़्याल तेरा ॥ उठ०
बठे जिस शिजर पर जड़ काटते हैं उसकी ।
आंखें दिखा रहा है हम को ज़वाल तेरा ॥ उठ० ॥
क़दमों में तेरे गिर कर कहता है बक़ैं ख़ादिम ।
दिल चाहता है देखूं पहला जमाना तेरा ॥ उठ० ॥

भजन नं० १६२।

देखो तो स्वामी कैसा उपकार कर गया है।

भारत निवासियों को बेदार कर गया है ॥ देखो० ॥
बे होश बे ख़बर हम सोये हुए पड़े थे।
सबको जगा जगा कर हुशियार कर गया है ॥ देखो०
भारत की दुर्दशा में कोई कसर नहीं थी।
करके समाज क़ायम सुधार कर गया है ॥ देखो० ॥
वेदों का नाम तक भी भूले थे हम सभी जो।
वह हर जगह पे उनका प्रचार कर गया है ॥ देखो० ॥
वेदों का भाष्य करके विद्या व योग बल से।
सच्चे धर्म्म को ज़ाहिर इसरार कर गया है ॥ देखो० ॥
संस्कृत व मात्र भाषा जो हो चुकी थी मुर्दा।
उसका जिलाके फिरसे जानदार कर गया है ॥ देखो० ॥
हिन्दू गुलाम काफ़िरे कहलाये जो गये थे।
आर्य्य बना फिर उनको सरदार कर गया है देखो० ॥
मत और मज़हबोंकी दीवार और क़िलों को।
शक्ती के फावड़ेसे मिस्मार कर गया है ॥ देखो० ॥
गुरुकुल का वह तरीका बतलाके आर्य्यों को।
ब्रह्मचर्य आश्रम का उद्धार कर गया है ॥ देखो० ॥
होने न पावे कोई ईसाई और मुसलमां।
यों आर्य्यों को सेना तैयार कर गया है ॥ देखो० ॥
बेकस यतीम बच्चे मां बाप जिनके मर गये।
सब आर्य्यों को उनका ग़मख़्वार कर गया है ॥ देखो०

क्योंकर भला समावे कूंज़े में एक समन्दर।
क्योंकर बयां हो सारे जो कार कर गया है॥ देखो०।
मने न माने काई पर सच तो है यह सालिग।
बागे धर्म्म को स्वामी गुलज़ार कर गया है॥ देखो०॥

भजन नं० १६३।

जग बिच धुम्मां पईयां दयानन्द तेरीयां।
ऋषियों, मुनिया दी रीति चलाई इक प्रभू दी पूजा सिखलाई।
हुनतां मत्तां लईयां, दयानन्द तेरीयां॥ जग बिच०॥
ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ बताया, बानप्रस्थ, सन्यास सुझाया।
शास्त्रार्थ गल्लां कहियां दयानन्द तेरीयां॥ जग बिच०
छोटी उमर बिच ब्याह न करना, ो निभानी महा-बुख भरना।
सफल होगइयो कूकां, दयानन्द तेरियां॥ जग बिच०॥
बिन विद्या नहीं ब्राह्मण बनदा, लख फिरे चाहे तानें तनदा।
दसीयां खोलके कहीयां, दयानन्द तेरीयां॥ जग बिच०॥
मदिरा, मांस से चित्त हटाओ, पेट नूं न क़बर बनाओ।
सच्चीयां गल्लां कहीयां, दयानन्द तेरीयां॥ जग बिच०॥
पापी मनुष्य परे ही रहन, देश द्रोही पास न वेहन।
सत्यार्थ बिच कहीयां, दयानन्द तेरीयां॥ जग बिच०॥
खद्दर पावो सादे बन जाओ, करो कमाई देश उठाओ।
असा अजे न मत्तां लईयां, दयानन्द तेरीयां॥ जगबिच०
जिसने तैनू जहर खिलाई, उस दी भी तू करी भलाई।
वाह तेरीयां बेपरवाहीयां, दयानन्द तेरीय ॥ जगबिच॥

भजन नं० १६४।

है केवल आर्य्य समाज सबकी भलाई चाहने वाला।
होवे जहां किसी की हान, वहां पर देता यह बलिदान।
अर्पण करके अपने प्राण, सब का धर्म्म बचाने वाला।
जहां पर लाखों हिन्दू भाई, बनते मुसलमान ईसाई।
आखिर हुआ है यह ही सहाई. उनको गले लगाने वाला॥
देश में लाखों विधवा नार, निशि दिन करती हा हा कार।
फैला हुआ था अत्याचर, उनको यही बचाने वाला॥
जब उजड़ा था बीकानेर, मचा था चारों ओर अन्धेर।
वहां पहुंचा था यह ही शेर, मरतों को बचाने वाला॥
मौपले कई हुये बेईमान, ज़ोरा जोरी करे मुसलमान।
पहुंचा मालाबार उसी आन, दुखियोंको धीर बंधाने वाला॥
सच पूछो तो आर्य्य समाज, रखता भारत वर्ष की लाज।
तो भी बुरा कहैं मूर्ख आज, यही था सबको जगाने वाला॥
जो तुम चाहते हो कल्याण. इसके अर्पण करदो प्राण।
वैदिक धर्म्म में आवे जान. बिनती करे टोहाने वाला॥ है०

भजन नं० १६५।

दर २ रुलदे रामा भिलनी दे बेर।
हुंनता सुन ले साइयां अपनी दासी दी टेर॥
तेरी बंस मतवाली पीती मद दी पियाली '
सुन बेर बिच नाली कीते कूड़ियां दे ढेर॥ दर दर
रामा मुकच्चली बेरी बिना पानियों तेरी।

प्यास सही बथेरी चली जिन्द नहीं देर ॥ दर दर
लश्कर यचना दे आये चेर बेरीयां तो ढाए।
लद लद गज़नी पहुंचाये. बिकगये टके२ सेर ॥ दर-
हिन्दी मंगदे स्वराज्यपर नही दिल बिच लाज
असी पानी तों मुहताज रहं दे सजतो सो सबेर ॥ दर-
टोवे होन मुसलमान उते खूहां चढ़ान।
मेरे पुत्र पैर पान पै दी मुखते चपेड़ ॥ दर दर ॥

भजन नं० १६६।

शुद्धि का डंका बजरहा मिल हिन्दू जोर लगाओ।
भर देवो खजाना कौमी अब डुबती कौम बचाओ ॥
चली थी जब नादिर शाहो, बहुत मुसलमां होगये भाई।
दीन २ कर तेग चलाई, अब इन्हों को मोड मिलाओ ॥१॥
देखो मुसलिम किसतरह करते, अपनी कौमकी खातिर मरते
रोकने शुद्धि जरा न डरते. अब तुम भी डरको भगाओ ॥२॥
शुद्ध होना चाहें मलकाने, मुसलिम हुए खिलाफ धकाने।
जोश फैलाते फिर मुल्लाने, तुम गुस्सा जरा न लाओ ॥३॥
वेदों का एक धर्म पुराना, जिसको जाने सकल जमाना।
तुम जरा नहीं घबराना, कुछ करके जरा दिखाओ ॥४॥
देखो हमारे हिन्दू भाई, हो गये मुसलमान ईसाई।
हिन्दुओ अबभी अकल न आई, क्यों अपने लाल गंवाओ ॥५॥
सब हिन्दुओंको जा समझाओ, बाप दादाकी राह पै लाओ।
हिन्दू धर्म की लाज बचाओ, जय श्रद्धानन्द बुलाओ ॥६॥

भजन नं० १६७ ।

पिता जान बूझ कर क्यों बनते अज्ञान ॥ टेक ॥

पल में देश पराया होगा प्यारा हिन्दोस्तान ॥

कड़ी-गौरी के मुकाबले में होते ही तुम्हारी हार ।

कलको ही देख लेना हिन्दुओं पर अत्याचार ॥

मसजिदें बनेंगी और मन्दिर होंगे बिस्मार ।

पतिव्रता धर्म होगा देवियों को दुश्वार ॥

ऋषियों की सन्तान पिता जी क्यों बनते ॥ १ ॥

हिन्दको आबादी जो खोगे बहुत सा भाग ।

जायेगा बरबाद किया देके जगह २ आग ॥

कितने ही नगरोंके बैठे खण्डरोंपर बोलें काग ।

बेशुमार बेवा जिन्हें पति गये हंगे त्याग ॥

फिरेंगे यतीम रोते और गाते रुला राग ।

इसलिये पिता मेरे बेहोशी से जाओ जाग ॥

खो देकर ध्यान पिता जी क्यों बनते ॥ २ ॥

येभी रहे याद यदि तूने जो ये बेल बोई ।

करती हूं बयान गति हिन्दकी होवेगी सोई ॥

फैले सारे देश व विदेश में भी बदगोई ।

हिन्दुओं की राजधानी हिन्द से जावेगी ॥

क्याअजब फारस व कन्धार की सी हालतहोई

राम और कृष्ण का रहे न नाम लेवा कोई ॥

हो प्रचलित कुरान ॥ पिताजी क्यों बनते ॥ ३ ॥

आइन्दा तारीखों में पिता जी तुम्हारा नाम।

नफरत से करेंगे याद भारती पुरुष आम ॥
होगा न कलंक दूर चाहे लगें लाखों दाम।
ऐसे गुनाहगार के गुनाहों का कफ्फारा नहीं ॥
ऐसे पापियों का दुनियां में गुजारा नहीं।
कहें तेजसिंह सच कहने में इजारा नहीं ॥
मान चाहे मत मान ॥ पिता जी क्यों बनते ॥४॥

वेद कुरान के दो २ हाथ नं० १६८।

वेदो कुरान को आपस में मिलाये कोई।
असर तालीम का फिर उनकी दिखाये कोई ॥
क़ालिलु ज़ीन लायु मनून बाइल्ला।
मित्रस्य चक्षसा त्राक सुनाये कोई ॥
दुशमनों से न सवाई को कोई बात कहो ॥
सत्यमेव जयते नानृतम बताये कोई ॥
यम करूं मकरूल्ला वल्ला खैरुल मारकीन।
शुद्ध मपाप विशुद्धम तौसीफ गिनाये कोई ॥
आसमां जमीं बना तख्तपै अल्ला बैठा।
सपर्य गाच्छुक्र इधर ईश को ध्याये कोई ॥
अपने मुतवन्ना की ज़ौजे पै कोई आशिक़ है।
ज़ेवर भाभी का न पहिचान ने पाये कोई ॥
बन को जाता है कोई वाप का फर्मा वरदार ॥
कैद में डाल कर पानी न पिलाये कोई।
गवारा करता ना भाई की जुदाई भाई ॥

अपनी तलवार से सर साफ़ उड़ाये कोई ॥
शरण आये को किया राजतिलक हाथों से ।
नाज़ वरदारों को भी ज़हर खिलाये कोई ।
बच्ची नौ सालकीसे शादीकी तम्सील मिली
अटल ब्रह्मचर्य सेयां उम्र बिताये कोई ।।
"उदयसिंह" धर्म्मका दर्वाज़ा खुला है अपना
सदाक़त वेद की आज़माने को आये कोई ॥

ग़ज़ल नं० १६६ ।

करो प्रचार हिन्दी को शिरोमणी यह कहाता है ।
सरासर जुल्म करना इल्म उर्दू का सिखाता है ॥
बादशाह है अलिफ़ मग़रूर उन्तालीस हरुफ़ों में ।
रहे सीधा नहीं हरगिज़ कभी यह सर झुकाता है
रहम खाना तो इनके बादशाह का है नहीं ईमां ।
हमेशा जुल्म कर २ के ग़रीबों को सताता है ॥
मिला जिसवक़्त बेके साथकर बैठा हड़प उसको
मिटाकर सब निशां छाती पै यह डेरा जमाता है ॥
बिचारी जोम बैठी थी वह मिस्ले हामिला औरत
अलिफ़ ज़ालिम मगर उसके गर्भको भी गिराता है ।
देखकर कहर भागाऐन था पीछे को मुँह करके ।
मगर भगते के पीछे भी अलिफ़ शस्त्र उठाता है ॥
हैं उरके मानी दिल साहिब वदूको दोष कहते हैं ॥
हाथ भी लिखने वालों का पेटकी तरफ़ आता है ।
हो जिस तालीममें यह जुल्म हासिलकरना बेजा है

तुझे लानत "उदयसिंह" ग़ज़ल उर्दू में बनाता है ॥

भजन नं० १७० ।

देता है प्रेम की शिक्षा हमें हिन्दी का ज्ञान ॥ टेक ॥
अ आ हैं दो छत्र धारी, ई आदिक स्वर कर्म चारी ।
व व्यंजन प्रजा समान ॥ १ ॥

क के पग में थी बेड़ी, वो आने आकर तोड़ी ।
मिटा दिये अपने प्रान ॥ २ ॥

देखी राजा ने प्रजा सूनी, आ ने ताक़त की दूनी।
तजे शाही सामान ॥ ३ ॥

ईने रियायासे मिलकर, दीअपनो ऐढ़सब तजकर
चंवर दिया सरपर तान ॥ ४ ॥

उ ने जब की तैय्यारी, करूं वसूल माल गुज़ारी ।
पैरों में पड़ गया आन ॥ ५ ॥

ए ऐ को ख़याल आया, रियाया का मान बढ़ाया।
गाड़ दिये दौहरे निशान ॥ ६ ॥

थे अनुस्वार अनाथ विचारे, पैरों में फिरे थे मारे।
शीश धर रखलिया मान ॥ ७ ॥

सब भाषाओंकी माता, है इसमें सब कुछ समाता
जो कि कहि सके जबान ८ ॥

जो "उदयसिंह" सुख चाहो, इनका प्रचार फैलाओ
देश भारत दरम्यान ॥ ९ ॥

ग़ज़ल नं० १७१ ।

जिसको हम मोम समझते थे वो पत्थर निकला ।
जिसको हम यार समझते थे सितमगर निकला ॥
भला उस खुदा का हो हमको भरोसा क्योंकर ।
खुद खुदा का बना इबलीस ही काफिर निकला ॥
वेद अक़्दस की तो तालीम बस आला देखी ।
हमने कुरआन को जांचा तो वो गड़ बड़ निकला ॥
मर्दोंजन की सिर्फ बतलाते हैं हम एक शादी ।
उसको भी तर्क करे वो तो बहादुर निकला ॥
यहां मुतवन्ना को ज़ौजे पे रवा की शादी ।
क्या भला अच्छा किसी का ये करेक्टर निकला ॥
तौबा करने से सिर्फ सारे गुनह होते मुआफ़ ।
क्या हुआ अल्ला यह इक तौबे का नौकर निकला ॥
अक़्ल सब खर्च की शैतां न हुआ क़ाबू में ।
वाह अल्ला से तो शैतान हुनर वर निकला ॥
मकर मैं उससे करूं मुझ से मकर करता जो ।
वो खुदा क्या है मक्कारों का लीडर निकला ॥
क़र्ज़ लेता है खुदा मारफ़त मुहम्मद की ।
अच्छा देवालिया मियां का क़ादिर निकला ॥
देख कर शायरो यों जलके मुख़ालफ़ बोले ।
था तो शायर पर "उदयसिंह तो काफ़िर निकला ॥

दादरा नं० १७२।

सुनते जाना मियां जी इलहामी किताब !

फेंका ज़मीं पे लठ तो वो सांप बन गया,
मूसा के कपड़े लेके इक दिन पत्थर भग गया.
पीछे करना खुशामद चलावे हजाब ॥ १ ॥
देते गवाही पड़े वो बे मुँह करें कलाम,
हजरत को इकदफ़ा किया इक पत्थरने सलाम,
हुई दर्दे शिकम को दवाई पेशाब ॥ २ ॥
लठ मारते पत्थर के पानी निकला एक दम,
दो सेर आटा खाके हुए दोसौ मनुष्य बम,
आटा उतना ही बाकी था करलो हिसाब।३।
अब रुके पसीने से मुसलमां बनाए फिर,
मौत के भी होते हैं सतर हजार पर,
किया जख्मों को अच्छा लगाके लूआब ॥४॥
हजरत के जिस्मो थूक में खुशबू थी बेबयान,
तो जिस्म क्या था खूब थी अत्तार की दुकान,
होगा भबका कि खिचता जहां हो गुलाब ॥५॥
फ़लको जमीन बने पसीने की दबा से,
फट गया समन्दर था मूसा के असा से,
उछली दिखलाई टुकड़े हुआ माह तोब ॥ ६ ॥
सत्तर हैं हूर बहत्तर ग़िलमान की बहार,
समझो बहिश्त क्या है गोया चावड़ी बाजार,

बहतीं नहरें भरी हैं जिन्हों में शराब ॥ ७ ॥
साइन्स और अक़्ल को मट्टी पलीद है,
जिसको यह बतलाते कलामे मजीद है,
हुई बुद्धि की ताली लगाना अजाब ॥ ८ ॥
वेदों की रोशनी का "उदयसिंह" यां दख़ल,
कुरआं का करदो अरब को अनपेड पार्सल,
नहीं भारत में इसकी जरूरत जनाब ॥ ९ ॥

भजन नं० १७३ ।

भक्त के बसमें हैं भगवान,
समझ मन मूरख ये अज्ञान ॥
झूठे बेर शवरीके भाये, साग विदुर के प्रेम से खाये ।
त्याग दुर्योधन का पकवान ॥ भक्त० ॥
भक्त हेत डोले बन बन में, बलकल वस्त्र धारके तन में।
तोड़ा रावण का अभिमान ॥ भक्त० ॥
भक्त हेत जो प्यादे धाये, ग्राहसे गज का फन्द छुड़ाये ।
'भ्रमर' रे धर तू उन्हींका ध्यान ॥ भक्त० ॥

ग़ज़ल नं० १७४ ।

भारत वीरों की याद में यह गाना भी रोना है ।
पानी नहीं है पात्रमें, आंसुओंसे मुँह धोना है॥
हुए धर्म्मवान् धनवान्, इसी भारत में ।
और बड़े बड़े विद्वान्, इसी भारत में ॥
थे बलवानों की खान, इसी भारत में ।

था सब से ऊंचा ज्ञान, इसी भारत में ॥
अब उन्हीं के हम सन्तान, हुए अज्ञान,
मिटा सब मान, गई सब शान,
हाय ! आलस्य और उन्माद में, सब खोया और खोना है ॥
यह गाना भी रोना है ॥

भजन नं० १७५ ।

टेक—भगवान भक्त मुझको भारत का तू बनादे ।
और देशहित की तनमें एक आग सी लगादे ॥
कर्तव्य पथसे हरगिज पीछे कदम न रक्खूं ।
सतव्रत धैर्य धारण करना मुझे सिखादे ॥
स्वतन्त्रता की लहरें हर दम हृदय में उठें ।
परतन्त्रता की बू को मन से मेरे मिटादे ॥
बातें खुशामदाना करना कभी न सीखूं ।
चाहे उदू विलाशक सीने पै गन लगादे ॥
जो बात हक हो कह दूं कहकर कभी न लौटूँ ।
जल्लाद चाहे तनके टुकड़े मेरे उड़ादे ॥
पूरन की यह विनय है हे दीनबन्धु भगवन् ।
भारत के हर वशर को आज़ाद तू बनादे ॥

गजल नं० १७६ ।

सुना है तेज़ करते हैं दुबारा धार ख़ञ्जर की ।
करेंगे आजमायश क्या मुक़र्रर वह मेरे सर की ॥
सबब पूछा तो यों बोले नहीं ज़ाहिर ख़ता कोई ।
मगर कुछ दीख पड़ती है शरारत दिलके अन्दरकी

उजाड़े घोंसले किनने चमन बरबाद कर डाले ।
शरारत उनकी नस नसमें भरी है खूब बन्दर की ॥
चलेंगी कब तलक देखें ये बन्दर घुड़कियां उनको ।
नचावेगी उन्हें भी एकदिन लकड़ी कलन्दर की ॥
मेरे दर्दे जिगर में आह में नाले में शीबन में ।
नज़र आती है हरसू सूरतें ज़ालिम सितमगर की ॥
खमीदा कर के गर्दन को कहा तेग़ाज़माई हो ।
रह गई कब्ज़ए क़ातिल में ख़ाली मूंठ ख़ंजर की ॥

ग़ज़ल नं० १७७ ।

स्वदेशी प्रेम जनता में अगर एकबार हो जाये ।
हमारा राज्य भारत में बिना तलवार हो जाये ॥
वस्त्र बनने लगें सुन्दर, हमारे हिन्दमें जिस दिन ।
उसी दम मानचेस्टर का, नरम बाज़ार हो जाये ॥
विदेशी वस्तु लेने से जभी हाथ धो बैठें ।
तभी आधीन यह अपनी कड़ी सरकार होजाये ॥
सुदर्शन चक्र चर्खे को अगर सब हाथ में लेलें ।
भयानक तोप भी उससे यहां बेकार हो जाये ॥
स्वदेशी प्रेम मिल गायें अगर श्री राम❀भारतमें ।
बगीचा हिन्द का सूखा अभी गुलजार हो जाये ॥
न बेचें जो रुई अपनी कभी हम हाथ गैरों के ।
बनाना वस्त्र का उनको बहुत दुश्वार हो जाये ॥
बचालें द्रव्य जो अपना विदेशी के लुटेरों से ।
अभी दिन हमारा देश यह धनवान हो जाये ॥

ग़ज़ल नं० १७८।

किस से सिखा है सख़्त शीरी सुनाना ज़ालिम।
मिस्ल सैय्याद के यह जाल बिछाना ज़ालिम ॥
आप के स्कूल मदर्सों का यही है मक़सद।
सिर्फ तालीम गुलामाना पढ़ाना ज़ालिम ॥ १ ॥
हिन्दू-मुलसिम तो रहे लड़ते सदा आपस में।
एक का एक उदू हम को बनाना ज़ालिम ॥ २ ॥
कारख़ानों में तुम्हारे ही बने हम नौकर।
चाहता है कुली तू हम को कहाना ज़ालिम ३ ॥
है यह तहज़ीब कि जल्लाद को तस्लीम करो।
'जी हजूरी' सबक़ हमको सिखाना ज़ालिम ॥४॥
आर-बी-और के-सी-आई खुशामद से बने।
रंग खुद गर्जियाना हम पे चढ़ाना ज़ालिम ॥५॥
फ़ायदा अपनी तिजारत से उठाने के लिये।
हिन्द वालों के अंगूठे भी कटाना ज़ालिम ॥ ६ ॥
अब न हर्गिज गलेगी दाल यहां पर तेरी।
क्योंकि अब हो चुका तबदील ज़माना ज़ालिम ।७।
चन्द्र की आहो फुगां इतना असर रखती है।
भूल जायेंगे ग़रीबों को सताना ज़ालिम ॥ ८ ॥

ग़ज़ल नं० १७९।

अब तो हम झोली गले डाले हुये बैठे हैं।
दर पै तेरे माता साधू हुये बैठे हैं ॥ १ ॥

चोर भी आयें, लूटें वो सतायें हमको।
हम तो इस द्वार पै कङ्गाल हुये बैठे हैं ॥२॥
भेजलो जेलमें भी हमको ऐ भेजने वालो।
कष्ट होगा कुछ भी नहीं तीर्थ समझेबैठेहैं ॥
आह निकलेगी नहीं फांसी चढ़ावे कोई।
स्वर्ग का द्वार उसे माने हुये बैठे हैं ॥ ४ ॥
गोलियां तू भी चलाले शौकसे आकर डायर।
मात्र-प्रेम में 'पागल' हम तो हुये बैठे हैं ॥५॥

भजन नं० १८० :

हज़ारों आफ़तें पिन्हां हैं उनकी मेहरबानी में।
हमारी मौत का सामां है उनकी पासबानी में ॥
अभी उनके तबस्सुम से अगर कलियां चटकती हैं।
अज़ारों गुल गिलेंगे देखना अहदे जबानी में ॥
चर्ख़ चक्करमें पड़कर भूल जावेगा सितम करना।
तमाशा जब दिखावेंगे लगाकर आग पानी में ॥
एक गुलके लिये बुल्बुल शोर इतना मचाती है।
हुए कितने चमन बरबाद उनकी बागवानी में।
रहेंगे चैन से उनकी हकूमत में गलत समझें।
निकाली बालकी भी खाल अहदे हुक्म रानीमें ॥
वतनके वास्ते जो कुछ, होसके क्योंन कर गुजरें।
जियेंगे और कितने रोज़ हम इस दारफ़ानी में ॥
अरे बुल्बुलनकर गिरिया चमनमें फस्ले गुल होगी
शकिस्ता शाख़ भी फूलेगी अपनी बाग़ बानी में ॥

ग़ज़ल नं० १८१ ।

किस पे हो जाती है मालिक की महर देखेंगे ।
किसका पड़ता है ज़माने पै असर देखेंगे ॥
दोनों मशग़ूल हैं हल करने में मतलब अपना ।
बाकी रह जाती है अब किस में कसर देखेंगे ॥
इन्हें आज़ादी का दावा है उन्हें ज़ोर का दम ।
कौन रह जाता है अब जेरो जबर देखेंगे ॥
उधर ग़रूर हुकूमत इधर है दर्दे वतन ।
कौन झुक जाता है अब लोह के दर देखेंगे ॥
खौफ़े सरकार से दबते हैं असहयोगी या ।
खुद दबी रहती है सरकार की डर देखेंगे ॥
फैसला होता है आज़ादी औ गुलामी का ।
कौन करता है फिदा तेग पै सर देखेंगे ॥

भजन नं० १८२ ।

तुम्हारा जितना जी चाहे सितम मज़लूम पै ढालो ।
कलेजा चीर डालो मेरी आंखों को निकलवालो ॥
मेरी नस नसको खेंचो और रग रग मेरी कटवालो ।
यह हाज़िर है बदन मेरा इसे कोल्हू में पिलवालो ॥
मगर मैं देश सेवा का जो प्रण है वो न तोड़ूँगा ।
रहूंगा सत्य पै क़ायम ये न छोड़ा है न छोड़ूंगा ॥

भजन नं० १८३ ।

ये आरज़ू है मेरी भारत पै वार कर दूं ।
तन मन जिगर कलेजा सब कुछ निसारकरदूं

ऐसी हवा चलाऊं जायें यह दिन खिज़ांके।
भारतके गुलिस्तां में मौसम बहार करदूं ॥
ईश्वर दे मुझको हिम्मत साहस दे होसला दे
भारत की उन्नती की नैया को पार करदूं ॥
ऐसी करूं तपस्या स्वराज्य लेके छोड़ूं।
मिट जाय बेक़रारी दूर इन्तजारी करदूं ॥

ग़ज़ल नं० १८४।

हमें उनकी तिरछी नज़र देखना है।
ये छाती है क्या क्या क़हर देखना है ॥
उधर देखना है सफ़ाई निगाह की।
इधर आज़माइश जिगर देखना है ॥
उधर हाथ क़ातिलके हों खून से तर।
इधर लाखों मक़तल में सर देखना है ॥
तड़पते ज़मीं पर पड़े हों हज़ारों।
हज़ारों को बे बालों पर देखना है ॥
ये सब कुछ होबेदाद क़ातिलको लेकिन।
न पहुंचे ज़रा भी ज़रर देखना है ॥
कभी अपनी जानिबसे उफ़तक न निकले
असहयोग का ये असर देखना है ॥
कदम यूंही आगे बढ़ाया जो 'अहक़र'
तो फिर अपना आजाद घर देखना है ॥
सुनी है बहुत हमने तारीफ़ 'अहक़र'
अलीगढ़ है कैसा शहर देखना है ॥

भजन नं० १८५ ।

हथकड़ी जो हाथ में डाली मेरे सरकार है ।
देश के आज़ाद करने का यही हथियार है ॥
फूंक देगी इस तरह से मिस्ल लङ्का को तरह ।
आह पुरतासीर यह जंज़ीर की झनकार है ॥
जेलका किसकोहै खटका किसकोहै सूलीका डर
देश पर कुरबान होने को हर एक तैयार है ॥
बच्चा बच्चा हिन्द का है होगया सीना सिपर ।
रङ्ग लायेगा बदन का खून फिर इक बार है ॥
रायसाहब एम०ए०बी०ए० ख़ान बहादुर कोई हो ।
कद्र इनकी कुछ नहीं हरइक जलीलो ख्वार है ॥
जिनको डर होजेलका फांसीका खतरा होजिन्हें
चूड़ियां वह पहिनलें उनका यही सिंगार है ॥
नई कहना आज से अपने लिये दें छोड़ वह ।
जो चापलूसी के लिये जोरूसा ताबेदार है ॥
तेग हों तर्कें ताऊन की स्वदेशीकी हो ढाल
फिर बहादुर देश अपना अपना कारोबार है ॥

ग़ज़ल नं० १८६ ।

एक मुद्दत से यह ख्वाहिश थी कि हम आज़ाद हों ।
इस तरह गैरों के हाथों से न हम बरबाद हों ॥
कर के आजादी को हासिल हिन्द वाले शाद हों ।
उजड़े पिछले हिन्द के वीरान फिर आबाद हो ॥
खूब धोखे चखमे खाये हाय पौलिसियों के साथ ।

खूब असहयोगी बने इस कौम सरकारी के साथ ॥
पर नतीजा यही निकला ढाक के हैं तीत पात।
वायदे जो कुछ भी थे वक्त की थी एक बात ॥
इन से आजादो के मिलने की तमन्ना है फिज़ूल।
मांगने से मौत भी मिलती नहीं है बस फिज़ूल ॥
फिर क्यों न आज़ादी मिले जब गांधी से प्रतिपाल हों।
भाग जायें दुश्मनाने हिन्द सब आज़ाद हों ॥

भजन नं० १८७।

टेक-मुल्क धोखेसे छीना हमारा. हमको वापिस दिलादे खुदारा
याद पहिले की अब हमको आती, आह कर २ के फटें छाती।
बेबसी में न कुछ पार बसानी. चल रहा ग़मका सीने पै आरा
मुल्क धोखे० ॥१॥
चार मन का कभी नाज खाया. जो बुज़ुर्गों ने हम को बताया।
दूध भी डेढ़ मन का बिकाथा, हिन्द था उन दिनों गुलहज़ारा ॥
मुल्क धोखे० ॥२॥
हाय बेकस हुए हिन्द वाले, जो लड़कपन में नाज़ों से पाले।
पड़ रहे जानों के अब तो लाले. देश भारत फिरे मारा मारा ॥
मुल्क धोखे० ॥३॥
अब ग़रीबों की यह इलतजा है. बेकसों का तू मालिक खुदा है।
पूरा कर हिन्द का मुद्दा है, लीना ज्वाला ने तेरा सहारा ॥
मुल्क धोखे० ॥४॥

ग़ज़ल नं० १८८।

यह लायगी जर खींच कर देख लेना।
स्वदेशी का यारो असर देख लेना ॥

गरीबां की हो जायेगी इससे चांदी।
फक्कारों के हाथों में जर देख लेना॥

मिलेगी यहां चीज अच्छी से अच्छी।
इधर देख लेना उधर देख लेना॥

यह कहते हैं हिन्दोस्तां के जुलाहे।
हमारा भी साहिब हुनर देख लेना॥

कहा कबकी डासन के जूते न पहनो।
मगर साहिबो अपना सर देख लेना॥

भजा अंगरेजी जबकुछ इसबासनी में।
तोफिर सबको शीरोशकर देखलेना॥

तुम अब मगरबी हुस्न पर मरनेवालो।
जरा आंख भर इधर देख लेना॥

कभी गैर से मुफ्त कुछ भी न लूंगा।
मेरा दिल यह मेरा जिगर देखलेना॥

अगर चलगया साहिर यह हिन्द अपना
तो शेहरा हमारे ही सर देख लेना।

कव्वाली नं० १८६।

नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते।
लाज भारत की बचा जायेंगे मरते मरते॥
जान पर खेल ही जायेंगे अगर हम तो भी।
सैकड़ों को ही जिला जायेंगे मरते मरते॥
कह वतन होंगे खुदा इनको तो होना ही है।

हम तो बिछुड़ों को मिला जायेंगे मरते मरते ॥
वह कोई और हि है जो रोके रुलाके मरते ।
हम रकीबों को हंसा जायेंगे मरते मरते ॥

ग़ज़ल नं १६० ।

अब अहले हिन्द कहदो सब एक जुबान होकर ।
हिन्दोस्तां रहेगा हिन्दोस्तान होकर ॥
आपसमें हम रहेंगे जिस्म और जान बनकर
पर अब नहीं रहेंगे हिन्दी गुलाम बनकर ॥
अय नौज़वानो तुमपर इज्जतका ताज होगा,
भारत निवासियोंको जिस दिन स्वराज होगा
दुनियां के लोग हमपर सुनलक नहीं हसेंगे,
चालों में दूसरों की अब हम नहीं फसेंगे ॥

ग़ज़ल नं० १६१ ।

इन यवनन को करतूत सुनाऊं तोहो हरे २ सुनाऊं
तोही सुन सजनी ॥
हुआ दुष्ट जैचन्द बिगाड़ा बना बनाया काज,
"मौहम्मद गोरी" ने आकरके पकड़ा 'पृथ्वीराज'
बिगाड़ी सब बात बनी ॥ इन० ॥
आंखोंमें श्री "पृथ्वीराज" के फेरी नील सलाई,
आंख फोड़दी इन यवनों ने और फिर कैद कराई,
दुष्टता कही घनी ॥ इन० ॥

छक्के छूटे योधाओं के जब से आई फूट,
आर्यवर्त को पाय २ कर यवन लगाये लूट,
बहुत की फ़ना फ़नी ॥ इन ॥
रजपूतों को लड़ा २ कर किया खूब कमज़ोर,
लूट मार का भारत खण्ड में रहे मचाते शोर,
हुकूमत कर अपनी ॥ इन० ॥
ग्यारह वर्ष का वीर हकीकत सूली दिया चढ़ाय,
जल्लादों को दया न आई किया बड़ा अन्याय,
खड़ो रोवे जननी ॥ इन० ॥
हाय गुरु गोबिन्द सिंह के दो बच्चे सुकुमार,
दीवारों में चुनवा दिये किया अत्याचार,
सुनो प्यारो भगनी ॥ इन० ॥
"मनी सिंह सर्दार को प्यारो मांस २ की काट
हायन की उम्र शूरवीर ने रहा लगाता डाट
सही नशतर की अनी ॥ इन०
चर्खी में बहुतक उटबाये इन यवनों ने हाय
पिलवाए कोल्हू में सदहा, सदहा दिये नशाय
जहादी डोर तनी ॥ इन०
"नादिरशाह" ने हाय कराया कई दफा कत्लाम,
वेद शास्त्र सब जला २ कर किये गर्म हम्माम,
घरों में दी अग्नी ॥ इन० २ ॥
जगह २ पर बूचड़ खाने खोल किया अन्याय,

अन गिन्ती गौवें कटवादीं इन यवनों हाय,
लहू में जोब सना ॥ इन० ॥
चोटी तिलक जनेऊ तोड़े काटे राज कुमार,
निर्दोषी दीनों दुखियों पर चली खूब तलवार,
करी अति कटा छनी ॥ इन० ॥
अनगिन्ती कन्या अबलायें लई घरों में डार,
जबरन पकड़ २ कर उनसे किया हाय व्यभिचार,
दुष्टता करी घनी ॥ इन० ॥
बिन गालो और गलौजके यह कभी न करते बात,
यह इनको तहज़ोब सभ्यता दुनियां में विख्यात,
हैं देखी और सुनी ॥ इन० ॥
हिन्दू बच्चे हाय किरोड़ों कर डाले बेदीन,
मुसलमान करने के लिये बहुत ले गये छीन,
लड़ाईरही इसीसे ठनी ॥ इन० ॥
मन्दिर और मूर्ति तोड़ी लूटे सब शृंगार,
ज़रो ज़वाहर सभी ले गये दीने कष्ट अपार,
दुखी किये रंक धनी ॥ इन० ॥
मित्र नहीं हो सकते हरगिज तजकर निज मर्याद,
बैरी हैं सब हिन्दू मत के रखना इसको याद,
सभी किया सुन्नी ॥ इन० ॥
कबरें पूजो तुम इन यवनों की ज़रा न आती शर्म,
मास खालेय माल तुम्हार करें अनेक कुकर्म,

पापती तुम्हीं बनी ॥ इत्य० ॥

मियां मदार भूल मत पूजो दो अब इनको छोड़.
"शर्मा जलेसरी" ने इनका भण्डा दिया फोड़,
जियो जगो रमनी ॥ इत्य० ॥

भजन नं० १६२ ।

कहैं क्या कि स्वामी दयानन्द क्या था,
ख़ुदा का फ़रिश्ता था या देवता था ॥
कि जिसके विद्याबलसे हिली दुनियासारी,
वही डूबती किश्ती का नाख़ुदा था ॥
ग़र्ज़ें कोई माने न माने मुसाफ़िर,
दयानन्द दर्दे वतन की दवा था ॥

भजन नं० १६३ ।

दोहा—जो होता हिन्दुओं में, पूरा पूरा मेल ।
ता काहे को बिगड़ता, बना बनाया खेल ॥
टेक—करो आपस में मेल, मानो बात हमारी ।
जब तक नहीं मेटो आपसकी बैर विरोध लड़ाई ।
तो इन दुराचारी के हाथों से हिन्दू कौमका भाई ॥
औसत निकलेगा तेल ॥ १ ॥
जो संगठन तुमने किया नहीं रहे नियारे नियारे ।
तो इक्कीस करोड़की नाकमें सात करोड़की प्यारे ॥
पड़ी रहेगी नकेल ॥ २ ॥
नहला दहला और गुलमटे बिबिया बादशाह सारे,

एक इक्के के सन्मुख आकर सब लाचार बिचारे,
तास का देखो खेल ॥ ३ ॥
जब तक तार से तार न मिलता कान मले जाते हैं,
तबले पर भी पड़े नजर आते हैं,
हत्थी और हथेल ॥ ४ ॥
"तेजसिंह" कहता मित्रो करो मेल का मेला,
बिनामेलके स्वराज्य तो क्या लोगे मिले न कच्चा धेला
भरो चाहे कितनी ही जेल ॥५॥

ग़ज़ल नं० १९४ ।

टेक–पति होजा हिन्दू फेरि बनेगी खीर ।
अल्लाह की जगह पै हम ईश्वर की करेंगे पूजा ।
ईश्वर के समान जग में और नहीं कोई दूजा ॥
होली के दिनों में हम बनायेंगे लड्डू और गुंजा ।
ईद और बकरीद छोड़ सलूनों को मन में धारा ॥
खतना को खतम करके जनेऊ गले में डारो ।
करती हूं निवेदन हाथ जोड़ इसे मतना टारो ॥
मुझे मतना करो अधीर ॥ १ ॥
नारी का निवेदन सुन मियां जी खड़े हैं दङ्ग ।
मैं तो हूं बीमार तुझे शुद्धि का चढ़ा है रङ्ग ॥
रबड़ी खीर खाने की जब मुझ में तमीज़ होगी ।
दूर होंगे दुःख सारे सुःखों के बनेंगे भागी ॥
आप की कमज़ोरी मियां चन्द दिनमें दूर होगी ।
होगा पुष्ट शरीर ॥ २ ॥

आप को अपनी अब शुद्धि तो करानी होगी ।
पहन कर गले में जनेऊ चोटी भी रखानी होगी ॥
महावीर की पूजा तुम्हें होली पै करानी होगी ।
हिन्दुओं का धर्म जैसा, और कोई दीखे नहीं ॥
वेदों के मुक़ाबिले में कुरान कोई चीज़ नहीं ।
गउओं का कटाना कोई इन्सान का काम नहीं ॥
लखो पराई पीर ॥ ३ ॥
बुद्धि चाहो शुद्ध तुम मांस खाना छोड़ो पती ।
मांस खाने से नाथ भ्रस्ट हो जाती है मती ॥
भोगने पड़ेंगे कष्ट होगो ना परलोक गती ।
हाथ जोड़ कहूं तुम कहना मानो प्राणाधार ॥
दिल की लगी बहुत पुरी रावे बीबी जार ।
'उम्मेदसिंह' बिना शुद्धि होगा नहीं बेड़ा पार ॥
करलो शुद्ध शरीर ॥ ४ ॥

ग़ज़ल नं० १६५ ।

मेरा रङ्ग दे बसन्ती चोला ।
इसी रङ्गमें रङ्गके शिवा ने मां का बन्धन खोला ।
यही रङ्ग हल्दी घाटी में खुल कर के था खेला ।
नव बसन्त में भारत के हित वीरों का यह मेला,
मेरा रङ्ग दे बसन्ती चोला ॥

भजन नं० १६६ ।

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है ।

रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में,
लाख़्ज़ाते सहरान वर्दी दूरिये मंज़िल में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां,
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है।
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानोंकी भीड़,
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है
आज मकतल में ये क़ातिल कह रहा है बार बार,
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है।
ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत ! मैं तेरे ऊपर निसार,
अब तेरी हिम्मतकी चरचा ग़ैरकी महफ़िलमें है
भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलामख़ाना।
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना॥
अपने ही हाथों से सर कटाना है हमें।
मादरे—हिन्द को सर भेंठ चढ़ाना है हमें॥

भजन नं० १६७।

तू वह मये खूबी है अय जलवये जानाना।
हर गुल है तेरा बुलबुल हर शमा है परवाना॥
सरमस्ती में भी अपना सा कोके क़दमपर हो।
इतना तो करना करना अय लग़ाज़िशे मस्ताना॥
या रब इन्हीं हाथों से पीते रहें मस्ताना।
या रब वही साक़ी हो या रब वही पैमाना॥
आंखें हैं तो उसकी हैं क़िसमत है तो उसकी है
जिसने तुझे देखा है अय जलवये जानाना॥

छेड़ो न फ़रिश्ते तुम ज़िक्रे ग़मे जानानां।
क्यों याद दिलाते हो भूला हुआ अफ़साना ॥
यह चश्मे हक़ीक़ी भी क्या तेरे सिवा देखें।
सिजदे से हमें मतलब काबा हो या बुतख़ाना ॥
साक़ी को दिखा देंगे अन्दाज़ फ़क़ीराना।
टूटी हुई बोतल है टूटा हुआ पैमाना ॥

भजन नं० १९८।

मुर्ग़े दिल मत रो यहां आंसू बहाना है मना।
अन्दलीबों को क़फ़स में चहचहाना है मना ॥
हाय जल्लादी तो देखो कह रहा सैय्याद यह।
वक्त ज़िबहा बुलबुलों को तड़फड़ाना है मना ॥
वक्त ज़िबहा जानवर को देते हैं पानी पिला।
हज़रते इन्सान को पानी पिलाना है मना ॥
मेरे खूंसे हाथ रङ्ग कर बोले क्या अच्छा है रङ्ग।
अब हमें तो उम्र भर मरहम लगाना है मना ॥
अय मेरे ज़ख़्मे जिगर नासूर बनना है तो बन।
क्या करूं इस ज़ख़्म पर मरहम लगाना है मना ॥
खूने दिल पीते हैं असग़र खाते हैं लख़्ते जिगर।
इसक़फ़स में क़ैदियों को आबो दाना है मना ॥

ग़ज़ल नं० १९९।

वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहां होगा ॥

जुदा मत हो मेरे पहलुसे अय दर्दे वतन हरगिज़।
न जानें बादे मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा ॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेलें।
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशां होगा
इलोही वह भी दिन होगा जब अपना राज्य देखेंगे।
जब अपनीही ज़मीं होगी और अपना आसमां होगा

ग़ज़ल नं० २००।

हैफ़ हम जिस पै कि तैयार थे मर जाने को।
यकायक हम से छुड़ाया उसी काशाने को॥
आसमां क्या यही बाकी था ग़ज़ब ढाने को।
लाके गुरबत में जो रक्खा हमें तड़पाने को॥
क्या कोई और बहाना न था तरसाने को॥
फिर न गुलशन में हमें लायेगा सैय्याद कभी।
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फ़रियाद कभी॥
याद आयेगा किसे यह दिले नाशाद कभी।
हम भी इस बाग़ में थे कैदसे आज़ाद कभी॥
अब तो काहे को मिलेगी यह हवा खाने को॥१॥
दिल फ़िदा करते हैं कुरबान जिगर करते हैं।
पास जो कुछ है वह माता की नज़र करते हैं॥
खाने बीरान कहां देखिये घर करते हैं।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं॥
जाके आबाद करेंगे किसी बीराने को॥२॥

देखिये कब यह असोरा ने मुसोबत टूटें।
मादरे हिन्द के अब भाग खुले या फूटें॥
देश सेवक सभी अब जेल में मूंजें कूटें।
हम यहां ऐश से दिन रात बहारें लूटें॥
क्यों न तरज़ीह दें इस जीने पे मरजाने को॥४॥
काई माता की उमीदों पे न डाले पानी।
ज़िन्दगी भर को हमें भेज के काले पानी॥
मुँह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी।
आब ख़ंजर को पिला करके दुआ ले पानी॥
भरने क्यों जायें हम इस उम्र के पैमाने को॥५॥
हम भी आराम उठा सकते थे घरपर रहकर।
हमको भी पाला था मां बाप ने दुःख सह सहकर
वक्त रुख़सत उन्हें इतना भी न आये कह कर।
गोद में आंसू जो टपकें कभी रुख़से बह कर॥
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को॥६॥
देश सेवा ही का बहता है लहू नस नस में।
अब तो खा बैठे हैं चित्तौर के गढ़की क़समें॥
सर फ़रोशी की आदा होती है यूँ ही इसमें।
भाई ख़ंजर से गले मिलते हैं सब आपस में॥
बहनें तैय्यार चिताओं पे हैं जल जाने को॥७॥
नौजवानों जो तबीयत में तुम्हारी खटके।
याद कर लेना कभी हम को भी भूले भटके॥
आप के अज़ो बदन होवें जुदा कट कट के।

अपनी क़िसमत में अज़ल से ही सितम रक्खा था
रंज रक्खा था मुहिम रक्खा था ग़म रक्खा था ॥
किसको परवाह थी और किसमें यह दम रक्खाया
हमने जब वादिये गुरबत में क़दम रक्खा था ॥
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को ॥९॥
अपना कुछ ग़म नहीं पर यह ख़याल आता है।
मादरे हिन्द पे कब तक यह ज़वाल आता है ॥
हरदयाल आता है योरुप से न अजीत आता है।
कौम अपनी पे तो रह रह के मलाल आता है ॥
मुँतज़िर रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को ॥१०॥
मैकदा किस का है यह जाने सबू किस का है।
वार किस का है मेरी जां यह गुलू किस का है ॥
जो बहे कौम की ख़ातिर वह लहू किस का है।
असमां साफ़ बता दे तू उदू किस का है ॥
क्यों नये रंग बदलता है ये तड़पाने को ॥११॥
दर्द मन्दों से मुसीबत की हालत पूछो।
मरने वालों से ज़रा लुत्फ़ शहादत पूछो ॥
चश्म मुश्ताक़ से कुछ दीद की हसरत पूछो।
कुश्तये नाज़ से ठोकर की क़यामत पूछो ॥
सोज़ कहते हैं किसे पूछो तो परवाने को ॥१२॥
बात तो जब है कि इस बात की ज़िद्दें ठानें।
देश के वास्ते कुरबान करें सब जानें ॥

लाख समझाये कोई एक न उस की मानें ।
कहता है खून से मल अपना गरेबां सानें ॥
नासिहा आग लगे तेरे इस समझाने को ॥१३॥

न मुयस्सर हुआ राहत में कभी मेल हमें ।
जान पर खेल के आया न कोई खेल हमें ॥
एक दिन को भी न मंजूर हुई 'बेल" हमें ।
याद आयेगा बहुत लखनऊ का जेल हमें ॥
लोग तो भूल ही जायेंगे इस अफ़साने को ॥१४॥

नौजवानो यही मौक़ा है उठो खुल खेलो ।
ख़िदमते क़ौम में जो बला आये खुशीसे झेलो ॥
देश के अदक़ में माता को जवानी दे दो ।
फिर मिलेंगी न यह माता की दुआयें ले लो ॥
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को ॥१५॥

ग़ज़ल नं० २०१।

उरियानी न हैरानी न थे पांव में छाले ।
हम भी थे कभी आह बड़े नाज़ों के पाले ॥
जुल खाया मिटे उड़ गई आज़ादी ओ राहत ।
अल्लाह यह दिन अपने तो दुश्मन पै न डाले
मारा है मिटाया है हमें आह उन्हीं ने ।
कर बैठेथे हम जानो जिगर जिनके हवाले ॥
हम ने तो हमेशा तेरी खुशनूदी ही चाही ।
खुद बिगड़े मगर काम तेरे सारे सम्भाले ॥

उसका यह सिलाहमको मिला उफ़री मुहब्बत
बरबाद किया डाल दिये जान के लाले ॥
बेबस हुए ज़लील हुए मिट तो चुके हम ।
अब और क़यामतभी जो ढाना होसो ढाले ॥
सौगन्ध है तुझको तेरे उस जोरो जफ़ाकी ।
जी भरके हमें जितना सताना हो सताले ॥
किस मतका कभी अपनेभी चमकेगा सितारा ।
हम भी कभी देखेंगे अज़ादी के उजाले ॥
बदले की लहर तब तेरे सर चढ़के कहेगी ।
था ज़हर पै केचुले से ये लाचार थे काले ॥
मानस हौं तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन ।
जो पशु हो तो कहा बस मेरो चरौं नित नन्द की धेनु मंझारन ॥
पाहन हो तो वही गिरि को जो भयो ब्रज छत्र पुरन्दर कारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं उन कालिन्दी कूल कदम्बकी डारन ॥

ग़ज़ल नं २०२ ।

मुर्दए कौम को तैयार ज़रा होने दो ।
जोशे क़ौमी से हां ! सरशार ज़रा होने दो ॥ १ ॥
मत न छेड़ो, ज़रा उठने दो, नौजवानों को ।
क़ौम के दर्द से अज़ार ज़रा होने दो ॥ २ ॥
धर्मके नाम पै, मर मिटनेदो, अयार उन्हैं ।
जाति के ग़ममें हां, ग़मख़्वार ज़रा होने दो ॥ ३ ॥
नाइत्तफ़ाक़ीका ज़हर, अब न पिलाओ उनको ।
क़ौम के वास्ते, बीमार ज़रा होने दो ॥ ४ ॥

अब चलाओ न रहम करदो कौमपर साहिब ।
म्यान में यह ज़बां-तलवार जरा होने दो ॥ ५ ॥
बन्द करदो न, छुरा करके ज़बाने उनकी ।
कौम के उठने की गुफ्तार ज़रा होने दो ॥ ६ ॥
छेड़ने तो दो ज़रा, कौमी तराने उनको ।
बेख़तर हो के, जां निसार ज़रा होने दो ॥ ७ ॥

कव्वाली नं० २०३ ।

इन पण्डितों के मक्र का कुछ पार नहीं है ।
सच मानिये ये कौम के ग़मख्वार नहीं है ॥
बन करके बगुला-भक्त ये दुनियां को ठगते हैं ॥
इनसे तो बढ़ कर क़ौम का अग़यार नहीं है ॥ १ ॥
मतलब है इनको तो फ़कत ज़ाती फ़ायदा ।
ये कौमी तरक्की के ख्वास्तगार नहीं है ॥ २ ॥
कौमी सुधार को ये रोकने के वास्ते ।
छलछन्द जो करते हैं उनका पार नहीं है ॥ ३ ॥
हर एक अच्छी बात को कहते 'धरम विरुद्ध' ।
लेकिन ये धर्म के तो ठेके दार नहीं हैं ॥ ४ ॥
ये 'पाप' बताते हैं 'विजाती-विवाह को ।
कुछ अक्ल से इनको तो सरोकार नहीं है ॥ ५ ॥
जारी हैं कौम में जो बुरे रस्म और रिवाज ।
इन जैसा उनका कोई मददगार नहीं है ॥ ६ ॥
मनमानी महासभा में ये करते हैं धूमधाम ।
हमको तो इन सभाओं की दरकार नहीं है ॥ ७ ॥

दो चार लोग करते हैं मनमानी जहां पर।
सच तो ये है वां क़ौम का दरबार नहीं है ॥८॥
क्यों करते हो सुधारको, इन लोगों से सुलह।
क्या इनसे मेल करना कुछ बेकार नहीं है ॥९॥
उम्मीद बफ़ादारी की इनसे तो है फ़िज़ूल।
"हमको तो परिंडतों का ऐतबार नहीं है ॥१०॥
हो जाओ खड़े अपने ही पैरों पे ऐ यारो!
कह दो हमें किसी का इन्तज़ार नहीं है ॥११॥
जो धर्म का पाखण्ड कर ठगते हैं क़ौम को।
बस कौम को उन लोगों की दरकार नहीं है।।१२।
क्या खूब कहा हज़रते 'बेदिल' ने यह मिसरा।
'पत्थर है दिल' गर उसमें कौमी प्यार नहींहै।।१३।

ग़ज़ल नं० २०४।

नौ जवानो वक्त है मिट जाओ कौमी आन पर।
देखना बट्टा न लग जाय वतन की शान पर ॥
दिन रात हिन्दोस्तां पर बिजलियां टूटा करें।
हैफ़ है फिर भी न रेंगे जूं तुम्हारे कान पर ॥
चहचहाना भूल जाओ जी चमन खतरे में है।
बुलबुलो क्या देखती हो खेलजाओ जान पर ॥
कसरे आजादी की राहों का पता लग जायगा।
जो नजर डालो जरा तुम चीन औ जापान पर॥
हिन्दओंकी बेबसी का उनको लग जाता पता।
हिन्दवाले हुक्मरां होते जो इङ्गलिशतान पर ॥

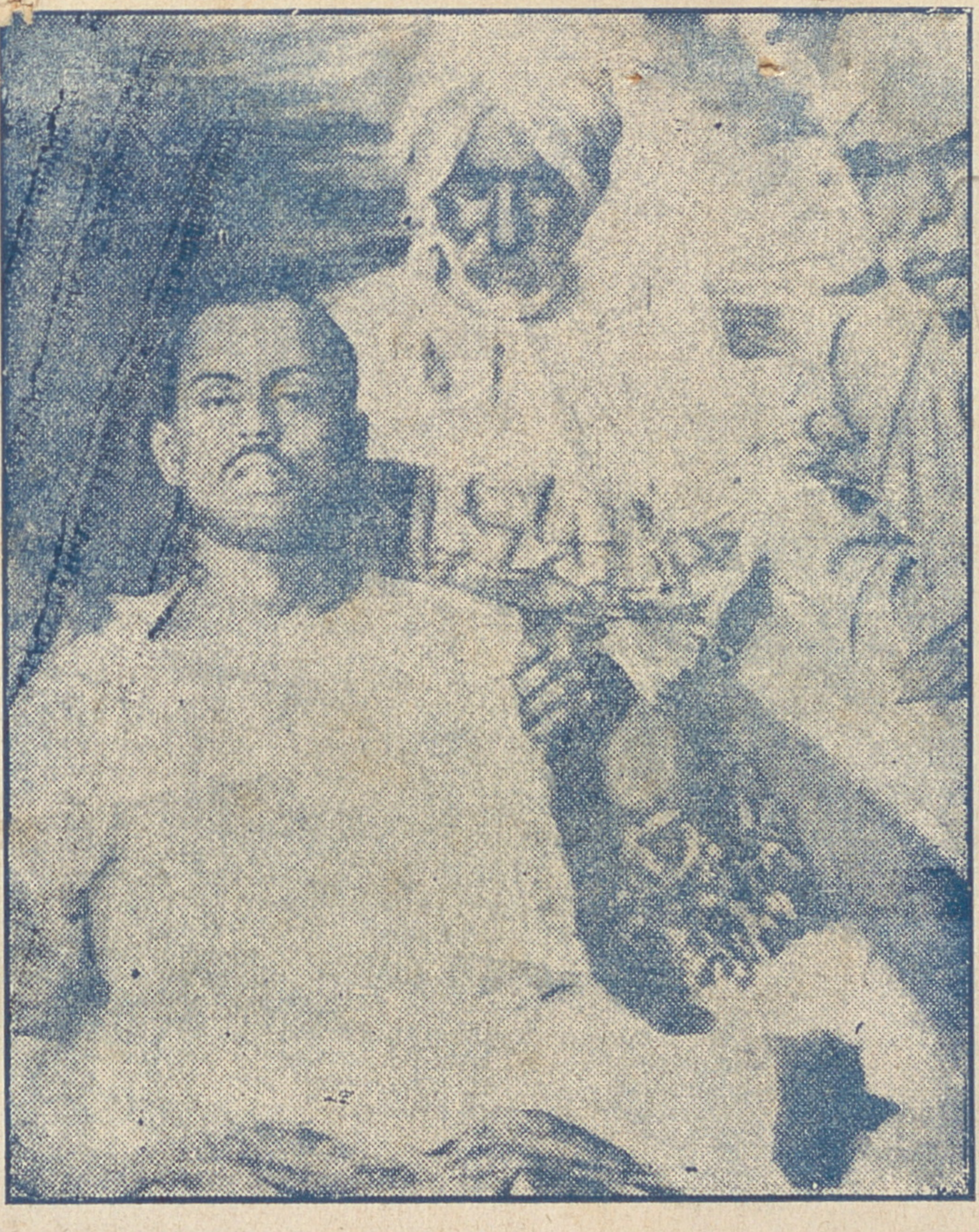

भाई राम प्रशाद "बिस्मिल" के शव को उन के पिता
गोद मे लिये बैठे हैं !

शैर- मालिक तेरी रज़ा रहे और तू ही तू रहे ।
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरज़ू रहे॥
जब तक कि तनमें जान, रगों में लहू रहे ।
तेरा जिक्र या तेरी ही, जुस्तजू रहे ॥

भूल जायेगा फलक सारी सितम आराइयां ।
डलता है हाथ अर्जुन भीम की सन्तान पर ॥
कौम की ख़िदमत बजालाना मुसाफिर फर्ज है ।
रँज औ ग़म तो सदा आते ही हैं इन्सान पर ॥

भजन नं० २०५ ।

ऐ गुरु गोविन्दसिंह यह बात है मानी हुई ।
तेरी बातों से कलामें हक़ की उरयानी हुई ॥
कोई माने या न माने यह हकीकत है अच्छा ।
इस जहां में जाति तेरी बहदते शानी हुई ॥
एक तरफ़ हस्ती तेरी कोहे शखावत बन गई ।
दूसरी जानिब यह हस्ती वाबे अरफ़ानी हुई ॥
तूने पैदा कर दिये वह जां निशार दाने वतन ।
जिनकी जांवाज़ीसे जां निसारीकी अरज़ालो हुई
आफरीं हिम्मत पै उनकी होगये सीने सिपर ।
जुल्मके तीरोंकी जान व दिलसे महमानी हुई ॥
तूने वह मन्त्र सिखाया जिसे यह तासीर थी ।
जान देने के लिये मरदों को आसानी हुई ॥
मिटगये जुल्मो सितम आज़िज हुए जोरो जफा ।
फिर से कायम हिन्द में एक शान है मानी हुई ॥
तेरे दिल बन्दों की कुरबानी थी शहरे सानरी ।
जिस के शाह की बदौलत शहे कुरबानी हुई ॥
धर्म की खातिर हुई उनकी सहादत वेसुबह ।
जिसका सानी ही नहीं उनकी वह कुर्बानी हुई ॥

ग़ज़ल नं० २०६ ।

सम्भालो हिन्दुओ ! अब बेधड़क तुम ओ३म् का झण्डा ।
रखाओ सब के सिर चोटी घुमा कर ओ३म् का झण्डा ॥
न हरगिज़ दिल में घबराओ काम शुद्धि किये जाओ ।
बोल वैदिक धर्म की जै उठालो बेधड़क झण्डा ॥
ये हिन्दू जन्म के हैंगे जों दिखते आज यहां मुस्लिम ।
कटा दाढ़ी रखा चोटी घुमादो ओ३म् का झण्डा ॥
न सोवे दियाल मगलू तुम लगादो जान शुद्धि में ।
चलो मक्के व यूरूप को उठा कर ओ३म् का झण्डा ॥

भजन नं० २०७ ।

ऐ शहीदे क़ौम तुझको आफ़रीं सद आफ़रीं ।
है शहादत पर तेरी नाज़ां वतन की सर ज़मीं ॥
तेरे इस बलिदान ने मुर्दों की आखें खोलदीं ।
लायेगा रंग खूने नाहक तेरा एकदिन बिल यकीं
तूने मरदों की तरह जो कहा पूरा किया ।
क़ौम की ख़ातिर मरा क़ौम की ख़ातिर जिया ॥
यूं तो मरने के लिये आये हैं सब संसार में ।
धन ! पर वह वीर मरते हैं जो पर उपकार में ॥
हो रही हैं सज़िशों पर साजिशों इजहार में ।
ग़र्क़ करना चाहते थे वह हमें मंजधार में ॥
ऐसी मुशकिल में हमारा ना खुदा तू बन गया ।
मरते २ भी मरीज़ों की दवा तू बन गया ॥
काम शुद्धि का किया तूने जो बेख़ौफ़ो ख़तर ;

छुट गये छक्के हरीफ़ों के फटे कत्वों जिगर ॥
बक़ बन कर जब गिरा तू ख़िदमते इस्लाम पर।
ग़र्ज़ सुन कर मोमिनों के दल हुए सब मुनतशर
ज़ालिमों से जब न यं शमशेर शुद्धि रुक सकी।
चाली तब सूफी फ़क़त एक बुज़दिलाना कत्लकी

ग़ज़ल नं० २०८।

टेक–इस्लाम के मिटजाने की अब आगई बारी।
पहिले तो लिखूं हम्दोसदा खालक़ के बारी।
पश्चात् इसके मुस्लिम को जिल्लतो ख्वारी ॥
बे अक़्ल कहां अक़्ल गई तेरी है मारी ॥ इस्लाम०
मुस्लिम ने मुसलमान को है मार भगाया।
लाखों का खून बे खता दुनियां में बहाया ॥
देती है शहादत यह तवारीख़ तुम्हारी ॥ इस्लाम०
इस्लाम के हाथों से हुई क़त्ल खिलाफत।
आई है हर तरफ से मुस्लमानों पै आफ़त ॥
वा हुक्मो खुदा रस्मो शुद्धि होगई जारी ॥ इस्लाम०
शुद्धि का बीड़ा आर्य्यों ने जब से उठाया।
लाखों को शुद्ध करके जब अपने में मिलाया ॥
यह देखकर कहते हैं मुस्लमान पुकारी ॥ इस्लाम०
तेरह सो वर्ष से हुआ इस्लाम है कायम।
भारतमें हर किस्म से लड़ता है यह दायम ॥
जो देखता है शुद्धिको वह देता है गारी ॥ इस्लाम०

सुन ३०० से ज्यादा हैं इस्लाम में फिरके ।
आपसमें शिया, सुन्नी, कादियानी हैं लड़ते ॥
मुस्लिमने मुसलमानको खुद पगड़ी उतारी । इस्ला०
कहते हैं मिटी जाती है तौहीदी खुदाया ।
क्यों दाल खोरों से हमें अब नीचा दिखाया ॥
मुस्लिमका पलड़ा हलका है हिन्दूका भारी ॥ इस्ला०
कुर्आन में है औरतों को खेती बताया ।
जाओ जिधर चाहो यह लिखा है पाया ॥
पढ़ादो हदीस अपनी ज़रा खोलके सारी ॥ इस्लाम०
खतने जनाने का बयां इस्लाम में आया ।
है शिर तो कुफ़ का निशा इस्लाम में पाया ॥
करते हो आए साल देखो ताज़िये जारी ॥ इस्लाम०
जोरू बदल हलाली मुत्ता है लिखा हुआ ।
इस्लाम में मालदार को दुब्र करना है मना ॥
करते हैं ऐसी बात वही जो हैं अनारी ॥ इस्लाम ३
इकराम फाके में लिखा खजूर का खाना ।
कुरान ने भी ठीक रखा है इसे माना ॥
मुरदार लहू खूंको चिड़ी हो या शिकारी ॥ इस्लाम०
डेले से खून पाक कहीं होती है प्यारे ।
हाता है सफ़ाई पानी से सुन बेटे हमारे ॥
मैले पने से हमेशा होती है बीमारी ॥ इस्लाम०
सप्ताह में एक बार मुसलमान है न्हाता ।
आपस में म्लेच्छों की तरह एक में खाता ॥
जारी हैं मुसलमानों में सब रसम गंवारी ॥ इस्लाम०

कुर्आन की तालीम पर जब होगया झगड़ा ।
काज़ीसे शामी शामी से काज़ी बड़ा अकड़ा ॥
उस्माननें पुरकान की है ग़लती सम्भारी ॥ इस्लाम०
सुन बेटे मुहम्मद ने की पन्द्रह बीबी ।
रोज़े में ले ले बोसा बहलाया था जी ॥
ऐसोंको नज़र आती है कब जलवये बारी ॥ इस्लाम०
पाख़ाने के पानी से तुम कुल्ला भी करते ।
बैठी लड़की सामने इस्तजा भी करते ॥
अक़्ल मुहम्मद ने है खूब ही मारी ॥ इस्लाम०
देखो ज़रा 'इकराम" तुम इस्लाम का हुलिया
मुछें कटी है दाढ़ी बड़ी ऊंचा है सुतना ॥
गोया यह आ रही शैतानी सवारी ॥ इस्लाम०
साबित यह हो चुका है हदीसो बयान से ।
हो नीचे लिखे मुनहरिफ एक दिन कुर्आनसे।
मुल्लाने, मुकेती, सूफी व हफ़िजो कारी ॥ इस्लाम०
सच्चा नहीं दुनिया में इस्लाम का मज़हब ।
कुर्आन से हैं सैकड़ों ही आयते गायब ॥
इन आयतोंकी हमने की है खूब शुमारी ॥ इस्लाम०
तहरीरी बहस में भी मुसलमान ही हारे ।
तकरीरी बहस में भी मुसलमान ही हारे ॥
भूले हैं सभी चौकड़ी इस्लामी खिलारी ॥ इस्लाम०
इस्लाम का भारत में अब फूटा है भण्डा ।

यह भारत ही गिरायेगा इस्लाम का झण्डा ॥
देनी सहायता है फरिश्तों ने बिसारी । इस्लाम०
है हिन्दुओं को जिस तरह से तुमने सताया।
बच्चों को मारा औरतों पर हाथ चलाया ॥
होती है मुसलमानोंकी यों जिल्लतो ख्वारी ॥ इस्ला०
ऐ मुस्लिमों! अब हिन्दुओं से दोस्ती गई ।
अब मातबरी बिल्कुल तुम्हारी है भग-गई ॥
अब आगे न मिलने का तुम्हें चून उधारी। इस्लाम०
दुनियां से मिट जायेगा इस्लाम तुम्हारा ।
कौने में मदीने के खड़ा रोवे बिचारा ॥
करना यकीं मोमिनों यह बात हमारी ॥ इस्लाम०
बतलाइये क्या आदिमो हव्वा का था मजहब ।
रखते थे किस किताब पर ईमानों रोज़ो शब ॥
अब बन्द होगी बोलती फरजन्द तुम्हारी ॥ इस्लाम०
सूरज की तरह वेदों का है धर्म चमकता ।
कुर्आन में है अल्फ. लाम. मीम का मतलब नहीं पता
गीता कथा लगती मुसलमान को प्यारी ॥ इस्लाम०
है दुनियांमें वैदिकधर्म ही एक फैज़का चश्मा
गाते हैं राम. कृष्ण का मुस्लिम सदा नगमा ॥
पलते हैं शबो रोज मुसलमान भिखारी ॥ इस्लाम०
वेदों में नहीं है ज़रा भी किस्सा कहानी ।
पढने से जिसके हर बशर बनजाता है गुनी ॥

कुर्आन में लिखी नबी की है कार गुज़ारी ॥ इस्लाम०
दाढ़ी को कटा आर्यों में हूजिये दाखिल ।
कब तक पड़े रहोगे अलहदा बने गाफ़िल ॥
वेदों की आन देखो क्या है पाक शायरी ॥ इस्लाम०
जब मबाने कलां में हुआ था मनाज़रा ।
था हाल मुहम्मद मुबारिक हुसेन का ॥
फिलफौर जबां बन्द हुई कण्ठ था भारी ॥ इस्लाम०
आजाइये अब धर्म में बिद्दत को छोड़ कर ।
जुन्नार पहिन लीजिये तस्बी को तोड़ कर ॥
होगी वैदिक धर्म में बिजात तुम्हारी ॥ इस्लाम०
वेदों को कर कबूल पकड़ इसकी शरियत ।
इकराम समझ मानले तू मेरी नसीहत ॥
'प्रकाश' बज़न दार कहे बात करारी ॥ इस्लाम०

ग़ज़ल नं० २०६ ।

स्वामी उपदेश का दुनियां में असर बैठ गया ।
सिक्के वेद यहां बारे दिगर बैठ गया ॥ १ ॥
जब कि काशी में हुये जमा ब्राह्मण लाखों ।
तान सीना वह ब्रह्मचारी निडर बैठ गया ॥ २ ॥
स्वर सहित वेदध्वनी जब कि सुनाई उसने ।
बांध झोली को हर एक सौदागर बैठ गया ।३।
दुर्दशा तेरी का जब "देश" दिखाया फोटो ।
रोते रोते तेरे भक्तों का जिगर बैठ गया ॥ ४ ॥

भाष्य वेदों का किया उसने जो सिधा सच्चा ।
शर्म से पानी हो सायणका ठिटर बैठगया ॥५॥
उम्र भर जो कि रहा अपने प्रभू से मुन्किर ।
उस गुरुदत्त के दिल पर भी असर बैठ गया ।६।
देख के पोल खुली उसका कलेजा लरजा ।
दूध देने की जगह देके ज़हर बैठ गया ॥ ७ ॥
"चन्द्र" है शोक कि वह स्वामी उठा कर हमको ।
काम अधूरा ही पड़ा जाने किधर बैठ गया ॥८॥

ग़ज़ल नं० २१० ।

हिन्दुस्तानकी कमाई देखो फ़ी कस कुछ कौड़ी छः पाई है ।
उसमें ख़र्च होता है जितना फ़ैरिस्त उसकी बनाई है ॥
तीन की टोपी कमीज डेढ़ की टाई बारह आने का ।
पांच का चश्मा आठाने का कालर टाई लगाने का ॥
नहीं आठ से कम लगते हैं वास्कट कोट बनाने को ।
कमसे कम पतलून चार का गैलिस बारह आनेको ॥
तीसरे दिन चार आने इनकी लगने लगी धुलाई है। ॥१॥
साढ़े सातसे कम नहीं लगते वेस्टैण्डवाच मंगाने में
एक रुपयेसे कम नही लगता फैंसी बेत उठाने में ।
डासन का फुलबूट सात का है मशहूर ज़माने में ॥
बुरुश और पालिश की शीशी दोनों मिलें नौ आने में ।
ब्रिटिश को जुर्राब की क़ीमत दस आने बतलाई है ॥२॥

तीसकी सेकिंडहैंड साइकिल यहभी आज कल का फ़ैशन
एक मील नहीं चल सकते हैं पैदल यह मिस्टर इण्डियन
सवा रुपये का घरमें सलीपर रखना पड़ता मजबूरन
ग़लती हो तो कीजे मुआफ़ मैं बतलाता हूं तख़मीनन
एक आना रोजाना इनसे लेना बुद्धू नाई है ॥ ३ ॥ हि०
कंघा साबुन तेल सेफ्टीपिन तुमको गिनवाऊं क्या ।
एक रुपये से कममें उनकी क़ीमत और लगाऊं क्या ॥
सिगरेटका जिस क़दर ख़र्चहै यह तुमको समझाऊं क्या
'चन्द्र' कहैं यह ख़र्च थर्डका फरट क्लास बतलाऊं क्या
इस फ़जूल ख़र्ची ने हा भारत से भीक मंगाई है ॥ ४ ॥

भजन नं० २१२ ।

टेक- शिक्षा दे रही जो हम को रामायण अति भारी ।
एक समय में एक पुरुष ने ब्याही ज्यादे नारी ।
बृद्धावस्था में दशरथकी इसने बात बिगारी । शिक्षा०
राज छोड़ बनगये रामने पितु आज्ञा सिर धारी।
अब तो पिताके लिये पुत्रगण चाहते हैं गिरफ़्तारी ॥ शि०
राजमहलके सब सुखोंपर एक दम ठोकर मारी
बनमें गई पतिके सङ्गमें सतवन्ती सिया नारी ॥ शि०
बिपत समय में सङ्ग राम के की लक्ष्मण तैयारी,
अबतो खून पीते भाई का रहते मुक़दमें जारी ॥ शि०
राजतिलक की गैंद बनाकर खेलन लगे खिलारी,
उधर राम इस तरफ़ भरत दोनोंने ठोकर मारी ॥ शिक्षा

चर्ण पादुका धरीं तख़्त पर यह ही बात विचारी,
साधू बनकर रहा भरत नहीं बना राजअधिकारी। शि०
लक्ष्मण रामने सूर्पनखा को क्या कह कर ललकारी,
अब जहां देखें चिकनी मिट्टी भिसल जांय व्यभिचारी ॥
लक्ष्मण शीश झुकाता था कह सीतां को महतारी,
हाय आज कल तो भाबीको कहते आधी नारी ॥ शिक्षा
कामी रावण ने सीता को कष्ट दिये अति भारी,
फिर भी पतिव्रत धर्म बचाकर आई जनक दुलारी। शि०
लालच औ तलवार से डरकर सिया न हिम्मत हारी
थोड़े भयसे धर्म गवावें हाय आज कल नारी ॥ शिक्षा
था पण्डित विद्वान् वह रावण देखो नयन उघारी,
मदिरा मांस परनार हरणसे राक्षस बना अनारी। शिक्षा
तन मन से रहा सेवा करता हनुमान बलधारी,
अबतो मुँह पर करें खुशामद पीछे देवें गारी ॥ शिक्षा ६
भक्त बिभीषण ने भाई की सङ्गत बुरी बिसारी,
अच्छी सङ्गतमें तुम जाओ कहते 'चन्द्र' पुकारी। शिक्षा०

भजन नं० २१३।

वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।
हर जगह ओ३म् का झंडा फिर, फहरा दिया ऋषिदयानन्दने।
अज्ञान अविद्या की हरसू, घनघोर घटायें छाई थीं।
कर नष्ट उन्हें जगमें प्रकाश फैला दिया ऋषि दयानन्द ने ॥
सर पर तूफान बला का था, नज़रों से दूर किनारा था।

बनकर मल्लाह किनारे पर, पहुंचा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥
घुस गये लुटेरे घर में थे. सब माल लूट कर ले जाते ।
सद्शुक्र हाथ सोतों को पकड़ बिठलादिया ऋषि दयानन्द ने
मक्कारो दग़ा फरेबों से, वह माल मुफ्त खा जाते थे ।
सब पोल खोलकर दिल उनका दहलादिया ऋषिदयानन्दने ॥
उड़ गये होश मतवालों के, मैदान छोड़ कर दफा हुए ।
हथियार तर्कका निकाल जब चमका दिया ऋषिदयानन्दने ॥
कब्रों में सरको पटकते थे, कई दैरो हरममें भटकते थे ।
दे ज्ञान उन्हें मुक्ति का मार्ग दिखा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥
करते थे हमेशा चीख़ चोख़ तोहीन वेदे अकदस की जो ।
सर उनका वेदों के आगे झुकवा दिया ऋषि दयानन्द ने ॥
सब छोड़ चुके थे धर्म कर्म गौरव गुमान ऋषि मुनियों का ।
फिर सन्ध्या हवन और यज्ञ करना सिखलादिया ऋषि द०ने
विद्यालय गुरुकुल खुलवाए कायम हर जगह समाज किए ।
आदर्श पुरातन शिक्षा का, बतला दिया ऋषि दयानन्द ने ॥
बलिदान किया बलि वेदी पर जीवन प्रकाश हंसते हंसते ।
सच्चे रहबर बनकर सबको चेता दिया ऋषि दयानन्द ने ॥

ग़ज़ल नं० २१४ ।

पूछे जो कोई हम से नामो निशां हमारा
हैं आर्य हम वतन है सारा जहां हमारा ॥१॥
पूछो हिमालय से इसको तो याद होगा।

लहराता था फरैरा ता आस्मां हमारा ॥२॥

ऐ पहाड़ी गुफाओ हमको न भूल जाना ।

आसन कभी बिछाथा पय योग यहां हमारा

वह दानियतकी बू से हैं जुम्ला बाग़ खाली

लेकिन महक रहा है यह गुलिस्तां हमारा ।४।

वेदध्वनि से अक्सर मग़रीब केबंग ले गूँजे,

ता दम था मोक्ष मूलर अफ़शानाख्वां हमारा ।५।

जो हैं अरबकी खुशकी में तिशनगीसे बेकल

उनकी तशफ्फी को है बहरे रवां हमारा ।६।

जुल्मो तअद्दुदी से गो लाखों गले कटाये ।

फिर भी हुआ न कुछ भी उनसे ज्यां हमारा

ऐ प्यारे धर्म तेरी उल्फत में फंस रहे हैं ।

तू चाहे जिस तरह से ले इम्तहां हमारा ।८।

सीने में गाड़ कर वह स्वामी गया हमारे ।

क्योंकर गिराये कोई वैदिक निशां हमारा ।९।

ऐ मौजे गङ्गा इसको सरसब्ज खूब रखना

गोदीमें है गुरुकुल रशके जिना हमारा ।१०।

है लेखरामजी की ऐ 'चन्द्र' यह सदा बस ।

आगे को बढ़ रहा है अब कारवां हमारा ।११।

ग़ज़ल नं० २१६ ।

आंखों से फिर दिखा दो भगवन् वही ज़माना ।

वह राज्य चक्रवर्ती वह शाने खुसरवाना ॥

सन्तान शेर दिल हो बस बुज़दिली मिटा दो।
भीष्म व भीम सा दो तर्जे बहादुराना ॥
अर्जुन से तीर अफगन पैदा यहां बशर हों।
तीरे अदू का हर्गिज़ होवे नहीं निशाना ॥
हो प्रेम भाइयों में रामो लषण सा पैदा।
दिखला दो फिर भरत सा हुब्बे बिरादराना ॥
आज्ञा में मातु पितु के सब कुछ निसार करदें।
श्री राम सा दिखा दो पितु भक्ति मुखलिसाना ॥
गौतम कणाद आदिकी फिर कुर्सियां यहां दिखावें
पढ़ने को मिलसकें फिर तहरीर फल-सफाना ॥
मिट जांय आन पर फिर राणा प्रताप से हम।
बहरे वतन हों पैदा जज़बाते आशिकाना ॥
गृह देवियों के दिल में होवे खयाल पैदा।
सीता सी प्राणपति से बर्ताव खादिमाना ॥
गुरुकुल की वह प्रणाली रायज यहां पै करके।
कृष्णो सुदामा ऐसा दिखला दो दोस्ताना ॥
शैदाय हक ऋषि सा फिर तो ज़रा दिखा दो।
तफ़सीर वेद की हो तकरीर आलिमाना ॥
प्रह्लाद और हकीकत से हो धर्म पर कुर्बां।
सहते रहे हमेशा हरकाते ज़ालि—माना ॥
"सादिक" बहार आये उजड़े मुए चमन में।
लब पर हो बुलबुलों के फिर कौमका तराना ॥

ग़ज़ल नं० २१५ ।

सेवा मैंतेरे भारत, तन मन लगायेंगे हम ।
फिर स्वर्ग का सहोदर, तुझको बनायेंगे हम ॥

तुझ से जने, हैं तूने पालन किया हमारा ।
उपकार जितने करता, क्या २ गिनायेंगे हम ॥

तेरे ऋणों का बोझा, सर पर धरा हमारे ।
करके प्रयत्न पूरा, उसको चुकायेंगे हम ॥

तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे ।
तेरी ही सेवा में यह, जीवन बितायेंगे हम ॥

घनघोर दुख घटा भी हम पर घिरी खड़ी हो।
क्षणमात्र भी न तुझको, जी से भुलायेंगे हम ॥

तू स्वर्ग है हमारा, तू सख्य-गृह हमारा ।
तुझसे ही नेह नाता, अब तो लगायेंगे हम ॥

जब जब मरें तुझी में, तब तब सदा जन्म लें.
मरने के वक्त ईश्वर से यह मनायेंगे हम ॥

गौरव गिरा है तेरा, दुख ने है मुझको घेरा।
दुख में तेरे दुखी हो, आंसू बहायेंगे हम ॥

प्यारे सुवन तिहारे, फूट और मद के मारे ।
बे होश जो पड़े हैं, उनको जगायेंगे हम ॥

परमेश ! हां हमें तुम, पूरन पुनीत बल दो ।
बिन आपके सहारे, कुछ भी न पायेंगे हम ॥

ग़ज़ल नं० २१६।

ख्वाहिश मेरी है या रब ! अर्जुन मुझे बनाना।
शहजोर भीम करना मोहन मुझे बनाना।
सानी भरत का मुझको, सरवन मुझे बनाना।
बजरङ्ग बनके ग़मकी लङ्का को फूंक डालूं।
बहरे दहन को फांदूं कोहे अलम उठा लूं ॥१॥
यह आस मेरी पूरी ऐ रब्बे दो जहां हो,
जोशे द्रोण दिल में तनमें करन सी जां हो।
बुशरे से मेरे दम खम सहदेव का अयां हो.
मेरी रगों में फिर से भीषम का खूं रवां हो॥
भालों की चोट सहलूँ हारूं मगर न हिम्मत।
तीरों को सेज पर भी हो लेटने में राहत ॥२॥
सांगा की तरह खा लूं खुश होके तेगका फल,
हो बाजुओं में पैदा प्रताप का सा कस बल।
कौमी वकार पर मैं मिटजाऊं मिस्ल जयमल,
हिफ्जे वतनको खातिर आल्हा बनूं कि ऊदल॥
अहलो अयाल छूटें, सर जाय. जान जाये।
माथे पै बुज़दिली की लेकिन शिकन न आये ॥३॥
हासिल मुझे ध्रू की हो जाय इस्तकामत,
या बख्श दे तू मुझको प्रहलाद कीसी हिम्मत।
पूरनकी तरह कायम रक्खूं मैं अपना जत सत,
होकर धर्म पै कुरबां बन जाऊं मैं हकीकत॥

कटजांय दस्तो पा तक, उड़जाय जिस्मसे सर।
लेकिन न हर्फ आये मुनलक मेरे धर्मपर ॥४॥
तुझसे यह दस्ते कुदरत या रब अगर मैं पाऊं,
बहबूद का वतन के बीड़ा अभी उठाऊं।
कौमी निशां को ले के आलम में घूम आऊं,
भूले हुए फसाने फिरसे "फलक" सुनाऊं ॥
सोतोंको मैं जगादूं नगमा वतन का गा कर।
बिछुड़ोंको फिरमिलादूं धुनप्रीतिकी उठाकर।५।

ग़ज़ल नं २१७।

मैंने ज़ालिम तेरा क्या बिगाड़ा, तीर सीनेमें क्यों तूने मारा।
कोई करता खता मेरी ज़ाहिर, क्यों अभागेको जल भरते मारा
बनका वासी जटायें हैं सिरपर, हाय ज़ालिम तपस्वी को मारा
तूने अन्धोंकी लाठी को तोड़ा, मैं ही श्रवण था उनका सहारा
उनपै गुजरेगी क्या मेरे कातिल, जिनके होते मरे पुत्र प्यारा
शोक अपना नहीं है पर उनका, जिनको तूने है बे मौत मारा॥
अन्धे माता पिता हैं अकेले, राह देखेंगे कब तक हमारा।
श्रवण २ पुकारेंगे कबतक, उफ! ओ जालिम हम तीनोंको मारा।
प्यारी अम्मां क्षमा मुझको करना, हाय मरता श्रवण तुम्हारा
पिता पुत्र तेरा अब जो तोड़ता है नमस्ते करता है श्रवण तुम्हारा
जिसको 'आजिज' लगी हो वहजाने, तेरी लीला है अपरम्पारा॥

कव्वाली नं० २१८।

ओ आफताब तूने देखा है सब जमाना।
कहदे युधिष्ठिरो की वह शान खुशरवाना ॥ १ ॥

उज्जैन राजधानी चौदह रतन का मजमा।
चिक्रमकी सलतनतके अहकाम ओदिलाना ॥ २ ॥
हाथोंमें भीमके वह फिरना गदाकारणमें।
अर्जुन से सफ़ शिकन का जंगे बहादुराना ॥ ३ ॥
काशीके मरघटोंमें तुझको नज़र था आया।
दानी हरिश्चन्द्र (हरिश्चन्द्र) खैरात में यगाना ॥ ४ ॥
हैं बैजू बावरे के कानों में गीत तेरे।
और तानसैन का भी तूने सुना तराना ॥ ५ ॥
खिड़की में बैठकर वह गौरी के बोलते ही।
आवाज़ पर पिथौरा का मारना निशाना ॥ ६ ॥
जिसको कि अहले यूरुप करते हैं आज सिजदा।
कुछ याद है कपिल की वह बहसे फिलसफाना ७
ऐ आफताब तेरे ही सामने हुई थी
विद्यामें जैमिनी की तसनीफ फाज़िलाना ॥ ८ ॥
तेरे ही इल्ममें तो यहां पर हुए मुरत्तिब।
गौतम कणाद के दो दर्शन मोहक्किकाना ॥ ९ ॥
धनवन्तरी से तूने आंखें मिलाई अपनी।
सुश्रुत चरक का तूने देखा दवाई खाना ॥ १० ॥
ओ खुशनसीब ! तूने वर्षों श्रवण किये हैं।
शंकर से आलिमों के उपदेश आलिमाना ॥ ११ ॥
आती रही है खुशबू तुझको अवधके अन्दर,

रामोलखन भरत की हुब्बे बिरादराना ॥ १८ ॥
अय पाक दिल ! तू अबतक भूला नहीं है हर्गिज
अपने पति से सीता का प्रेम मुख लिखाना ॥१३॥
प्रताप की चिता यह रोकर है आज कहती,
क्या सहल कर गया है मेवाड़का फिसाना ॥१४॥
हैं लोहे दिल पै तूने सब वाकयात लिक्खे।
गुज़रा है तेरा सारा जीवन मवर्रिखाना ॥१५॥
मालूम है यह तुझको भूगोल पर सरासर।
कब्जा था आर्य्यों का अब्वलसे मालिकाना ॥१६॥
उस्ताद आफरीं ये सब कामोंके हो रहे हैं।
सब देश मानतेथे इनको ही मुअद्दिबाना ॥१७॥
हम कागजी शहादत देते हजार लाकर।
होता न पुस्तकों पर गर जुल्म वहशियाना ॥१८॥
हम शानदार अपना इतिहास पेश करते।
होते अगर न जोरो बेदाद जाबिराना ॥ १९ ॥
तारीख आर्य्यवर्त्त अय आफ़ताब तू है।
कर फैसला हमारा निष्पक्ष मुँसिफाना ॥ २० ॥
इल्मो हुनर को हमने पाला था अपने घरमें।
हासिल हुई थी हमको पहली मुरब्बियाना ॥२१॥
शागिर्द हैं बताते अपना हमें मुखालिफ।
तू करदे इसको बातिल दावा है अहमकाना ॥२२॥
मौजूदगी में तेरी अन्धेर है ये कैसा।
क्या रास्ती अदम को अब होगई रवाना ॥२३॥
भारत की हिस्ट्री को झुठला रहे हैं नाहक,

बकते हैं झूठ करके हकगोई का बहाना ॥ २४ ॥
तू इब्तिदासे अबतक नाजिर है हम सबोंका
तू करदे अपनी जाहिर राये मुरब्बियाना ॥ २५ ॥
तेरे सिवा पुराना राशन नहीं है कोई ।
तकलीफ़ तुझको दी है यूँ बे तकल्लुफाना ॥ २६ ॥
ओ आफ़ताब बतला हम किसलिये मिटे हैं ।
तीरे तनज्जुली के क्यों होगए निशाना ॥ २७ ॥
दर्वाज़े पै जो अपने सदियां पड़े रहे थे ।
हम चूमते हैं जाकर अब उनका आस्ताना ॥ २८ ॥
गल्ले से कोठी खत्ती जो भरते थे हमेशा ।
उनको नहीं मयस्सर होता है एक दाना ॥ २९ ॥
देते थे कर्ज सब को जो रुपया करोड़ों ।
मिलता नहीं किसीसे अब उनको एक आना ॥ ३० ॥
अशरत ने अपनी सूरत उसरत में है छुपाली
मातम वहां है बजता जिसका था शादियाना ।३१।
विद्या से शूरता से हम हो गये हैं खाली ।
जो काम हैं हमारे सब हैं अबलियाना ॥ ३२ ॥

भजन नं० २१९ ।

वक्त था जब ताबो ताकंत थी हमारे तीर में ।
आबो जौहर थे कभी तो ख़ंजरो शमशीर में ॥
आंख हम से दहर में कोई मिला सकता न था ।
वीरता थी जिस वक्त क्षत्राणियों के क्षीर में ॥
सर ज़मीं के शरक़से ता ग़रब मालिक थे हमीं ।

बांध रक्खा था जहां को अदल की जंजीर में ॥
सर ज़मीं सोना उगलती थी कभी इस हिन्द की
खाक में वह बात थी जो बात थी अक्सीर में ॥
फ़तह लङ्का का ख्याल आया तो झट पुल बंध गया।
ऐसी ताक़त थी हमारे नखुने तदबीर में ॥
योग विद्या में हमें हासिल कभी था यह कमाल।
थी समाधी की सिफ़त हर फर्द की तसवीर में ॥
सानाए कुदरत की वह नज़रे इनायत हम पै थी,
लाकेजन्नत अर्श से रखदी थी खुद कश्मीर में ॥
अलग़रज़ सब निआमतें दुनियांकी हासिलथी हमें
फूट ने बरबाद लेकिन कर दिया आखीर में ॥

ग़ज़ल नं० २२० ।

संभल संभल पग धरियो री बहनो देश बिगाने जाना होगा।
सास बिगानी ननद बिगानी ससुरा कन्त बिगाना होगा ॥ सं०
ना बाबल ना वीर लाडला, किसको रोय सुनाना होगा ॥ सं०
एक जान पर दुःख हजारों, सो सब रोय बहाना होगा ॥ सं०
सौ सौ मार और झिड़की खाकर, फिर भी शीश नवाना होगा ॥
वहां पर कोई न देगा सहारा, स्त्री धर्म निभाना होगा ॥ सं० ॥

❀ इति समाप्तम् ❀

दिल्ली का व्यभिचार



पाखण्डी पीर, दुराचारी स्काउट-मास्टर, व्यभिचारिणी फ़िल्म-एक्ट्रस इत्यादि एकदर्जन दिल हिला देने वाली कहानियाँ दूसरी बार मोटे काग़ज़ पर कई नई कहानियों और नये चित्रों-सहित शान-बान से छपा है। मूल्य एक रुपया।

हिन्दी पुस्तक कार्यालय, कूचा पातीराम, दिल्ली।